RNI-RAJBIL/2009/32418

Vol: 16, Issue: 2, July-December, 2024

Samvahini

Half Yearly Newsletter | Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun (Rajasthan)

15वां दीक्षांत समारोह
06

माननीय मुख्यमंत्री श्री भजनलाल शर्मा का सम्मान समारोह
10

नेचुरोपैथी रिसर्च सेंटर के लिए 50 करोड़ का अनुबंध
13

कवि सम्मेलन आयोजित
14

''अध्यात्म और पुरातत्व'' पर औंकारसिंह लखावत का व्याख्यान
19

www.jvbi.ac.in

स्वत्वाधिकारी, प्रकाशक, मुद्रक जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं (राजस्थान) की ओर से डॉ. अजयपाल कौशिक (कुलसचिव, जैन विश्वभारती संस्थान) द्वारा प्रकाशित एवं मुद्रित। मुद्रणालय - मेसर्स पोपुलर प्रिण्टर्स, जयपुर में मुद्रित। सम्पादक - प्रो. दामोदर शास्त्री।

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, Rajasthan

ADMISSIONS OPEN

Regular Courses Ph.D. & MA: Jainology and Comparative Religion & Philosophy • Prakrit • Sanskrit • Nonviolence & Peace • Political Science • Yoga & SOL • Hindi • English • Rajasthani • M.Ed.#

UG: B.A.* • B.Com.* • B.Sc.* • B.Ed.# • B.A.-B.Ed.# • B.Sc.-B.Ed.# * For Female only

B.A./B.Sc. (Yoga and Science of Living) (Co-Education) #Admissions through State Level Entrance

Bachelor of Naturopathy and Yogic Sciences (BNYS)

(5½ Years Degree Programme for Naturopathy Doctor)

Diploma Course Rajasthani Language, Literature & Culture — Last Date : 31 July (for UG/PG), 2025, Ph.D.: July 25, 2025

Certificate Courses Jyotish • Vastu • Jain Agam • Jain Scholars • Philosophical Counselling: Experiments with Self • Prakrit; Sanskrit (Basic & Advanced) • Rajasthani • Rajasthani Language & Literature • Jain Religion & Philosophy • Yoga & Science of Living • Be Incharge of Yourself (Dietetics) • Yoga & Naturopathy

Correspondence Courses PG: Jainology • Hindi • English • Yoga and Science of Living • Nonviolence and Peace • Prakrit • Sanskrit • Political Science UG: B.A. • B.Com. Certificate: Yoga and P.M. • Astrology • Jain Religion & Philosophy • Human Rights • Training in Nonviolence • Jain Arts and Aesthetics

Online Application Form Link: www.online.jvbi.ac.in — Last Date of Admission for Distance Programmes: Aug. 31, 2025

ACHARYA MAHAPRAJNA NATUROPATHY CENTRE

A unit of Jain Vishva Bharati Institute, Ladnun, Rajasthan

FEATURES:
- Full Day Treatment
- Experienced Doctors
- Detox & Rejuvenation
- Yoga Studio & Outdoor Gym
- Comfortable Stay & Hospitality

THERAPIES:
- Colon & Hydrotherapy
- Shirodhara & Panchkarma
- Mud, Stone & Cupping Therapy
- Steam, Sauna & Jacuzzi
- Circular Jet, Spine Jet ...and many more

- Value-based Education with Spiritual Ambience
- Lush Green Campus with Gurukul Environment
- Education for Women Empowerment and Entrepreneurship
- Research Excellence & Global Collaboration
- Preservation & Promotion of Indian Knowledge Systems
- Skill Development and Career-Oriented Programmes

Highlights :
- Aligned with the key features & goals of NEP 2020
- 12B Status by UGC, New Delhi
- Certificate of Outstanding Service, Towards being a Top Institution for Campus Life, 2024
- Best Deemed University – Excellence in Curricular Aspects, 2023
- Presidential award to 4 faculty members
- 15 World records by the Yoga students
- Interactive Smart Classrooms
- Wi-Fi Equipped Safe and Secure Campus
- Hostel and Canteen Facility
- Air Conditioned Auditorium
- More than 15 highly Equipped Laboratories
- Digitized Self Learning Material
- Well-equipped Library
- Daily Yoga and Meditation
- Facilities for indoor and outdoor games

For details visit: www.jvbi.ac.in, Mob. 9462658501, 8209184651, 9414961688

आचार्य महाश्रमण

अनुशास्ता
जैन विश्वभारती संस्थान

अनुशास्ता उवाच

स्वाध्याय से क्या मिलेगा ?

प्रश्न किया गया— **सज्झाएणं भंते! जीवे किं जणयइ?** स्वाध्याय करने से जीव क्या प्राप्त करता है? उत्तर दिया गया— **सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेई।** स्वाध्याय करने से ज्ञानावरणीय कर्म का क्षय होता है।

'सुष्ठु अध्यायः इति स्वाध्यायः' अच्छी तरह सर्वांगीण रूप में अध्ययन करना स्वाध्याय है। पढ़ना-लिखना आदि स्वाध्याय के अंग हैं। पठन-पाठन से ज्ञान का आवरण पतला पड़ता है अथवा उसमें छिद्र हो जाते हैं, जिससे ज्ञान की रश्मियां प्राप्त हो जाती है।

'स्वाध्यात् मा प्रमद' स्वाध्याय में कभी प्रमाद मत करो, स्वाध्याय करते रहो। स्वाध्याय को सर्वोत्तम माना गया। इसका कारण यह प्रतीत होता है कि स्वाध्याय करने में ज्ञान मिलता है। ज्ञान प्राप्त कर आदमी सही आचार का पालन कर सकता है। ज्ञान ही नहीं होगा तो आचार का पालन कैसे होगा? ज्ञान है तो जीवन में अहिंसा आ पाएगी, ईमानदारी आ पाएगी और संयम आ पाएगा, किन्तु ज्ञान सम्यक् होना चाहिए। सम्यक् ज्ञान का एक बड़ा आधार बनता है— स्वाध्याय। इसीलिए स्वाध्याय को सर्वोत्तम तप कहा गया होगा, ऐसा अनुमान किया जा सकता है।

अनुक्रमणिका

01. संपादकीय- देश का पहला विश्वविद्यालय होने का गौरव 05
02. 15 वां दीक्षांत समारोह
जैविभा विश्वविद्यालय को भारत सरकार प्राकृत भाषा का केन्द्र बनाएगी - केन्द्रीय शिक्षा मंत्री 06
03. संस्थान के विकास हेतु प्राप्त किया अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का मार्गदर्शन 09
04. शिक्षा के माध्यम से युवा पीढ़ी को संस्कारित कर रहा है जैविभा विश्वविद्यालय - मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा 10
05. जैविभा विश्वविद्यालय में नए पाठ्यक्रम शुरू करने पर विचार 11
06. केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने की संस्थान की प्राच्य विद्याओं व मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना 12
07. जिला कलेक्टर पुखराज सैन ने किए मुनिश्री जयकुमार के दर्शन 12
08. आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज, हॉस्पिटल एंड नेचुरोपैथी रिसर्च सेंटर के लिए राज्य सरकार के साथ 50 करोड़ का अनुबंध 13
09. यूएसए ट्रिप 2024 में समणीवृंद ने किया अमेरिका के कई स्थानों का दौरा 13
10. भव्य कवि सम्मेलन आयोजित 14
11. कुलपति रहे प्रो. बी.सी. लोढ़ा को मिला लाईफटाइम अचीवमेंट अवार्ड 15
12. उपकरण की डिजाइन को मिला भारत सरकार का पेटेंट 16
13. संस्थान के तीन छात्राओं ने लिया युवा संसद में हिस्सा 18
14. राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विश्व अल्पसंख्यक दिवस समारोह में संस्थान की प्रतिभागिता 18
15. राजस्थान धरोहर प्राधिकरण की अध्यक्षता 'अध्यात्म और पुरातत्व' पर व्याख्यान 19
16. शिक्षक दिवस समारोह आयोजित 20
17. अनेकांत शोध पीठ के तत्त्वावधान में ''व्यक्तित्व विकास और जीवन मूल्य'' विषय पर व्याख्यान आयोजित 21
18. एनसीसी कैडेट्स ने गोल्ड व सिल्वर मैडल जीते 22
19. राजस्थानी भाषा अकादमी द्वारा द्वितीय सप्त दिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय समर स्कूल का आयोजन 23
20. शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन 24
21. विश्व दृष्टि दिवस पर कार्यक्रम आयोजित 24
22. विश्व ध्यान दिवस पर प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित 25
23. मानसिक स्वास्थ्य पर पांच दिवसीय कार्यशाला 26
24. शांतिपूर्ण समाज के लिए एकदिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित 27
25. शिक्षा विभाग में मनाया सात दिवसीय दीक्षा आरंभ सप्ताह 28
26. विश्व दार्शनिक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित 29
27. वास्तुदोष के प्रभाव एवं निराकरण के वैज्ञानिक उपाय पर व्याख्यान आयोजित 29
28. पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम के तहत ध्यान दिवस मनाया 30
29. क्षमा के आदान-प्रदान से बन सकता है कार्य-व्यवहार और जीवन शुद्ध - कुलपति प्रो. दूगड़ 32
30. पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम में व्रत चेतना दिवस मनाया 33
31. मोबाईल के अनावश्यक उपयोग के बजाय स्वाध्याय अपनाएं - मुनिश्री मुदित कुमार 34
32. आईपीएसएस द्वारा आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में छाया रहा महिला सशक्तीकरण मुद्दा 35
33. डॉ. लिपि जैन को मिला इप्सा का राष्ट्रीय अवार्ड 35
34. संस्कृत में समाहित शारीरिक, मानसिक व वाणी की शुद्धता - प्रो शास्त्री 36
35. प्रेक्षाध्यान कल्याणक वर्ष पर कार्यक्रम आयोजित 37
36. प्राकृत भाषा व साहित्य पर व्याख्यानमाला 38
37. पर्यावरण क्लब गतिविधियां 40
38. एंटी रैंगिग सेल/स्क्वॉड गतिविधियां 42
39. शांतिः मानव कल्याण का आधार - नागपाल 43
40. एन.एस.एस. की गतिविधियां 44
41. भारतीय भाषा उत्सव पर सात दिवसीय कार्यक्रम 49
42. छात्राध्यापिकाओं ने किया गुजरात व माउंट आबू का पांच दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण 49
43. मानवाधिकार दिवस का आयोजन 50
44. राष्ट्रीय अन्तरिक्ष दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन 51
45. सप्तदिवसीय 'दीक्षा आरम्भ' कार्यक्रम 52
46. मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन 54
47. सांस्कृतिक प्रतियोगिता का आयोजन 55
48. छात्राध्यापिकाओं ने गरबा महोत्सव में किया नृत्य 56
49. साहसी पर्वतारोही -बाइकर नीतू चौपड़ा ने सिखाये आत्मरक्षा के गुर 57
50. प्रख्यात लेखक मुंशी प्रेमचन्द जयंती पर कार्यक्रम आयोजित 58
51. ''वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएं एवं युवाओं की भूमिका'' पर भाषण प्रतियोगिता 59
52. कृष्ण जन्माष्टमी, हिन्दी दिवस, गुरू नानक जयंती कार्यक्रम आयोजित 60
53. गणेश चतुर्थी, संस्कृत दिवस, गांधी जयंती मनाई 61
54. राष्ट्रीय एकता, आदिवासी दिवस कार्यक्रम 62
55. स्वाध्याय से मानसिक ऊर्जा व शक्ति का संवर्धन होता है 63
56. फिट इण्डिया सप्ताह 64
57. साइबर सिक्योरिटी पर व्याख्यान आयोजित 65

RNI-RAJBIL/2009/32418

Samvahini

(अर्द्धवार्षिक समाचार पत्र)
जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूँ

वर्ष-16, अंक- 2
जुलाई-दिसम्बर, 2024

संरक्षक
प्रो. बच्छराज दूगड़
कुलपति

सम्पादक
प्रो. दामोदर शास्त्री

कम्प्यूटर एण्ड डिजाईन
पवन सैन

प्रकाशक
जैन विश्वभारती संस्थान
लाडनूँ - 341306
जिला- डीडवाना कुचामन (राजस्थान)
दूरभाष : (01581) 226110, 226230
E-mail : jvbiladnun@gmail.com
Website : www.jvbi.ac.in

सम्पादकीय

भारतीय प्राच्य विद्याओं के संरक्षण एवं संवर्धन हेतु स्थापित

देश का पहला विश्वविद्यालय होने का गौरव

जैन विश्वभारती संस्थान अपने स्थापना-काल से ही आचार्यश्री तुलसी की भावनाओं के अनुरूप आचार्य महाप्रज्ञ व अब आचार्य महाश्रमण के अनुशासन, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में लगातार आगे बढ रहा है। यह विश्वविद्यालय एक विशेष उद्देश्य से गठित डीम्ड यूनिवर्सिटी है, जहां व्यावसायिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि मानव को मानव बनाने की शिक्षा को प्रमुखता दी जाती है और डिग्री के साथ नैतिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। यह नैतिक मूल्यों व संस्कारों को समर्पित विश्वविद्यालय है। यहां आधुनिक शिक्षा पद्धति के साथ नैतिकता, जीवन मूल्यों, सदाचार और संस्कारों को महत्त्व दिया जाता है। यहां रैगिंग का कोई केस नहीं होता, अपितु यहां आने वाले नवागंतुक विद्यार्थियों का भावभीना स्वागत-सत्कार करने की शानदार परम्परा बनी हुई है। यहां वर्ष में एक बार मनाये जाने वाले क्षमापना दिवस में कुलपति सहित सभी प्रोफेसर्स, शिक्षक, अन्य स्टाफ व विद्यार्थीगण परस्पर साल भर में हुई भूल-व्यवहार के लिए क्षमा-याचना करते हैं। यह संस्थान व्यक्तित्व निर्माण के लिए जाना जाता है।

पुरातन शिक्षा पद्धति के अनुसरण में भारतीय पुरातन ज्ञान व्यवस्था के सुदृढीकरण में यह संस्थान प्रयत्नशील है। प्राच्य विद्याओं के अध्ययन-अध्यापन, पाठ्यक्रमों, शोध, प्रसार एवं उत्थान के लिए सतत प्रयासरत यह विश्वविद्यालय जैन विद्याओं के अध्ययन और प्राकृत, पाली और संस्कृत आदि प्राच्य भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन, उनके विकास के क्षेत्र में विशेष व महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। पांडुलिपि संरक्षण केन्द्र, राजस्थानी भाषा एवं साहित्य केन्द्र आदि की गतिविधियों द्वारा पुरातन ज्ञान, ग्रंथों, भाषा, लिपि आदि के लिए शोध व संरक्षण के कार्य चलाए जा रहे हैं। यहां प्राचीन भाषा व लिपियों का कार्य, ध्यान, योग और प्राच्य विद्याओं पर कार्य ही यहां की विशिष्ट पहचान बनी हुई है।

प्राकृत विभाग को स्नातकोत्तर स्तर पर स्वतंत्र रूप से प्रारम्भ करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है। अब इस विश्वविद्यालय को राष्ट्रीय स्तर पर भारत सरकार की ओर से शास्त्रीय भाषा का सम्मान प्राप्त प्राकृत भाषा का शिक्षा व शोध का प्रमुख केन्द्र बनने जा रहा है। इस सम्बंध में गत 13 अक्टूबर 2024 को एक भेंट कार्यक्रम में भारत सरकार की ओर से केन्द्रीय शिक्षामंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने कहा कि प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा की मान्यता दी जा चुकी है और अब यह उनका दायित्व है कि वे जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को भारत सरकार की ओर से प्राकृत भाषा को शोध केन्द्र बनाएं। यह गौरव का विषय है। प्राकृत भाषा शिक्षण-प्रशिक्षण एवं व्यापक प्रचार-प्रसार में देश में अग्रणी रहे इस विश्वविद्यालय को अब भारत सरकार द्वारा अधिकृत केन्द्र घोषित किए जाने के बाद समस्त कार्यक्रमों आदि का निर्धारण जैन विश्वभारती संस्थान के माध्यम से ही किया जाएगा।

इसके साथ ही अन्य विभिन्न क्षेत्रों में भी अपनी उपलब्धियों के चलते देश का पहला विश्वविद्यालय बना हुआ है, जिनमें योग एवं जीवन विज्ञान का पहला स्नातकोत्तर कोर्स प्रारम्भ करने वाला देश का यह पहला विश्वविद्यालय है। देश में जब कहीं भी योग का विषय नहीं था, तब 1987 में यह पहला विश्वविद्यालय था, जिसने योग विभाग की अलग से स्थापना की। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय देश का ऐसा पहला व एकमात्र विश्वविद्यालय है, जिसमें संवैधानिक रूप से अनुशास्ता का पद सृजित है।

पहला मोबाईल यूनिवर्सिटी- जैन विश्वभारती संस्थान ऐसा विशेष विश्वविद्यालय है, जिसका दीक्षांत समारोह एक ही स्थान पर होने के बजाय उसके स्थान बदलते रहते हैं। कोलकाता, चैन्नई, सूरत, मुम्बई आदि स्थानों पर इसके दीक्षांत समारोह हो चुके हैं। ये समारोह विश्वविद्यालय के अनुशास्ता रहे आचार्यों के प्रवास-स्थल पर आयोजित होते रहे हैं। हाल ही में आचार्यश्री महाश्रमण के सान्निध्य में सूरत में आयोजित 15वें दीक्षांत समारोह के मुख्य अतिथि भारत सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेन्द प्रधान ने अपने सम्बोधन में बताया कि उन्हें देश के 1100 विश्वविद्यालयों को नजदीक से देखने का अवसर मिला है। इनमें यह देश का पहला चलंतमान विश्वविद्यालय है। इसका दीक्षांत समारोह आचार्यश्री के चातुर्मास की अंतिम समयावधि के दौरान उनके सान्निध्य में ही होता है।

स्थापना काल से अनवरत दूरस्थ शिक्षा संचालन- अपनी स्थापना से आज तक दूरस्थ शिक्षा का संचालन बिना किसी अवरोध के संचालित रखने वाला एकमात्र विश्वविद्यालय है। विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र में 8500 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। मल्टी मीडिया में 100 वीडियो लेक्चर्स तैयार किए गए हैं। विश्वविद्यालय अपने श्रेष्ठ 10 शोध प्रबंधों को प्रतिवर्ष प्रकाशित करता है।

अहिंसा व शांति का स्नातकोत्तर कोर्स- अहिंसा व शांति विभाग भी पहली बार यहां स्थापित किया गया। गांधी दर्शन के अलावा अहिंसा एवं शांति को स्नातकोत्तर स्तर पर कोर्स प्रारम्भ करने वाला यह पहला विश्वविद्यालय है।

साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने वाला भी पहला विश्वविद्यालय- यही देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है, जिसमें बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा निःशुल्क प्रदान की जा रही है। इस विश्वविद्यालय ने अब तक कुल साधु-साध्वियों को 140 पीएचडी और 2500 साधु-साध्वियों को शिक्षित किया है। इन साधु-साध्वियों के लिए उनके स्थान पर ही परीक्षाएं संचालित की जाती हैं।

इस प्रकार यह विश्वविद्यालय अपनी विशेषताओं व उपलब्धियों के कारण बहुत सारे क्षेत्रों में देश में अव्वल बना हुआ है। कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ के कुशल नेतृत्व में यह विश्वविद्यालय नित नई ऊंचाइयों व बुलंदियों को छू रहा है।

- जगदीश यायावर (अतिथि सम्पादक)

जैविभा विश्वविद्यालय को भारत सरकार प्राकृत भाषा का नोडल केन्द्र बनाएगी – धर्मेन्द्र प्रधान, केन्द्रीय शिक्षा मंत्री

15वें दीक्षांत समारोह में न्यायमूर्ति दिनेश माहेश्वरी को मानद डी.लिट. उपाधि तथा 21 को पी-एच्.डी. व 10 को गोल्ड मैडल सहित कुल 1917 विद्यार्थियों को डिग्रियां प्रदत्त

संस्थान का 15वां दीक्षांत समारोह 11 नवम्बर को अनुशास्ता आचार्य महाश्रमण के सान्निध्य में गुजरात के सूरत में भगवान महावीर विश्वविद्यालय केम्पस वेसू में आचार्य महाश्रमण चातुर्मास प्रवास स्थल पर आयोजित किया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस समारोह में मुख्य अतिथि भारत सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान थे। दीक्षांत समारोह में 1895 स्नातक एवं स्नातकोत्तर उपाधियां, 10 स्वर्ण पदक, 21 पीएचडी एवं 1 मानद डी.लिट. उपाधि प्रदान की गई। विश्वविद्यालय के समस्त विभागों के विभागाध्यक्षों ने अपने-अपने विद्यार्थियों को उपाधियों के लिए आमंत्रित किया तथा कुलपति प्रो. दूगड़ एवं मुख्य अतिथि केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान द्वारा सभी को उपाधियां प्रदान करवाई गई। जस्टिस दिनेश महेश्वरी को समारोह में डी.लिट. की मानद उपाधि प्रदान की गई।

यह देश का पहला चलंतमान विश्वविद्यालय

भारत सरकार के शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने समारोह में अपने सम्बोधन में कहा कि पढाई केवल किताबों तक सीमित नहीं होती, बल्कि जिस माहौल व परिवेश में पढाई की जाती है, वह अधिक महत्त्वपूर्ण होता है। उन्होंने केवल डिग्री को उपलब्धि मानने के बजाय कार्य-दक्षता और मानसिक दक्षता को भी जरूरी बताया और इसे जीवन मूल्यों से भी संभव बताया। उन्होंने बताया कि अब तक भारतीय शिक्षा पद्धति पाश्चात्य से प्रभावित रही है, अब नई शिक्षा पद्धति से इसे भारतीय संस्कृति से जोड़ा गया है। जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की सराहना करते हुए उन्होंने कहा कि यह ज्ञान व चरित्र का निर्माण करने वाला विश्वविद्यालय है। उच्च शिक्षा मंत्री ने बताया कि उन्हें 1100 विश्वविद्यालयों को नजदीक से देखने का अवसर मिला है। इनमें यह देश का पहला चलंतमान विश्वविद्यालय है। इसका दीक्षांत समारोह आचार्यश्री के चातुर्मास की अंतिम समयावधि के दौरान उनके सान्निध्य में ही होता है। केन्द्रीय शिक्षामंत्री ने कहा कि प्राकृत भाषा को शास्त्रीय भाषा की मान्यता दी जा चुकी है और अब यह मेरा दायित्व है कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को भारत सरकार की ओर से प्राकृत भाषा का शोध केन्द्र बनाया जाए। उन्होंने जैनिज्म के मूल में और कण-कण में ईश्वरत्व, देवत्व और जीवन है और कहा कि इन मूल्यों का महत्त्व है। भारत 2047 तक विकसित होने का मन बना चुका है और आप सभी उसका आधार हो। हमें दुनियां की कोई ताकत भौतिक विकास में नहीं रोक सकती है। मनुष्य को उनकी चेतना ही चलाएगी। अच्छे व्यक्तित्व से ही संतुलन बन पाएगा।

शराब और नशे से दूर रहने का दिलाया संकल्प

विश्वविद्यालय के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने अपने अनुशासन के प्रेरणा प्राथेय में ज्ञान के साथ संयम की चेतना लाने को भी जरूरी बताया तथा कहा कि ज्ञानप्राप्ति का एक लाभ यह भी होना होता है कि आदमी के मन की एकाग्रता बढे। मन की चंचलता से आदमी परेशान हो सकता है, जबकि एकाग्रता से मन की स्थिति अच्छी हो सकती है।

व्यक्ति ज्ञान हाने पर ही दूसरों का भी भला कर सकता है, किसी का मार्गदर्शन कर सकता है। उन्होंने समाज और राष्ट्र की विभिन्न समस्याओं का मूल कारण असंयम को बताते हुए कहा कि मन और इंद्रियों का नियंत्रण नहीं होने से समस्याएं पैदा हाती हैं। जैन दर्शन इच्छा-परिमाण, अपरिग्रह, भोगोपभोग की बात करता है। जीवन के लिए आवश्यकताओं पूर्ति तक तो ठीक है, लेकिन लालसा से असंयम होता है। विद्यार्थियों के लिए ज्ञान के साथ संयम की प्रवृति भी जरूरी है। नैतिकता, मैत्री, संयम जरूरी है। आचार्य तुलसी के अणुव्रत का प्राणतत्त्व संयम है। अणुव्रत गीत में भी यही आता है। उन्होंने इस अवसर पर सभी विद्यार्थियों को जिन्दगी में कभी शराब नहीं पीने एवं किसी भी तरह की ड्रग्स को नशे के रूप में नहीं लेने का संकल्प ग्रहण करवाया।

विभिन्न क्षेत्रों में देश का पहला विश्वविद्यालय होने का श्रेय

कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अपने सम्बोधन में सभी को अहिंसक, प्रामाणिक व व्यसनमुक्त जीवन जीने सम्बंधी संकल्प सूत्र ग्रहण करवाया तथा विश्वविद्यालय की विशिष्टताओं को चित्रित किया और बताया कि यह विभिन्न क्षेत्रों में पहल करने वाला देश का पहला विश्वविद्यालय है। इस विश्वविद्यालय ने योग एवं जीवन विज्ञान का पहला स्नातकोत्तर कोर्स प्रारम्भ किया। प्राकृत विभाग को स्नातकोत्तर स्तर पर स्वतंत्र रूप से प्रारम्भ करने वाला पहला विश्वविद्यालय रहा। संवैधानिक रूप से अनुशास्ता के पद वाला पहला व एकमात्र विश्वविद्यालय है। अपनी स्थापना से आज तक दूरस्थ शिक्षा का संचालन बिना किसी अवरोध के संचालित रखने वाला एकमात्र विश्वविद्यालय है। गांधी दर्शन के अलावा अहिंसा एवं शांति को स्नातकोत्तर स्तर पर कोर्स प्रारम्भ करने वाला भी पहला विश्वविद्यालय है तथा साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा प्रदान करने वाला भी यह पहला विश्वविद्यालय बना हुआ है।

2500 साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा एवं 140 को पी-एच्.डी. की उपाधि

कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि यही देश का एकमात्र विश्वविद्यालय है, जिसमें बिना किसी साम्प्रदायिक भेदभाव के साधु-साध्वियों को उच्च शिक्षा प्रदान की जा रही है। इस विश्वविद्यालय ने अब तक कुल इन साधु-साध्वियों को 140 पीएचडी दी है और 2500 साधु-साध्वियों को शिक्षित किया है। इन साधु-साध्वियों के लिए उनके स्थान पर ही परीक्षाएं संचालित की जाती हैं। उन्होंने विश्वविद्यालय

के सामाजिक एवं राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुतिकरण के बारे में बताया कि यह विश्वविद्यालय नैक से 'ए' एक्रीटेडेट है, यूजीसी की 12बी से मान्यता प्राप्त है। क्वालिटी मैनेजमेंट, ओक्यूपेशनल हेल्थ मैनेजमेंट, एनवायर्नमेंट मैनेजमेंट में आईएसओ से सर्टिफाइड है। अन्य विभिन्न उपलब्धियों का उल्लेख करते हुए उन्होंने बताया कि यह गर्व की बात है कि यहां के विद्यार्थियों को योग में 7 विश्व रिकॉर्ड बनाने सहित भारतीय संसद में युवा विद्यार्थियों की सहभागिता, राष्ट्रीय स्वतंत्रता दिवस एवं गणतंत्र दिवस समारोह में भी सहभागिता रही, प्रशासनिक सेवाओं में विद्यार्थियों के चयन आदि उपलब्धियों को भी बताया। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय के दूरस्थ शिक्षा केन्द्र में 8500 विद्यार्थी अध्ययनरत हैं। मल्टी मीडिया में 100 वीडियो लेक्चर्स तैयार किए गए हैं। विश्वविद्यालय अपने श्रेष्ठ 10 शोध प्रबंधों को प्रतिवर्ष प्रकाशित करता है। उन्होंने बताया कि भारतीय पुरातन ज्ञान व्यवस्था के सुदृढीकरण में यह संस्थान प्रयत्नशील है।

व्यक्ति की गरिमा और अन्तर्निहित मूल्यों का महत्त्व

डी. लिट. की मानद उपाधि प्राप्त करने के बाद न्यायमूर्ति दिनेश माहेश्वरी ने अपनी उपाधि को अपने गुरूजनों, परिवारजनों एवं जीवन की विधिक यात्रा के दौरान सहभागी रहे समस्त कार्यकर्ताओं आदि को समर्पित करते हुए कहा कि व्यक्ति की गरिमा को भारतीय संविधान की उद्देशिका में सम्मिलित किया गया है, जो काफी महत्त्वपूर्ण है। व्यक्ति में अन्तर्निहित मूल्य ही उसकी गरिमा होते हैं। उन्होंने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय को मूल्यों के लिए अनोखा, प्रतिष्ठित और सुदृढ योगदानकर्ता बताया तथा कहा कि यह विश्वविद्यालय राष्ट्र के निर्माण में अनूठा योगदान कर रहा है और हम सभी उससे लाभान्वित हो रहे हैं। कार्यक्रम के प्रारम्भ में विश्वविद्यालय की छात्राओं ने 'कुल-प्रार्थना' प्रस्तुत की। अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा मंगलाचरण एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अनुमति से समारोह प्रारम्भ किया गया। कार्यक्रम में मुनिश्री कुमार श्रमण, मुनिश्री विश्रुत कुमार, मुख्य मुनिश्री महावीर कुमार का सान्निध्य भी रहा तथा जैन विश्व भारती के अध्यक्ष अमरचंद लूंकड़ मंचस्थ रहे। साथ ही विभिन्न विश्वविद्यालयों के कुलपति रहे प्रो. संजीव शर्मा, प्रो. आर.एस. यादव, प्रो. गोपाल शर्मा, प्रो. धर्मचंद जैन, प्रो. जगतराम भट्टाचार्य आदि कार्यक्रम में उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं अंत में आभार ज्ञापन कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक ने किया। राष्ट्रगान के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया।

विश्वविद्यालय को ऐसा केन्द्र बनाओ कि देश-विदेश के लोग जैन विद्याओं को जानने-समझने के लिए लाडनूं आएं- आचार्यश्री महाश्रमण

जैविभा संस्थान के विकास हेतु प्राप्त किया अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण का मार्गदर्शन

तेरापंथ धर्मसंघ के 11वें आचार्य एवं संस्थान के अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण ने कहा है कि जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय में और नया क्या किया जा सकता है, इस पर ध्यान देना चाहिए। विश्वविद्यालय के लिए जैनिज्म मूल रहना चाहिए। इसका नाम ही जैन विश्वभारती संस्थान है, तो जैन विद्या ही इसकी मूल रहेगी। समस्त देश-विदेश में जैनिज्म को जानने, समझने, पढने और ज्ञान प्राप्त करने के लिए यह केन्द्र रहना चाहिए, जहां आकर उन्हें जैन विद्या को पढने-जानने का पूरा अवसर मिल सके। सूरत में अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण के दर्शनार्थ आए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के विद्यार्थियों, शिक्षकों, प्रशासनिक अधिकारियों एवं प्रमुख लोगों को 11 नवम्बर को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने कहा कि विश्वविद्यालय की स्थापना के 34 वर्षों के इतिहास का लेखन होकर एक पुस्तक तैयार होनी चाहिए। इसमें विश्वविद्यालय के विकास की सम्पूर्ण यात्रा का विवरण संकलित किया जाकर सम्मिलित किया जाना चाहिए। 34 वर्ष की यात्रा की इस किताब के लिए 34 वर्ष पहले के साक्षी भी मिल जाएंगे। इसमें विकास के समस्त प्रयासों और उनके रही कमियों-अच्छाइयों सहित पूरा उल्लेख होना चाहिए। इस पुस्तक से पुरानी से पुरानी बातों को जाना जा सकेगा। 10-20 साल बाद भी यहां कैसे-क्या हुआ, देख सकते हैं।

प्राच्य विद्याओं, भारतीय संस्कृति एवं जैन विद्याओं के क्षेत्र में सतत् कार्यरत

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने प्रारम्भ में सबका परिचय करवाते हुए अनुशास्ता आचार्यश्री महाश्रमण को प्रारम्भ में विश्वविद्यालय के बारे में गतिविधियों एवं योजनाओं की जानकारी प्रदान की। उन्होंने बताया कि विश्वविद्यालय में हम प्राच्य विद्याओं, भारतीय संस्कृति, जैन विद्याओं के क्षेत्र में काम कर रहे हैं और इसी क्षेत्र में हमारी कोशिश है कि निरन्तर आगे बढें। उन्होंने विश्वविद्यालय में किए जा रहे शोध कार्यों, साधुओं के सान्निध्य व मार्गदर्शन के बारे में बताते हुए कहा कि आज विश्वविद्यालय वित्तीय मामलों में सफल हुए हैं और आत्मनिर्भर बन रहे हैं। हम स्वयं के खर्चे से विभिन्न योजनाओं का संचालन करने में समर्थ हैं। 10-15 करोड़ की योजनाओं पर अपने स्तर पर काम कर सकते हैं। उन्होंने जानकारी दी कि लाडनूं से 3 बसों से 75 विद्यार्थियों, 50 संकाय सदस्यों सहित 125 लोग सूरत आए हैं। इस अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बी.एल. जैन, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत आदि ने भी विश्वविद्यालय के सम्बंध में अपने विभागों के कार्यों, गतिविधियों एवं विकास की जानकारी दी।

यह नैतिक मूल्यों व संस्कारों को समर्पित विश्वविद्यालय

सूरत में आयोजित विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह के अवसर पर कुलाधिपति एवं केन्द्रीय विधि मंत्री अर्जुनराम मेघवाल ने अपने भेजे गए आनलाईन संदेश में विद्या की साधना को सर्वोत्कृष्ट साधना बताते हुए उसके परिणाम में धैर्य धारण करना आवश्यक बताया। उन्होंने कहा कि विद्याराधना की कोई निश्चित अवधि नहीं होती है। यह 'चरैवेति-चरैवेति' की भावनाएं रखती है कि सदा चलते ही रहना चाहिए। उन्होंने पूर्व राष्ट्रपति डॉ. अब्दुल कलाम का स्मरण करते हुए कहा कि शिक्षा सदैव नैतिक मूल्यों को समर्पित होनी चाहिए। आचार्य तुलसी ने 'ज्ञान का सार आचार है' को आदर्श बताते हुए मूल्यों को अपनाने का सपना लिया था। जैन विश्वभारती संस्थान ने अपने स्थापना-काल से ही उसे अपनाया और आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण के अनुशासन, आशीर्वाद एवं मार्गदर्शन में लगातार आगे बढ रहा है। यह विश्वविद्यालय एक विशेष उद्देश्य से गठित डीम्ड यूनिवर्सिटी है। इसमें डिग्री के साथ नैतिक शिक्षा को सर्वाधिक महत्त्व दिया जाता है। अपनी स्थापना के बाद 33 वर्षों में यह विश्वविद्यालय इस उद्देश्य की पूर्ति में बहुत आगे बढ चुका है।

शिक्षा के माध्यम से युवा पीढी को संस्कारित कर रहा है जैविभा विश्वविद्यालय- मुख्यमंत्री भजन लाल शर्मा

मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा ने कहा है कि केवल अच्छी सड़कें और इमारतें ही प्रदेश का पूर्ण विकास नहीं करती है, इसके लिए अच्छे विचारों का होना भी आवश्यक है। साधु-संत समाज को आगे बढाने का काम करते हैं। यह जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय शिक्षा के माध्यम से युवा पीढी को संस्कारित करने का काम कर रहा है। यहां व्यावसायिक शिक्षा ही नहीं, बल्कि मानव को मानव बनाने की शिक्षा को प्रमुखता दी जाती है। इसी से देश को विश्वगुरू बनाने की तरफ बढाया जा सकता है। वे यहां जैन विश्व भारती स्थित सम्पोषणम् हॉल में 17 जुलाई को आयोजित शिलान्यास समारोह में मुख्य अतिथि के रूप में सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने अपने सम्बोधन में आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाश्रमण और उनके विचारों व समाज हित में किए जा रहे कार्यों का उल्लेख विस्तार से किया और कहा कि मानव समाज की आध्यात्मिक और सांस्कृतिक चेतना के जागरण का काम किया जा रहा है। उनका सम्बोधन पूरी तरह जैन विश्व भारती, विश्वविद्यालय एवं आचार्यों की परम्परा पर केन्द्रित रहा।

एक महान सोच से बनी जैन विश्व भारती

मुख्यमंत्री शर्मा ने आचार्य तुलसी प्रणीत अणुव्रत आंदोलन की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने इस माध्यम से सिद्धांत पक्ष को व्यावहारिक बनाया। जैन विश्व भारती भी मानव कल्याण की मूल भावना से संस्कृति के संरक्षण का कार्य कर रही है। उन्होंने कहा कि भारत शिक्षा केन्द्रों व शिक्षा देने वाले देश के रूप में जाना जाता रहा है। नालंदा विश्वविद्यालय में देश-विदेश के विद्यार्थी-शिक्षार्थी शिक्षा ग्रहण करने के लिए आते थे। प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी ने फिर से नालंदा विश्वविद्यालय को नया जीवन देकर पुरातन संस्कृति को बहाल करने का काम किया है। इस जैन विश्व भारती की स्थापना के पीछे भी महान सोच रही है। यहां शोध का काम किया जाता है। जैन दर्शन के लिए किए जा रहे शोध की चर्चा सभी जगह है। उन्होंने बताया कि वे लाडनूं में दूसरी बार यहाँ आए हैं। पहले वे भाजपा की प्रदेश कार्यसमिति की बैठक में आए थे, तो देखा कि लाडनूं में इतना भव्य व दिव्य संस्थान मौजूद है। यहां प्राचीन भाषा व लिपियों का कार्य, ध्यान, योग और प्राच्य विधाएं इसकी पहचान बनी हुई है।

मुख्यमंत्री ने व्यक्त की नेचुरोपैथी सेंटर के लिए सहमति

समारोह के विशिष्ट अतिथि केन्द्रीय विधि मंत्री एवं जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल ने भी जैविभा विश्वविद्यालय की सराहना की और कहा कि यहां करीब 7-8 करोड़ की लागत से नेचुरोपैथी सेंटर बनाया गया है। उन्होंने मुख्यमंत्री से आग्रह किया कि इसमें नेचुरोपैथी के सब्जेक्ट शुरू करने के लिए राज्य सरकार एनओसी प्रदान करे। इस पर मुख्यमंत्री ने बैठे-बैठे ही तत्काल अपनी सहमति दे दी। केन्द्रीय मंत्री ने आचार्य तुलसी के कर्तृत्व की सराहना करते हुए कहा कि उन्होंने सन् 1949 में अणुव्रत गीत लिखा था, 'संयममय जीवन हो।' मेघवाल ने इस गीत की दो पंक्तियां गाकर प्रस्तुत की और उसका महत्त्व बताया।

योग व अहिंसा-शांति के लिए देश का पहला विश्वविद्यालय

जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बताया कि देश में जब कहीं भी योग का विषय नहीं था, तब 1987 में यह पहला विश्वविद्यालय था, जिसने योग विभाग की अलग से स्थापना की। इसी तरह से अहिंसा व शांति विभाग भी पहली बार यहां स्थापित किया गया। यहां प्राकृतिक चिकित्सा पर पाठ्यक्रम प्रारम्भ किया जाएगा तथा आयुर्वेद व होम्योपैथी पर शिक्षा देने का काम किया जाएगा। उन्होंने कहा कि यह विश्वविद्यालय अनुशास्ताओं आचार्य तुलसी, आचार्य महाप्रज्ञ व आचार्य महाश्रमण की दूरदृष्टि की देन है। यहां मूल्य आधारित शिक्षा पर जोर दिया जाता है। यह संस्थान व्यक्तित्व निर्माण के लिए जाना जाता है। यह छोटा अवश्य है, लेकिन देश भर में प्रतिष्ठा कायम कर रखी है। मुख्य वक्ता पत्रिका समूह के डॉ. गुलाब चंद कोठारी ने केवल अपने लिए काम करने में नहीं बल्कि सबके हित के लिए काम करने में ही जीवन की सार्थकता बताई। उन्होंने कहा कि बीज जब अपना अस्तित्व छोड़ता है, तो वह बड़ा पेड़ बन सकता है। कोई भी पेड़ अपना फल स्वयं नहीं खाता, जो अपना फल खाए, वह किसी को क्या देगा। व्यक्ति को पेड़ की तरह देने में अपने जीवन की सार्थकता रखनी चाहिए, लेने में नहीं। उन्होंने सभी से अपील की कि हमें विकास करना चाहिए, बड़ा पेड़ बनना चाहिए और लोगो में खूब बांटना चाहिए। लेकिन साथ ही अपनी जड़ों को कभी नहीं छोड़ना चाहिए। जो अपनी जड़ छोड़ देता है, उसका अस्तित्व खतरे में पड़ जाता है। डॉ. कोठारी ने जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय में सभी धर्म व दर्शनों का अध्ययन आवश्यक बताया।

विश्वविद्यालय में किया गया भावभीना स्वागत

मुख्यमंत्री ने परिसर में पांच भवनों के लिए भूमिपूजन व शिलान्यास किया। समारोह में उन्होंने इन भवनों के दानदाताओं भागचंद बरड़िया, रमेश चंद बोहरा, राकेश बोहरा, रचना बोहरा, नवीन बैंगानी गणेशमल बोथरा आदि का शॉल ओढा कर सम्मान किया। समारोह में मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा के साथ केन्द्रीय मंत्री व जैविभा विश्वविद्यालय के कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल, कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, पत्रिका समूह के सम्पादक डॉ. गुलाबचंद कोठारी व जैन श्वेताम्बर तेरापंथ सभा के राष्ट्रीय अध्यक्ष मनसुख सेठिया मंचस्थ रहे। कार्यक्रम में राजस्थान सरकार में मंत्री विजयसिंह चौधरी व मंजू बाघमार, भाजपा के प्रदेश उपाध्यक्ष व पूर्व केन्द्रीय मंत्री सीआर चौधरी, प्रदेश उपाध्यक्ष डॉ. ज्योति मिर्धा, प्रदेश मंत्री विजेन्द्र पूनिया, जिला प्रमुख भागीरथ चौधरी आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम के बाद उन्होंने जैन विश्व भारती के महाश्रमण विहार में विराजित संतों के दर्शन किए। परिसर में मुख्यमंत्री ने वृक्षारोपण किया और सेमल का पेड़ लगाया। बाद में वे विश्वविद्यालय में आए और व्यवस्थाएं देखी। वहां कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनका भावभीना स्वागत किया।

जैविभा विश्वविद्यालय में नए पाठ्यक्रम शुरू करने पर विचार

कुलाधिपति एवं केन्द्रीय कानून मंत्री ने ली कुलपति व अन्य के साथ बैठक

संस्थान के कुलाधिपति तथा केन्द्रीय विधि एवं न्याय मंत्री अर्जुनराम मेघवाल अपने लाडनूं प्रवास के दौरान 17 जुलाई को यहां विश्वविद्यालय में आए और उन्होंने यहां कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़, रजिस्ट्रार अजयपाल कौशिक एवं अन्य स्टाफ के साथ बैठक लेकर विचार-विमर्श किया। मेघवाल ने कहा कि यह विश्वविद्यालय देश के सभी विश्वविद्यालयों से अलग पहचान रखता है। यहां जो भी पाठ्यक्रम सफलतापूर्वक संचालित हैं, वे पाठ्यक्रम देश के अन्य सभी विश्वविद्यालयों के लिए अनुकरणीय हैं। उन्होंने नेचुरोपैथी का पाठ्यक्रम भी शुरू करने की आवश्यकता बताई और कहा कि विश्वविद्यालय में नेचुरोपैथी सेंटर का करीब 8 करोड़ का भवन भी तैयार है और नेचुरोपैथी का काम भी चल रहा है, अब विद्यार्थियों को भी इसका लाभ मिलना चाहिए। उन्होंने संस्थान की संस्कृति मंत्रालय एवं कुछ फंडिंग एजेंसीज को भेजी गई विभिन्न परियोजनाओं के बारे में जानकारी प्राप्त की। साथ ही संस्कृति मंत्रालय के तहत संचालित पांडुलिपि मिशन में संस्थान द्वारा किए जा रहे पांडुलिपि संरक्षण कार्य की सराहना की और कहा कि इसे आगामी तीन सालों के लिए और बढाया जाएगा। इसके लिए उन्होंने कार्य-विस्तार के बारे में चर्चा करते हुए अपना चिंतन भी प्रस्तुत किया।

कुलाधिपति का किया गया सम्मान

इस दौरान उन्होंने विश्वविद्यालय की कार्यप्रगति की जानकारी ली एवं संस्थान के विकास के सम्बंध में चर्चा की। उनसे विश्वविद्यालय में कुछ नए पाठ्यक्रम शुरू किए जाने के बारे में भी वार्ता हुई। वार्ता के दौरान उन्हें अवगत करवाया गया कि विश्वविद्यालय के नेचुरोपैथी चिकित्सा केन्द्र में शुरू किए जाने वाले पाठ्यक्रमों के बारे में पिछली राज्य सरकार से चाही गई एनओसी नहीं दी जाने से समस्या पैदा हुई थी, अब सरकार बदल चुकी है और यह लम्बित एनओसी जारी की जानी चाहिए। इस पर मेघवाल ने आश्वासन दिया कि वे वर्तमान राज्य सरकार से एनओसी दिलवाने में पूरा सहयोग करेंगे।

केन्द्रीय मंत्री कुलाधिपति अर्जुनराम मेघवाल का इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने पुष्पगुच्छ प्रदान कर सम्मान किया। इस अवसर पर प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. बीएल जैन, डॉ. लिपि जैन, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, मोहन सियोल आदि उपस्थित रहे।

केन्द्रीय उच्च शिक्षा मंत्री ने की जैविभा संस्थान की प्राच्य विद्याओं व मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता की सराहना

कुलपति सहित प्रबन्ध-मण्डल सदस्यों ने उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान से मिल कर प्राकृत को शास्त्रीय भाषा की मान्यता देने के लिए जताया आभार

भारत सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने इस बात पर हर्ष व्यक्त किया है कि राजस्थान का लाडनूं स्थित जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय प्राकृत, पालि, संस्कृत आदि प्राच्य भाषाओं के संरक्षण और उनके विकास पर विशेष व महत्त्वपूर्ण कार्य कर रहा है। यह बात उन्होंने नई दिल्ली में अपने आवास पर 13 अक्टूबर को जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व प्रबंध मंडल के सदस्यों से वार्ता के बाद कही। उच्च शिक्षा मंत्री ने इस बात पर प्रसन्नता जताई कि मानवीय जीवन को समृद्ध बनाने और सामाजिक-आध्यात्मिक मूल्यों को पोषित करने के सन्दर्भ में जैविभा विश्वविद्यालय विविध प्रयासों में निरन्तर संलग्न है। विश्वविद्यालय में जैन विद्याओं के अध्ययन और प्राकृत, पाली और संस्कृत आदि प्राच्य भाषाओं के संरक्षण एवं संवर्धन के क्षेत्र में उनके विविध प्रयासों को जानकर उन्होंने उनकी अत्यंत सराहना की। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान से उनके निवास पर भेंट के दौरान प्राचीनकाल की जैन भाषा प्राकृत को भारत सरकार की ओर से शास्त्रीय भाषा की मान्यता दिए जाने पर आभार ज्ञापित किया तथा प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी सहित केन्द्रीय मंत्रिमंडल के प्रति भी उन्होंने संस्थान की ओर से आभार जताया।

प्राच्य विद्याओं व मूल्यों के प्रति प्रतिबद्धता से अवगत कराया

इस अवसर पर कुलपति प्रो. दूगड़ ने केन्द्रीय शिक्षा मंत्री को जैन विश्वभारती संस्थान के प्राच्य विद्याओं पर केन्द्रित होने की जानकारी देते हुए संस्थान की गतिविधियों, संचालित पाठ्यक्रमों, प्राकृत एवं संस्कृत विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग, अहिंसा एवं शांति विभाग, जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग आदि की जानकारी भी उन्हें दी तथा पांडुलिपि संरक्षा केन्द्र, राजस्थानी भाषा एवं साहित्य केन्द्र आदि की गतिविधियों के बारे में उन्हें बताया। साथ ही नैतिक व मानवीय मूल्यों के संरक्षण, शिक्षण, प्रसार आदि के लिए निरन्तर किए जा रहे प्रयासों के सम्बंध में उन्हें अवगत करवाया गया। केन्द्रीय शिक्षा मंत्री ने इस पर अत्यन्त हर्ष प्रकट किया तथा ऐसे सद्प्रयासों के लिए जैन विश्वभारती संस्थान की सराहना की। केन्द्रीय मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने संस्थान के बारे में अपने उद्गारों को अपने निजी 'एक्स' (ट्विटर) एकाउंट पर भी पोस्ट करके शेयर किया है। इस भेंट के दौरान प्रारम्भ में जैन विश्वभारती संस्थान की ओर से कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ द्वारा उच्च शिक्षा मंत्री प्रधान का शॉल, साहित्य, प्रतीक चिह्न आदि प्रदान करके सम्मान किया गया। कुलपति के साथ में जैन विश्वभारती संस्थान के प्रबंध मंडल के सदस्य विनोद बैद व मनसुख सेठिया भी मौजूद रहे।

जिले के विकास के लिए श्रेष्ठिजनों का सहयोग आवश्यक- सैन

जिला कलेक्टर पुखराज सैन का सम्मान एवं संस्थानिक गतिविधियों की परिचर्चा

जिला कलेक्टर पुखराज सैन ने कहा है कि भौतिक और आध्यात्मिक दोनों विकास जरूरी होते हैं। व्यक्ति अपनी भौतिक उन्नति तो कर लेता है, लेकिन आत्मिक उन्नति के बिना पूर्ण विकास संभव नहीं होता। वे 25 सितम्बर को यहां जैन विश्व भारती में विराजित तपस्वी मुनिश्री जयकुमार के दर्शन करने आए थे। डीडवाना-कुचामन जिले में पदस्थापन और कार्यभार ग्रहण करने के बाद जिला कलेक्टर ने मुनिश्री जयकुमार के दर्शन करके उनसे आशीर्वाद लेने के साथ आध्यात्मिक चर्चा भी की। इस अवसर पर जैन विश्वभारती संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने उनका सम्मान किया। जिला कलेक्टर पुखराज सैन ने योग, अध्यात्म और भारतीय मूल्यों एवं संस्कृति पर बातचीत करते हुए जैन विश्व भारती एवं विश्वविद्यालय के बारे में पूरी जानकारी प्राप्त की। कुलपति प्रो. दूगड़ ने उन्हें विश्वविद्यालय में संचालित योग एवं जीवन विज्ञान, अहिंसा एवं शांति, जैन एवं प्राच्य विद्या, पांडुलिपि संरक्षण आदि गतिविधियों की जानकारी प्रदान की। इस अवसर पर जिला कलेक्टर ने जिले के विकास के सम्बंध में भी विचार-विमर्श किया और औद्योगिक घरानों एवं सेठजनों का सहयोग जिले के विकास के लिए आवश्यक बताया। इस अवसर पर उपखंड अधिकारी मिथलेश कुमार भी मौजूद रहे।

आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र के विकास हेतु राज्य सरकार के साथ 50 करोड़ का अनुबंध

जैविभा विश्वविद्यालय एवं राज्य सरकार के आयुष विभाग के साथ हुआ एमओयू

राजस्थान सरकार के आयुष विभाग और जैन विश्वभारती संस्थान के बीच नेचुरोपैथी चिकित्सा सुविधा और उसके विकास को लेकर एक 50 करोड़ रूपयों की परियोजना का एमओयू हुआ है। सरकार के साथ 9 नवम्बर को यह परस्पर समझौता करार जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के अन्तर्गत संचालित आचार्य महाप्रज्ञ मेडिकल कॉलेज, अस्पताल और प्राकृतिक चिकित्सा अनुसंधान केंद्र के लिए किया गया है। इससे लाडनूं में नेचुरोपैथी चिकित्सा पद्धति से उपचार, अनुसंधान और विकास को बल मिल सकेगा। सन् 2025 से प्रारम्भ होने वाले इस परियोजना के एमओयू से बड़ी संख्या में लोगों को इस क्षेत्र में रोजगार मिल सकेगा तथा बड़ी संख्या में लोग नेचुरोपैथी चिकित्सा से स्वास्थ्य लाभ प्राप्त कर सकेंगे। इस नेचुरोपैथी परियोजना के लिए विश्वविद्यालय को राजस्थान सरकार अपनी मौजूदा नीतियों, नियमों और विनियमों के अनुसार राज्य के संबंधित विभागों से आवश्यक अनुमति और मंजूरी आदि प्राप्त करने में भी सुविधा प्रदान करेगी।

इस एमओयू पर राजस्थान सरकार के आयुष विभाग की ओर से आयुर्वेद निदेशक डॉ. आनन्द कुमार शर्मा और जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की ओर से रजिस्ट्रार डॉ. अजयपाल कौशिक ने हस्ताक्षर किए हैं। इस एमओयू सम्बंधी प्रस्ताव राजस्थान की पिछली सरकार के समय से लम्बित पड़ा था, जिसे इस सरकार ने मंजूरी प्रदान की है।

'यूएसए ट्रिप 2024' में समणीवृंद ने किया अमेरिका के कई स्थानों का दौरा

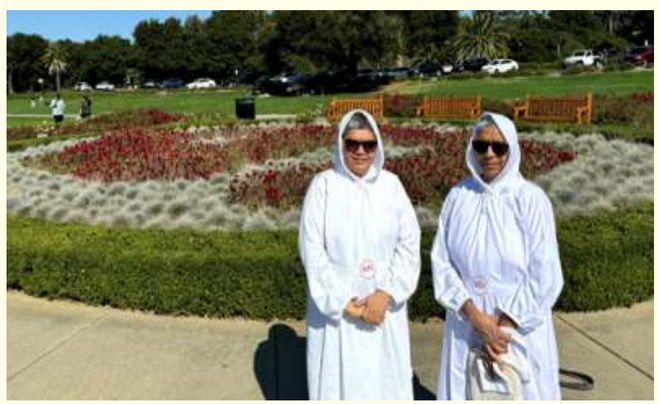

जैन विश्वभारती संस्थान की शिक्षिकाओं समणीवृंद की हालिया विदेश यात्रा अगस्त-सितंबर, 2024 तक (डेढ़ महीने के लिए) संयुक्त राज्य अमेरिका की आयोजित की गई। इसमें समणी रोहिणीप्रज्ञा एवं समणी सत्यप्रज्ञा दोनों ने संयुक्त राज्य अमेरिका में न्यू जर्सी, अटलांटा और सैन फ्रांसिस्को की यात्रा की। सेन फ्रांसिस्को में इन्होंने स्टैनफोर्ड यूनिवर्सिटी का दौरा किया और वहां के प्रोफेसर्स के साथ बातचीत की। प्लेग ऑफ एप्रिसिएशन जैन कम्युनिटी सेंटर में 'संबोधि ऑफ हिज हाईनेस आचार्य महाप्रज्ञः जैन सिद्धांत के माध्यम से भगवान महावीर की अहिंसा और संरचनात्मक परिप्रेक्ष्य और जीवन कहानियां' विषय पर एक व्याख्यान-श्रृंखला आयोजित करने के लिए एमोरी यूनिवर्सिटी में एलेन गफ के साथ वार्ता की गई।

भव्य कवि सम्मेलन आयोजित

'कवि कहना उसे पसंद मुझे, जिसकी कविता में प्राण भरा हो'– मुनिश्री जयकुमार

संस्थान के आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में कवि सम्मेलन का आयोजन मुनिश्री जयकुमार के सान्निध्य एवं कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में 14 नवम्बर को किया गया। कवि सम्मेलन में कवियों ने अपनी-अपनी प्रस्तुतियों से सबको हंसाया, गुदगुदाया, सहलाया, वीरता से ओतप्रोत किया, धार्मिकता से अभिभूत किया और सबको मोहित कर दिया। मुनिश्री जयकुमार ने सम्मेलन में कवि और कविताओं का काव्य के माध्यम से सटीक चित्रण किया और लेखन में शब्दों का जादू बताया। उन्होंने कहा, 'कवि पानी में आग लगा देते हैं, और आग में बाग लगा लेते हैं। कवियों के शब्दों की शक्ति विचित्र होती हैं, वे शब्दों से नाग को बांध देते हैं।' उन्होंने अपनी कविता प्रस्तुत करते हुए कहा, 'कवि कहना उसे पसंद मुझे, जिसकी कविता में प्राण भरा हो। पीड़ा-पीड़ा हो जिसमें, संस्कृति का सम्मान भरा हो।' अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सम्मेलन में सम्मिलित कवियों को गंभीर और अनुशासित बताया तथा कहा कि मुनिश्री का मंच होने से यहां गंभीरता व अनुशासन समाहित रहा।

गलत पढाया गया कि रोशनी सिर्फ सीधी रेखा में चलती है

कवि सम्मेलन में कवि चिराग जैन ने कवि सम्मेलन को संवेदनाओं को मानव मन तक पहुंचाने का माध्यम बताया और अपने सम्बोधन में कहा कि जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय पुरातन परम्पराओं को सहेजने का कार्य कर रहा है। कवि चिराग ने मोबाईल का युवा पीढी में बढते इस्तेमाल को अभिभावकों के लिए चिंताजनक बताते हुए कटाक्ष किया कि 'आजकल मां-बाप की एक ही टेंशन है, बेटा डाउनलोड क्या कर रहा है और बेटी अपलोड क्या कर रही है।' उन्होंने 'बेटी बचाओ, बेटी पढाओ' नारे की क्रियान्विति को फिजीक्स के उद्धरण के साथ बेटी को रोशनी बताते हुए इस प्रकार अभिव्यक्त किया, 'पहाड़ की घुमावदार पगडंडी पर स्कूल जा रही है लड़कियां। बचपन में गलत पढाया गया कि रोशनी सिर्फ सीधी रेखा में चलती है।' उन्होंने राम-रावण युद्ध के दौरान लक्ष्मण के मूर्च्छित होने का भाव-विभोर कर देने वाला काव्य प्रस्तुत करते हुए खूब तालियां बटोरी।

जो खुद को जीत लेते हैं, वही महावीर बनते हैं

कवि मनवीर मधुर (मथुरा) ने वीर रस से भरपूर एवं सांस्कृतिक ओज को जगाने वाले गीत प्रस्तुत किए। उन्होंने कहा, 'बरबादी से जंग लड़ी है, तब आबाद हुए हैं। रोम-रोम में इंकलाब भरा है, फिर आजाद हुए हैं।' इसी प्रकार जीवन के लिए आदर्श प्रस्तुत करते हुए उन्होंने अपनी कविता में कहा, 'स्वार्थ सोच में घर कर ले, तो जीवन रण हो जाता है। अपने ही विपरीत धरा का, तब कण-कण हो जाता है।' उन्होंने भगवान महावीर और अहिंसा के संदेश को भी अपनी कविता में चित्रित किया। कवि मधुर ने कहा, 'जहाँ को जीत कर तुम सिकंदर बन तो जाओगे। पर जो खुद को जीत लेते हैं, वही महावीर बनते हैं।' कवयित्री मनीषा शुक्ला ने महिला-पुरूष एवं पति-पत्नी के सम्बंधों में आने वाले खट्टे-मीठे प्रसंगों के चुटकुले प्रस्तुत करके खूब ठहाके लगवाए और तालियां बटोरी। उन्होंने प्रेम के अर्थ को प्रकट करने वाला गीत प्रस्तुत करके भी वाह-वाही लूटी।

खामोश बैठे रहते हैं बेटों के सामने

कवि सचिन अग्रवाल अलीगढ ने गजलों और शेरो-शायरी प्रस्तुत करके श्रोताओं की दाद ली। उन्होंने शेर सुनाते हुए कहा, 'अब मैं भी बेगुनाह हूं रिश्तों के सामने, मैंने भी झूठ कह दिया झूठों के सामने।' और 'रिश्ता छुपाया जाता तो होता बड़ा मलाल, मैंने उसे देख के चेहरा छुपा लिया।' बेटे और बेटी की परिवार में भूमिका के बारे में एक पिता के शब्दों को उन्होंने इस प्रकार व्यक्त किया, 'वो रौब वो हुक्म गए बेटियों के साथ, खामोश बैठे रहते हैं बेटों के सामने।' उन्होंने अपने गीतों को इस प्रकार से बताया, 'गीत सड़कों पर हमसे गाए नहीं जाते। हम तो वो हैं जो होठों पे सजाए जाते।' कार्यक्रम में राजेश कोठारी, राजकुमार चौरड़िया, संजय शर्मा, पार्षद रेणु कोचर, सुमन नाहटा एवं तेरापंथ महिला मंडल की महिलाएं, जैविभा विश्वविद्यालय के सभी स्टाफ सदस्य एवं विद्यार्थी आदि उपस्थित रहे। सम्मेलन का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत एवं चिराग जैन ने किया।

जैविभा विश्वविद्यालय के कुलपति रहे प्रो. बी.सी. लोढ़ा को मिला लाईफटाईम अचीवमेंट अवार्ड

माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (एमएसआई) ने पूर्व कुलपति एवं फंगस वैज्ञानिक प्रो. भोपालचंद लोढ़ा को माइकोलॉजी के क्षेत्र में उनके योगदान के सम्मान में 'लाईफटाईम अचीवमेंट अवार्ड' से नवाजा है। प्रो. लोढा लाडनूं के जैन विश्वभारती विश्वविद्याल के 1997 से 2001 तक कुलपति रह चुके हैं। यह सम्मान उन्हें जोधपुर में माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया एवं जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्वावधान में 'फंगल फ्रंटियर्स' विषय पर आयोजित तीन दिवसीय राष्ट्रीय संगोष्ठी के दौरान 27 नवम्बर को प्रदान किया गया। संगोष्ठी में इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ टेक्नालोजी (आईआईटी) जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल और जोधपुर विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. केएल श्रीवास्तव द्वारा अभिनंदन किया गया। माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया (एमएसआई) के सचिव द्वारा प्रो. बीसी लोढा को प्रदत्त प्रशस्ति पत्र का पठन किया गया। प्रो. लोढा को इससे पूर्व 'आचार्य तुलसी अनेकांत अवार्ड' एवं 'लीडिंग साइंटिस्ट ऑफ वर्ल्ड 2011' सम्मान भी प्राप्त हो चुके हैं। इस अवसर पर एमएसआई सोसायटी के अध्यक्ष प्रो. आरएन खारवाल ने फंगस पर विभिन्न संस्थानों में चल रहे शोधकार्य पर प्रकाश डाला। प्रो. लोढ़ा को इस अवार्ड और सम्मान के लिए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने बधाई दी है एवं फंगस क्षेत्र में उनकी शोध एवं उपलब्धियों के लिए उनके उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रदान की है।

संगोष्ठी के मुख्य अतिथि आईआईटी जोधपुर के निदेशक प्रो. अविनाश कुमार अग्रवाल ने कहा है कि जैव अभियांत्रिकी तकनीक से बायोमोलीक्यूल्स प्राप्त करने वाला देश की आने वाले समय में खाद्य पदार्थ, चिकित्सा उद्योग एवं पर्यावरण संरक्षण में विश्व के अन्य देशों से अग्रणी होगा। संगोष्ठी में देश भर के वैज्ञानिकों ने भाग लिया।

प्रो. बी.सी. लोढ़ा का फंगस क्षेत्र में योगदान

उन्होंने कवक के वर्गीकरण पर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है, 12 नए वंश और 31 नई प्रजातियां प्रकाशित की हैं। एस्कोमाइसीट्स में एक समूह के लिए जेनेरिक अवधारणाएं प्रस्तावित की हैं और एस्कोमाइसीट्स के 10 वंश और 29 प्रजातियों का संशोधन किया है। पादप रोग विज्ञान के क्षेत्र में उन्होंने जैविक नियंत्रण के विशेष संदर्भ के साथ अदरक के प्रकंद सड़न के एकीकृत प्रबंधन पर महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। कई शोध लेखों के अलावा उन्होंने 1974 में एकेडमिक प्रेस, लंदन द्वारा प्रकाशित डॉ. सी. एच. डिकिंसन की पुस्तक 'बायोलॉजी ऑफ प्लांट लिटर' में 'डाइजेस्टेड लिटर के अपघटन' पर एक अध्याय और डॉ. जे. सुगियामा की पुस्तक 'प्लियोमॉर्फिक फंगी' में 'प्लियोमॉर्फी इन सोर्डारियल्स' पर एक और अध्याय प्रकाशित किया है, जिसे दो प्रकाशकों, एल्सेवियर (एम्स्टर्डम) हॉलैंड और कोडांशा (टोक्यो) जापान द्वारा 1987 में एक साथ प्रकाशित किया गया था।

राष्ट्रीय व अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर उनका योगदान

प्रो. बी.सी. लोढ़ा जैन विश्वभारती संस्थान (डीम्ड यूनिवर्सिटी) लाडनूं के कुलपति के रूप में वर्ष 1997 से 2001 तक रहे थे। इसके अलावा वे राजस्थान कृषि विश्वविद्यालय, उदयपुर के प्लांट पैथोलॉजी विभाग के पूर्व प्रमुख भी रहे हैं। 1995 में भारत सरकार ने उनसे आयातित बीजों और बीज सामग्री के लिए संगरोध प्राधिकरण के रूप में कार्य करने का अनुरोध किया। वे ब्रिटिश माइकोलॉजिकल सोसाइटी, माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ जापान और इंटरनेशनल माइकोलॉजिकल एसोसिएशन (आईएमए), एमएसआई सहित कई अकादमिक सोसाइटियों से आजीवन रूप से जुड़े हुए हैं। वे अंतर्राष्ट्रीय माइकोलॉजिकल एसोसिएशन (आईएमए) की कार्यकारी समिति, इंटरनेशनल सोसाइटी ऑफ प्लांट पैथोलॉजी (आईएसपीपी) द्वारा प्लांट पैथोलॉजी शिक्षण और प्रशिक्षण पर पहली अंतर्राष्ट्रीय समिति के सदस्य, एशिया के लिए आईएमए समिति के सदस्य, माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ इंडिया के अध्यक्ष एवं यूजीसी की ओर से रांची विश्वविद्यालय और वनस्थली विद्यापीठ के लिए विशेषज्ञों की विजिटिंग कमेटी के संयोजक, ब्रिटिश माइकोलॉजिकल सोसाइटी, माइकोलॉजिकल सोसाइटी ऑफ जापान और इंटरनेशनल माइकोलॉजिकल एसोसिएशन सहित कई अकादमिक सोसाइटियों से जुड़े हुए रहे हैं।

जैविभा विश्वविद्यालय के बढ़ते कदम: नवीन शोध, अविष्कार, पेटेंट

अब शिक्षा क्षेत्र में डिजीटल लर्निंग के लिए विद्यार्थी हो सकेंगे तैयार

जैविभा विश्वविद्यालय के प्राध्यापकों ने बनाई ऑनलाईन टीचिंग एवं लर्निंग के लिए डिवाइस

उपकरण की डिजाइन को मिला भारत सरकार का पेटेंट

पैटेंट धारक : प्रो. बी.एल. जैन एवं डॉ. अमिता जैन

छात्रों को तेजी से डिजीटल दुनिया में भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करने के लिए जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के प्रोफेसर्स एवं प्राध्यापिका ने मिल कर 'ऑनलाईन शिक्षण अधिगम के लिए शैक्षणिक उपकरण' तैयार किया है, जिसका पेटेंट भारत सरकार द्वारा किया गया है। भारत सरकार के पेटेंट कार्यालय ने 12 सितम्बर को इस डिजाइन को मंजूरी देते हुए पंजीयन प्रमाण पत्र जारी किया है। यह डिवाइस प्रो. बीएल जैन, डॉ. अमिता जैन, प्रो. डॉ. रीटा शर्मा व डॉ. विनोद कुमार जैन के नाम से पंजीकृत-प्रमाणित की गई है। इसका प्रमाण पत्र महानियंत्रक पेटेंट, डिजाइन एंड ट्रेडमार्क ने जारी किया है। विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि इस 'ऑनलाइन शिक्षण अधिगम के लिए शैक्षणिक उपकरण' डिजाइन पेटेंट का प्रकाशन, नवीन शिक्षण रणनीतियों की प्रणाली को प्रभावी बनाने, कक्षा को एक आकर्षक, व्यक्तिगत और इंटरेक्टिव सीखने के माहौल में बदलने का कार्य करता है। यह उपकरण अनुकूली सीखने, गेमिफिकेशन, वर्चुअल सिमुलेशन और रीयल-टाइम, डेटा एनालिटिक्स को मिलाकर तैयार किया गया है और छात्र के विघटन की चुनौतियों का समाधान करने के साथ उनकी सक्रिय भागीदारी को बढ़ावा देता है। उन्होंने बताया कि निरंतर निगरानी, व्यक्तिगत हस्तक्षेप और सहयोगी उपकरणों के माध्यम से छात्रों को इस डिजिटल युग में सफलता के लिए तैयार करता है, जिससे सीखना अधिक गतिशील, समावेशी और प्रभावी हो जाता है। यह व्यक्तिगत सीखने के रास्ते खोलता है, यह निरंतर मूल्यांकन और ज्ञान अंतराल के लिए तत्काल हस्तक्षेप की अनुमति देता है और लचीले सीखने की गति का समावेशन, सीखने का गेमीकरण अर्थात अंक, बैज, लीडरबोर्ड और चुनौतियों जैसे गेमीकरण तत्वों को प्रेरणा और जुड़ाव बढ़ाने के लिए सिस्टम में एकीकृत किया गया है, जिससे सीखने की प्रक्रिया अधिक मनोरंजक हो जाती है। प्रो. जैन ने बताया कि यह 3-डी मॉडल सहित इंटरैक्टिव मल्टीमीडिया सामग्री का समर्थन करता है, जिससे छात्र जटिल अवधारणाओं को व्यावहारिक, अनुभवात्मक तरीके से समझ सकते हैं। स्वचालित ग्रेडिंग और फीडबैक तंत्र इसके अंतर्गत समाविष्ट है। यह एक इंटरैक्टिव शैक्षिक वातावरण तैयार करके सीखने के परिणामों को अनुकूलित करने में सक्षम है, जो छात्रों को तेजी से डिजिटल दुनिया में भविष्य की चुनौतियों के लिए तैयार करता है।

एआई पर्यावरण मोनिटरिंग के लिए निर्मित उपकरण को मिला अन्तर्राष्ट्रीय पेटेंट

पैटेंट धारक : डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डा. प्रद्युम्नसिंह शेखावत और टीम द्वारा पर्यावरण की शुद्धता की मोनिटरिंग के लिए बिना किसी तार के चलने वाली आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी युक्त एक मशीन घड़ी का निर्माण किया है, जिसका पेटेंट 28 जनवरी 2024 को ब्रिटेन के बौद्धिक संपदा कार्यालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय स्तर पर किया गया है। इस समूचे क्षेत्र के लिए यह पहला वैज्ञानिक पेटेंट है, जिसमें जैविभा विश्वविद्यालय का योगदान शामिल है। बौद्धिक संपदा कार्यालय यूके के पेटेंट, डिजाइन और ट्रेड मार्क्स के नियंत्रक-महालेखाकार एडम विलियम्स ने इस पेटेंट के लिए उन्हें प्रमाण पत्र जारी किया है। उनके इस पेटेंट के लिए अंतर्राष्ट्रीय डिजाइन वर्गीकरण में घड़ियां और अन्य माप उपकरण, जांच और संकेत देने वाले उपकरण, सुरक्षा व परीक्षण उपकरण श्रेणी में शामिल किया गया है। कृत्रिम बुद्धि सम्पन्न इस उपकरण का उपयोग कर पर्यावरण में होने वाले परिवर्तनों का अंकन और संकेतन कर सकेंगे। इससे वातावरण की शुद्धि के लिए मानव की सजगता निरन्तर बनी रहेगी।

पर्यावरणीय मापदंडों का सटीक और वास्तविक समय मूल्यांकन संभव होग– डा. शेखावत ने बताया कि यह आविष्कार व्यापक पर्यावरण निगरानी के लिए डिजाइन किए गए आर्टिफिशियल इंटेलिजेंस (एआई) आधारित वायरलेस सेंसर नेटवर्क (डब्ल्यूएसएन) नोड से संबंधित है। यह नवोन्मेषी उपकरण विभिन्न सेंसरों से डेटा को समझदारी से संसाधित करने और विश्लेषण करने के लिए उन्नत एआई एल्गोरिद्म का लाभ उठाता है, जिससे तापमान, आर्द्रता, वायु गुणवत्ता और अन्य महत्त्वपूर्ण कारकों जैसे पर्यावरणीय मापदंडों का सटीक और वास्तविक समय मूल्यांकन संभव हो जाता है।

उन्होंने बताया कि जलवायु परिवर्तन, प्रदूषण और संसाधन संरक्षण के बारे में बढ़ती चिंताओं के कारण पर्यावरण की निगरानी तेजी से महत्त्वपूर्ण हो गई है। पारंपरिक निगरानी प्रणालियों को अक्सर मैन्युअल डेटा संग्रह और विश्लेषण की आवश्यकता होती है, जिसमें समय लग सकता है और त्रुटियों की संभावना हो सकती है। वायरलेस सेंसर नेटवर्क (डब्ल्यूएसएन) के आगमन से स्वचालित और दूरस्थ निगरानी की अनुमति मिल जाने से इस क्षेत्र में क्रांति आएगी। डब्लूएसएन्स द्वारा उत्पन्न बड़ी मात्रा में डेटा को तुरंत सार्थक अन्तर्दृष्टि निकालने के लिए बुद्धिमान प्रसंस्करण की आवश्यकता होती है, इसलिए इस उपकरण की उपयोगिता बहुत अधिक बढ गई है।

जैविभा विश्वविद्यालय को मिला 'अहिंसा प्रशिक्षण प्रणाली' का पेटेंट

पैटेंट धारक : डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. रविन्द्र सिंह

विश्व भर में फैली हिंसा, युद्ध और तनाव के माहौल में जैन विश्वभारती संस्थान द्वारा आविष्कृत अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली को भारत सरकार के पैटेंट, डिजाईन एवं ट्रेड मार्क्स विभाग द्वारा 31 मई 2024 को पैटेंट प्रदान किया गया है। इस पेटेंट के मिलने के बाद कोई अन्य इस प्रणाली की नकल नहीं कर पाएगा। पेटेंट एक ऐसा कानूनी अधिकार है, जो किसी व्यक्ति या संस्था को किसी विशेष उत्पाद, खोज, डिजाईन, प्रक्रिया या सेवा के ऊपर एकाधिकार देता है।

इस पैटेंट के लिए जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय, डा. लिपि जैन, डा. बलवीर सिंह, डा. रविन्द्र सिंह राठौड़ ने भारत सरकार के समक्ष आवेदन किया था। पैटेंट, डिजाईन एवं ट्रेड मार्क्स विभाग के कंट्रोलर जनरल ने इसे स्वीकार करते हुए बायो मेडिकल इंजीनियरिंग के अन्तर्गत 'अहिंसक व्यवहार प्रशिक्षण प्रणाली' को पैटेंट प्रदान किया है।

अनुशास्ता आचार्य महाप्रज्ञ द्वारा प्रवर्त्तित अहिंसा प्रशिक्षण की पूर्ण विकसित प्रणाली को जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय ने शिक्षण में उपयोगी बनाया और उसके व्यावहारिक स्वरूप को अपनाते हुए बड़ी संख्या में लोगों को अहिंसा प्रशिक्षण प्रदान किया। इस विश्वविद्यालय में अहिंसा एवं शांति विभाग पृथक् बना हुआ है, जिसमें स्नातकोत्तर उपाधि भी इस विषय में प्रदान की जाती है। इस विभाग के अन्तर्गत ही कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में अहिंसक व्यवहार सम्बंधी प्रशिक्षण की प्रणाली विकसित की गई।

डिजीटल शिक्षा उपकरण एवं प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने की तकनीक का पेटेंट

पेटेंट धारक : प्रो. बी.एल. जैन, डॉ. अमिता जैन, डॉ. लिपि जैन

संस्थान के प्राध्यापकों ने हाल ही में शिक्षा जगत में नवीन प्रौद्योगिकी इजाद करके उसका पेटेंट करवाने की पहल की है। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के मार्गदर्शन में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन एवं सहायक आचार्या डॉ. अमिता जैन और अहिंसा एवं शान्ति विभाग की सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन की कृति 'स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस' का पेटेंट 15 मार्च 2024 को हुआ है और इसके अलावा प्रो. बीएल जैन एवं डॉ. अमिता जैन का 'छात्रों के सीखने के परिणामों पर प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए एक प्रणाली और विधि' पर आधारित एक और पेटेंट 26 अप्रेल को हुआ है। इस प्रकार जैन विश्वभारती संस्थान के अन्तर्गत लगातार नवीन आविष्कार एवं उनके पेटेंट हासिल होने को लेकर यहां खासा हर्ष व्याप्त है।

प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि उनके द्वारा तैयार 'स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस' का डिजाइन पेटेंट, डिजिटल शिक्षा को स्मार्ट ई-लर्निंग डिस्प्ले डिवाइस द्वारा परिवर्तित करता है, जो आधुनिक हार्डवेयर और सॉफ्टवेयर को एक सरल प्लेटफॉर्म में जोड़ता है। यह एक अत्याधुनिक डिजिटल शिक्षा उपकरण है, छात्र और शिक्षक के सीखने में सुधार करता है, हार्डवेयर, सॉफ्टवेयर और शैक्षिक परिणामों को शामिल करता है व विद्यार्थियों की कार्यक्षमता और उपयोगिता को बढ़ाता है। यह डिवाइस शिक्षा में बदलाव ला सकता है।

इसके अतिरिक्त प्रो. बीएल जैन एवं डॉ. अमिता जैन का संयुक्त पेटेंट 'छात्रों के सीखने के परिणामों पर प्रौद्योगिकी एकीकरण के प्रभाव को मापने के लिए एक प्रणाली और विधि' पर आधारित 26 अप्रेल 2024 को प्रकाशित हुआ है। उन्होंने बताया कि यह उपयोगिता पेटेंट उद्देश्य व्याख्यान, पाठ्यपुस्तकें और लिखित परीक्षा सहित पारंपरिक शिक्षण तकनीकों को डिजिटल प्रौद्योगिकियों द्वारा मजबूत बनाना है। यह विभिन्न शैक्षिक संदर्भों में छात्रों के लिए सीखने के परिणामों में सुधार करना, शैक्षिक प्रथाओं को मजबूत करना और सीखने के अनुभवों पर प्रौद्योगिकी के प्रभाव का व्यवस्थित रूप से आकलन करके साक्ष्य-आधारित निर्णय लेने की जानकारी देता है।

संस्थान की तीन छात्राओं ने लिया भारतीय युवा संसद में हिस्सा

छात्राओं का प्रस्तुतिकरण रहा सराहनीय

लोकतंत्र दिवस के अवसर पर आयोजित भारतीय युवा संसद में जैन विश्वभारती संस्थान लाडनूं की 3 छात्राओं ने डीडवाना-कुचामन जिले का प्रतिनिधित्व किया। 15 से 17 अगस्त तक तीन दिवसीय इस 'भारतीय युवा संसद' के आयोजन के दौरान इन छात्राओं अभिलाषा स्वामी, खुशी जोधा व धीरज राठौड़ ने अपना वक्तव्य प्रस्तुतीकरण किया तथा इसके अलावा प्रश्नोत्तरी एवं ओपन डिबेट में भी भाग लिया। इस युवा संसद कार्यक्रम में 24 राज्य एवं चार देशों के युवा सांसदों ने भाग लिया। इन तीनों छात्राओं के सराहनीय प्रस्तुतीकरण के बाद सफल होकर वापस जैविभा विश्वविद्यालय लौटने पर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने उनका सम्मान किया और उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएं प्रदान की। कुलपति प्रो. दूगड़ ने बताया कि संस्थान में शैक्षणिक के साथ गैर शैक्षणिक गतिविधियों एवं व्यक्तित्व विकास कार्यशालाओं के कारण यहां के विद्यार्थी अपने जीवन में निरनतर आगे बढ पाते हैं।

महत्त्वपूर्ण लोगों व राजनैतिक हस्तियों के बीच किया प्रस्तुतिकरण

राजस्थान के जयपुर में आयोजित इस लोकतंत्र दिवस के राष्ट्रीय कार्यक्रम 'भारतीय युवा संसद- 2024' में संस्थान से छात्राओं अभिलाषा स्वामी, खुशी जोधा व धीरज राठौड़ ने भाग लेकर वहां वक्तव्य प्रस्तुत किया। इस युवा संसद कार्यक्रम में राजस्थान के राज्यपाल हरीभाऊ किशन राव बागडे, विधानसभा अध्यक्ष वासुदेव देवनानी, जयपुर नगर निगम की महापौर डॉ. सौम्या गुर्जर, कर्नाटक विधानसभा अध्यक्ष के विधानसभा अध्यक्ष यू.टी. खादिर, संसद टीवी के वरिष्ठ पत्रकार डॉ. पवन कुमार शर्मा, मीडिया के जाने-माने व्यक्तित्व डॉ. अयनजीत सेन, नागालैंड के विधानसभा अध्यक्ष शरींगन लोंगकुमार, मेघालय के विधानसभा अध्यक्ष डॉ. नुमाल मोमिन, राज्यसभा के सदस्य डॉ. बलबीर सिंह सेचीवाल, जयपुर नगर निगम के उप महापौर, भारतीय युवा संसद के कन्वीनर आशुतोष जोशी, पूर्व आईपीएस ऑफिसर भारती घोष, राष्ट्रपति अवार्ड से सम्मानित लोक गायिका बेगम बतुल एवं जाने-माने विश्वविद्यालयों के कुलपति भी उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित विश्व अल्पसंख्यक दिवस समारोह में जैविभा विश्वविद्यालय की प्रतिभागिता

भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय एवं राष्ट्रीय अल्पसंख्यक शैक्षिक संस्थान आयोग के तत्वावधान में विश्व अल्पसंख्यक अधिकार दिवस और आयोग के 20वें स्थापना दिवस के अवसर पर 18 दिसम्बर को नई दिल्ली के विज्ञान भवन में भव्य समारोह का आयोजन किया गया। जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय के प्रतिनिधि के रूप में डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत व मोहन सियोल ने इस समारोह में भाग लिया। समारोह में देश के विभिन्न प्रांतों के अल्पसंख्यक समुदायों मुस्लिम, बौद्ध, सिख, ईसाई, पारसी और जैन समाज की शैक्षणिक संस्थाओं की गतिविधियों एवं राष्ट्रहित में उनमें सुधार व विकास पर चर्चा की गई। सभी धार्मिक व भाषायी अल्पसंख्यकों की क्षेत्र विशेष में जाति, धर्म, संस्कृति, भाषा, परंपरा की सुरक्षा पर विशेष जोर दिया गया। साथ ही अल्पसंख्यक समुदायों की रक्षा, विकास व कल्याण तथा अधिकार, शैक्षिक, आर्थिक और सामाजिक कार्यों के प्रति जागरूक बनाने पर जोर दिया गया। समारोह के मुख्य अतिथि केंद्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान थे। मानद् अतिथि के रूप में दिल्ली के राज्यपाल विनय कुमार सक्सेना, विशिष्ट अतिथि शिक्षा राज्यमंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार एवं विशेष आमंत्रित अतिथि के रूप में मुस्लिम राष्ट्रीय मंच के मार्गदर्शक इंद्रेश कुमार रहे। समारोह में मुख्य वक्ता के रूप में इकबाल सिंह लालपुरा, डॉ. इमाम उमेर अहमद इलियासी, आचार्य येशी फुंटसोक, प्रो. (डॉ.) फैजान मुस्तफा, उपाध्याय रवीन्द्र मुनि व आर्चबिशप रफी मंजाले थे। एनसीएमईआई के सचिव मनोज कुमार केजरीवाल व सदस्य प्रोफेसर (डॉ.) शाहिद अख्तर ने समस्त व्यवस्थाओं का संचालन किया।

पुरखों व संस्कारों के प्रति आस्था होने पर ही व्यक्तित्व की सम्पूर्णता- ओंकार सिंह लखावत

राजस्थान धरोहर प्राधिकरण के अध्यक्ष का 'अध्यात्म और पुरातत्त्व' पर व्याख्यान

कार्यक्रम- बिशनदयाल गोयल स्मृति व्याख्यानमाला
प्रायोजक- सुरेश चन्द्र गोयल
आयोजक- महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

राजस्थान धरोहर प्रोन्नति प्रधिकरण के अध्यक्ष व पूर्व सांसद ओंकार सिंह लखावत ने राजस्थान के पुरातात्त्विक महत्त्व में आध्यात्मिक व ऐतिहासिक स्थलों के पुनरोद्धार और उनके इतिहास के बारे में प्रकाश डालते हुए कहा कि वही मनुष्य सम्पूर्ण होता है, जिसमें आस्था बनी हुई रहे। आस्थाहीन मनुष्य की दुर्गति ही होती है। पुरखों के संस्कारों को भूलने पर केवल भौतिकता बढती है, इसका उदाहरण यूरोपीय देशों में प्रत्यक्ष देखने को मिल रहा है। वे अपने पुरखों को भूलने के कारण दुर्गति का शिकार होने लगे हैं। लखावत यहां जैन विश्वभारती संस्थान के आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में 26 अक्टूबर को आयोजित बिशनदयाल गोयल स्मृति व्याख्यानमाला में मुख्य वक्ता के रूप में बोल रहे थे। मुनिश्री जयकुमार व मुनिश्री मुदित कुमार के सान्निध्य में इस व्याख्यान का आयोजन महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के तत्त्वावधान में किया गया।

राजस्थान के चप्पे-चप्पे पर फैले हैं महापुरुष और संस्कार

अपने व्याख्यान में ओंकार सिंह लखावत ने कहा कि पुरातत्त्व का मतलब केवल पत्थर ही नहीं होता है। बलिदानों से भरा हमारा पुरातत्त्व हमारे जीवन को गौरवशाली बनाता है। लखावत ने मीरांबाई, अमरसिंह राठौड़, तेजाजी, गणितज्ञ ब्रह्मगुप्त, माघ कवि, आहवा के स्वतंत्रता संग्राम सेनानी, पन्ना धाय, काली बाई, डूंगजी-जवाहरजी, राजल बाई समना, पं. दीनदयाल उपाध्याय आदि विभिन्न महापुरूषों का उल्लेख करते हुए उनके पैनोरमा का निर्माण करके उनकी स्मृतियों का संरक्षण करने की जानकारी दी और कहा कि ये सब स्मारक नहीं, हमारी धरोहर है। हमें महापुरूषों पर काम करने की जरूरत है। उन्होंने बताया कि राजस्थान के चप्पे-चप्पे पर महापुरूष और संस्कार मिलेंगे। हमें भारत और संस्कृति को भूलना नहीं चाहिए। भौतिक सुख-सुविधाओं के बजाए हमें भारत की विरासत के रूप में फैले अपने महापुरुषों की वीरता, शक्ति और भक्ति याद रखने के साथ उनसे प्रेरणा लेते रहना चाहिए। लखावत ने श्रीमहावीरजी में भगवान महावीर का पैनोरमा और अजमेर में आचार्य विद्यासागर का पैनोरमा शीघ्र बनाने की घोषणा भी की।

विश्व की सबसे प्राचीन धर्म-सांस्कृतिक थाती पर गर्व

कार्यक्रम में मुनिश्री जयकुमार ने अध्यात्म को भारतीय संस्कृति का मूल बताया और कहा कि भारत के कण-कण में धर्म के संस्कार भरे हुए हैं। यहां धर्म, अर्थ, काम पर अंकुश के साथ मुक्ति या मोक्ष की बात भी कही गई है। मुनिश्री ने बताया कि ओकार सिंह लखावत ने पुरातत्व को जीवंत रूप में प्रस्तुत किया और वीर रस एवं भक्ति रस को उदाहरण सहित प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने भारतीय संस्कृति व धरोहर को अति प्राचीन बताते हुए कहा कि यहां से खुदाई में निकली शिव या ऋषभदेव की प्रतिमा को कार्बन डेटिंग के लिए ब्रिटेन भेजने पर पता चला कि वह प्रतिमा 26 से 28 हजार 500 साल पुरानी थी। हिन्दू संस्कृति के अलावा इतनी प्राचीन धर्म व संस्कृति अन्य कोई नहीं मिलेगी। प्रो. दूगड़ ने गुजरात में मिली प्राचीन तीन मंजिला बावड़ी में उलटे मंदिर की आकृति होने, अनेक मंदिरों में पत्थरों के खंभों के बॉल-बीयरिंग की तरह से घूमने, विभिन्न आधुनिक औजारों से भी नहीं काटे जा सकने वाले पत्थर को तराश कर प्राचीन काल में ही प्रतिमाओं का गढना आदि उदाहरण देते हुए कहा कि हमारी थाती पर हमें केवल विश्वास ही नहीं करना, बल्कि उन पर गर्व होना चाहिए। उन्होंने पुरातत्व व धरोहरों को ज्ञान का माध्यम बताया और कहा कि इससे पता चलता है कि हमारे पूर्वजों में ऐसा जोश व होश भरा था।

प्रो. त्रिपाठी की पुस्तक 'कुछ मत कहना' का विमोचन

इस दौरान कार्यक्रम संयोजक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी द्वारा लिखित कहानी संग्रह 'कुछ मत कहना' का विमोचन भी ओंकार सिंह लखावत, कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व भागचंद बरड़िया ने किया। यह प्रो. त्रिपाठी का सातवां कहानी संग्रह है। इससे पहले छह संग्रह पुस्तक रूप में प्रकाशित हो चुके हैं। इस अवसर पर मुख्य वक्ता ओंकार सिंह लखावत ने भी अपनी कृति 'युगपुरुष लखा' की प्रतियां कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व संजय गोयल को भेंट की। इससे पूर्व ओंकार सिंह लखावत व व्याख्यानमाला के प्रायोजक संजय गोयल का सम्मान शॉल, साहित्य, स्मृति चिह्न व अभिनन्दन पत्र प्रदान कर कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ व भागचंद बरड़िया ने किया। बिशनदयाल गोयल स्मृति व्याख्यानमाला के प्रायोजक सुरेश चन्द्र गोयल के प्रतिनिधि के रूप में संजय गोयल कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। अतिथि परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ शिक्षा विभाग की छात्राध्यापिकाओं के मंगलाचरण से किया गया। अंत में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने किया। इस अवसर पर भाजपा नेता करणी सिंह, राजेश भंडारी, उम्मेदसिंह चारण, राजेश विद्रोही, नीतेश माथुर, सुशील दाधीच, गोविन्द सिंह कसूम्बी आदि प्रमुख लोगों के अलावा विश्वविद्यालय के रजिस्ट्रार डॉ. अजयपाल कौशिक, विताधिकारी आरके जैन एवं समस्त शिक्षक व शैक्षेतर स्टाफ एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शिक्षक सिखाते हैं जीवन को सम्पूर्ण सफल बनाने की कला– प्रो. दूगड़

शिक्षक दिवस समारोह आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 5 सितम्बर को आयोजित शिक्षक दिवस समारोह की अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा है कि शिक्षक हमारी संस्कृति एवं सामाजिक विकास का प्रमुख आधार है, जिनसे हम सम्पूर्ण जीवन को सफल बनाने की कला सीखते हैं। शिक्षक सम्पूर्ण राष्ट्र के विकास का प्रमुख सूत्रधार है, जो अपने सेवा, संस्कृति और कौशल के ज्ञान से सदैव हमारे देश के भविष्य का निर्माण करने में तत्पर रहा है। उन्होंने विद्यार्थियों को सदैव छोटे-छोटे कार्यों से सीखने हेतु प्रोत्साहित करते हुए अपने भावी शिक्षक जीवन में अनुशासन, सृजन एवं कर्मशीलता जैसे गुणों को आत्मसात् करने हेतु तत्पर रहने का आह्वान किया।

सांस्कृतिक कार्यक्रम एवं शिक्षकों का सम्मान

कार्यक्रम में रंगारंग सांस्कृतिक अभिव्यक्ति के अंतर्गत एकल नृत्य, सामूहिक नृत्य, कविता-वाचन, गायन एवं भाषण आदि की शानदार प्रस्तुतियों द्वारा मोनिका जोशी, प्राची, खुशी एवं लक्ष्मी, प्रकृति एवं समूह, अभिलाषा स्वामी, ऐश्वर्या एवं समूह, दीपिका भाटी, कोमल सोलंकी आदि ने दर्शकों की दाद बटोरी। खुशी ने पीपीटी द्वारा सभी शिक्षकों की खट्टी-मीठी यादों को प्रस्तुत किया। शिक्षकों के लिए भी अलग-अलग खेलों का आयोजन किया गया, जिसमें डॉ. आभा सिंह एवं डॉ. गिरिराज भोजक विजेता रहे। प्रशिक्षणार्थियों द्वारा कार्यक्रम में अपने सभी शिक्षकों का सम्मान किया गया। कार्यक्रम में प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने सभी प्रशिक्षणार्थियों को शिक्षक दिवस की शुभकामनाएं देते हुए संस्थान की आचार्य परम्परा के अनुरूप जीवन में सदैव संस्कार, सेवा एवं जन कल्याण जैसे मूल्यों को अपनाने पर बल दिया।

शिक्षक भारत को फिर से विश्वगुरू बनाएंगे

कार्यक्रम का शुभारम्भ अतिथियों द्वारा मां सरस्वती को माल्यार्पण एवं ललिता द्वारा गणेश-वंदना की प्रस्तुति से हुआ। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने अतिथियों का स्वागत करते हुए कहा कि यह संस्थान आचार्यों के इंगित एवं कुलपति की प्रेरणा से शिक्षक-प्रशिक्षण द्वारा ऐसे शिक्षक विकसित करने हेतु तत्पर है, जो भारत को पुनः विश्व गुरु के रूप में ख्याति दिलवाए। शिक्षक दिवस के अवसर पर प्रो. जैन ने प्रशिक्षणार्थियों को सत्य, निष्ठा एवं सामाजिकता के गुणों द्वारा अपने जीवन को सफल बनाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के अंत में कार्यक्रम प्रभारी डॉ. गिरिराज भोजक ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवारी, डॉ मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता शर्मा, देवीलाल कुमावत, स्नेहा शर्मा, खुशाल जांगिड आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन भूमिका, चंचल आदि ने किया।

महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ

व्यक्तित्व विकास के लिए आत्मविश्वास व अनुशासन जरूरी– राजकुमार नाहटा

अनेकांत शोधपीठ के तत्वावधान में 'व्यक्तित्व विकास और जीवन मूल्य' विषय पर व्याख्यान कार्यक्रम आयोजित

कार्यक्रम– पूनमचंद भूतोड़िया स्मृति व्याख्यानमाला
व्याख्यान विषय – 'व्यक्तित्व विकास और जीवन मूल्य'
आयोजक– महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ, जैन विश्वभारती संस्थान, लाडनूं

संस्थान की महादेवलाल सरावगी अनेकांत शोधपीठ के तत्वावधान में पूनमचंद भूतोड़िया स्मृति व्याख्यानमाला के अन्तर्गत मुनिश्री जयकुमार एवं मुनिश्री मुदित कुमार के सान्निध्य में 'व्यक्तित्व विकास और जीवन मूल्य' विषय पर 14 सितम्बर को आयोजित व्याख्यान कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में प्रज्ञा पुरस्कार से सम्मानित देश के प्रमुख वित्त विशेषज्ञ राजकुमार नाहटा ने कहा, जिस प्रकार भवन निर्माण के लिए पहले भूमि की अच्छी प्रकृति आवश्यक होती है, वैसे ही व्यक्तित्व निर्माण के लिए जीवन मूल्यों की आवश्यकता होती है। उन्होंने कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए जीवन मूल्यों पर ध्यान दिया जाना सबसे अधिक जरूरी है। इसमें कृतज्ञता सीखने, जीवन पर्यन्त ज्ञान ग्रहण करने के लिए शास्त्रोक्त पांच प्रवृतियों का पालन करने, निरन्तर अभ्यास करने, संवादों की निरन्तरता बनाए रखने, नकल और स्पर्धा से बचने, बुराइयों के त्याग और अच्छाइयों को ग्रहण करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि अनुशासन को अपनी जीवन शैली बनाना सबसे जरूरी है। अनुशासन से शारीरिक व मानसिक विकास संभव हो पाता है। इसके अलावा उन्होंने सबसे ज्यादा जोर आत्मविश्वास बढाने पर देते हुए देते हुए कहा कि व्यक्तित्व विकास के लिए आत्मविश्वास सबसे बड़ा भाग है।

व्यक्तित्व विकास के लिए आत्मविश्वास जरूरी

कार्यक्रम को सन्निधि प्रदान करते हुए मुनिश्री जयकुमार ने बड़ी बातों पर अधिक ध्यान देने की बजाए छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखने की आवश्यकता बताते हुए कहा कि छोटी बातों से जीवन को बदला जा सकता है। उन्होंने उद्यम, साहस, धैर्य, विद्या, बुद्धि को अपने विकास के लिए आवश्यक बताया और कहा कि विकास व सफलता के लिए व्यक्ति को 'हां' और 'ना' कहने के विवेक को विकसित करना चाहिए। इससे आत्मविश्वास बढता है और व्यक्तित्व का विकास संभव होता है। इस अवसर पर अतिथि के रूप में समागत केन्द्रीय वित मंत्री की सहयोगी डॉ. दीवा जैन ने युवाओं को अद्भत शक्ति सम्पन्न बताते हुए कहा कि एकाग्रता व पुरूषार्थ फर्श से अर्श तक पहुंचा जा सकता है। उन्होंने विश्वव्यापी तनाव की समस्या से राहत पाने के लिए समय-प्रबंधन को महत्त्वपूर्ण माना और साथ ही प्रेक्षाध्यान के अभ्यास को एकाग्रता बढाने और तनाव से मुक्ति पाने का माध्यम बताया तथा कहा कि वे स्वयं प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करती हैं। दीवा ने जीवन में परिवर्तन लाने के लिए अभ्यास जरूरी बताया और कहा कि कुछ भी विपरीत होने की स्थिति में निराश नहीं होना चाहिए। हार जाने पर भी उठकर वापस लगन से लग जाना चाहिए। उन्होंने आचार्य तुलसी के सूत्र 'सुधरे व्यक्ति, समाज व्यक्ति से, राष्ट्र स्वयं सुधरेगा' को अपनाने की सलाह दी।

लक्ष्य तय कर सफलता का रास्ता स्वयं बनाएं

कार्यक्रम में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने अध्यक्षता करते हुए अपने सम्बोधन में दूसरों पर किसी प्रकार का दोषारोपण करने के बजाय अपनी कमजोरियों को स्वीकार करते हुए उन्हें सुधारने के प्रयत्न करने की आवश्यकता बताई। उन्होंने विद्यार्थियों से भीड़ का अनुकरण करने के बजाए अपना रास्ता स्वयं बनाने के लिए प्रेरित करते हुए कहा कि लक्ष्य तय करके अपना रास्ता खुद ही बनाएं। जैन विश्व भारती के पूर्व अध्यक्ष डॉ. धर्मचंद लूंकड़ कार्यक्रम में विशिष्ट अतिथि के रूप में मंचस्थ रहे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में जैन विद्या एवं तुलनात्मक धर्म व दर्शन विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अतिथि परिचय व स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने मुख्य वक्ता राजकुमार नाहटा को प्रशस्ति पत्र, साहित्य, शॉल और पुष्पगुच्छ प्रदान करके सम्मानित किया। प्रो. रेखा तिवाड़ी ने डॉ. दीवा जैन का सम्मान किया। डॉ. मनीषा जैन के मंगलाचरण से कार्यक्रम का प्रारम्भ किया गया। अंत में प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर राजकुमार चौरड़िया, निरंजन जैन एवं अन्य प्रमुख लोग, संकाय सदस्य व सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

ALUMNI CORNER

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा का आरएएस के लिए चयन

दो छात्राओं की नेवी और सहायक प्रोफेसर पद पर नियुक्तियां

अवन्तिका

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा रही अवन्तिका का चयन राजस्थान प्रशासनिक सेवा (आरएएस) में हुआ है। इसके अलावा यहां की छात्रा दिव्या जांगिड़ का चयन असिस्टेंड प्रोफेसर पद पर सुजला कॉलेज में हुआ है और शिवानी चौधरी का चयन नेवी के लिए किया गया है। आरएएस में चयनित अवन्तिका पुत्री लालाराम मेघवाल ने यहां से 2019 में बी.कॉम. किया था। दिव्या जांगिड़ पुत्री ललित कुमार जांगिड़ ने 2017 में यहां से बी.कॉम. किया था और शिवानी चौधरी पुत्री कैलाश झाझड़ा ने आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय से बी.एससी. फर्स्ट ईयर पासआउट किया था। आरएएस में चयनित अवन्तिका की प्रथम नियुक्ति कृषि उपज मंडी समिति नागौर में सचिव पद पर की हुई है। अवन्तिका ने 10वीं कक्षा तक की अपनी पढाई निम्बी जोधां के नेहरू बाल विद्या मंदिर से 88.17 प्रतिशत अंकों से की थी और उसके बाद उसने कुचामनसिटी के टैगोर पब्लिक स्कूल से 86.80 प्रतिशत अंकों से 12वीं उतीर्ण की। जैन विश्वभारती संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय से उसने 87.26 प्रतिशत अंकों के साथ बी.कॉम. किया था। उसके पिता लालाराम सरकारी अध्यापक हैं और माता गृहिणी हैं।

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने इन सभी छात्राओं को सफलता के लिए शुभकामनाएं प्रदान की और बताया कि महाविद्यालय में संचालित कैरियर कॉउंसलिंग सेल और छात्राओं में कौशल विकास प्रशिक्षण कार्यक्रम निरन्तर जारी रहते हैं। कैरियर काउंसलिंग सेल सन् 2009 से लगातार चल रही है। इसका मुख्य उद्देश्य छात्राओं के सर्वांगीण विकास के साथ उन्हें विभिन्न विशेषज्ञों द्वारा कैरियर के प्रति रोजगार-परक प्रशिक्षण प्रदान करके उनकी दक्षता का विकास करना है। प्रतियोगी परीक्षाओं के लिए तैयार के लिए विशेषज्ञों के व्याख्यानों द्वारा समय-समय पर छात्राओं का मार्गदर्शन प्रदान किया जाता है। इससे उन्हें अपने कैरियर की राह चुनने और अपना भविष्य बनाने में सफलता मिल पाती है।

एनसीसी कैडेट्स ने 10 दिवसीय एटीपी कैंप में किया प्रतिभा-प्रदर्शन, गोल्ड व सिल्वर मैडल जीते

संस्थान के कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने एनसीसी को अदम्य साहस का प्रशिक्षण बताया तथा इसे देशभक्ति की भावनाओं को जगाने के साथ छात्राओं में व्यक्तित्व के निखार और उज्ज्वल भविष्य की नींव बताया। वे यहां एनसीसी की 3 राज गर्ल्स बटालियन की कैडेट्स के एटीसी कैंप से लौटने पर उनके द्वारा कैंप में प्राप्त सफलताओं पर बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान करते हुए लगन पूर्वक व मेहनत से एनसीसी की ट्रेनिंग करने को महत्त्वपूर्ण बताया। उन्होंने उनके श्रेष्ठ प्रशिक्षण और भावी जीवन के लिए आशीर्वाद प्रदान किया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने भी कैंप में छात्राओं के शानदार प्रदर्शन के लिए उनकी सराहना की। एनसीसी की एएनओ लेफ्टिनेंट डॉ. आयुषी शर्मा ने बताया कि संस्थान की 25 छात्राओं ने एनसीसी के इस एटीपी कैंप में भाग लिया। कमांडिंग ऑफिसर नवदीप सिंह बेदी के निर्देशन में कैंप में कुल 550 छात्राओं ने भाग लिया था। 18 से 27 जून (10 दिवसीय) एटीसी कैंप में कैडेट्स ने लीडरशिप, कम्यूनिकेशन स्किल आदि की जानकारी के साथ ही मैप रीडिंग, वेपन ट्रेनिंग, फायरिंग, आपदा प्रबंधन, हेल्थ एंड हाइजीन, ड्रिल, पीटी, स्पोर्ट्स, कल्चरल एक्टिवीटीज आदि का प्रशिक्षण प्रदान किया गया।

विभिन्न प्रतियोगिताओं में जीते गोल्ड व सिल्वर मैडल

डॉ. शर्मा ने बताया कि एलडीएपीएस विद्यावाड़ी में आयोजित इस कैंप में सभी 550 एनसीसी कैडेट्स को एल्फा, ब्रेवो, चार्ली और डेल्टा, इन चार कम्पनियों में विभाजित किया गया। इनमें से लाडनूं के जैविभा विश्वविद्यालय की हेमपुष्पा चौधरी चार्ली कम्पनी की कम्पनी सीनियर बनी। शिविर के दौरान आयोजित विभिन्न प्रतियोगिताओं में संस्थान की छात्राओं ने गोल्ड मैडल व सिल्वर मैडल हासिल किए। डिबेट कम्पीटिशन में अभिलाषा स्वामी ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। ड्रिल कम्पीटिशन में शामिल 10 कैडेट्स में चार्ली कम्पनी से भाग लेने वाली हेमपुष्पा चौधरी और चंचल शेखावत ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। टग ऑफ वॉर कंपीटिशन में अभिलाषा स्वामी की टीम ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। इसमें सुमन रैगर की टीम ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। सोलो डांस प्रतियोगिता में तमन्ना तंवर ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। ग्रुप डांस कम्पीटिशन में तमन्ना तंवर, चंचल शेखावत और भूमिका सेठी के ग्रुप ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। योग में स्पेशल परफोर्मेंस देने पर जैविभा विश्वविद्यालय की तमन्ना तंवर व रौनक सांखला को मैडल पहना कर सम्मानित किया गया। शिविर के अंतिम दिवस आयोजित रात्रिकालीन कार्यक्रम में अभिलाषा स्वामी व प्रकृति चौधरी ने काव्य प्रस्तुतियां दी।

टेक्सास विश्वविद्यालय ऑस्टिन के एशियाई अध्ययन विभाग के सहयोग से

राजस्थानी भाषा अकादमी द्वारा द्वितीय सप्तदिवसीय अन्तर्राष्ट्रीय समर स्कूल का आयोजन

संस्थान में आयोजित दूसरे राजस्थानी समर स्कूल कार्यक्रम में विभिन्न विषयों और प्रतिष्ठित विश्वविद्यालयों, यूटी ऑस्टिन, पाविया विश्वविद्यालय, ऑक्सफोर्ड विश्वविद्यालय, एमोरी विश्वविद्यालय, जेएनयू, यूसीएलए, ओपी जिंदल विश्वविद्यालय और अन्य के लगभग 40 छात्रों ने भाग लिया। समर स्कूल में गहन और संवादात्मक पठन कार्यशालाएं, फील्ड ट्रिप, अतिथि व्याख्यान और नृवंशविज्ञान अभ्यास शामिल थे। कार्यक्रम में भाषा की केंद्रीयता पर जोर दिया गया, जिससे विद्वानों को अपने शोध के लिए मूर्त और अमूर्त दोनों तरह के राजस्थानी अभिलेखागार तक पहुंचने में मदद मिली। कार्यशालाएँ 'धर्म' पर आधारित थीं और इसमें 8वीं से 19वीं शताब्दी के ग्रंथों को शामिल किया गया, जिसमें काव्य, युद्ध वृत्तांत, शहरी इतिहास और धार्मिक साहित्य शामिल थे। प्रमुख ग्रंथों में कुवलयमाला (8वीं शताब्दी), कुमारपाल चरित (12वीं शताब्दी), सतीनाम (16वीं शताब्दी), भ्रमविध्वंसवम् (19वीं शताब्दी), छत्रपति रासो (17वीं शताब्दी) और रघुनाथ रूपक (19वीं शताब्दी) शामिल थे।

समर स्कूल के दूसरे दिन का मुख्य आकर्षण समणी संगीतप्रज्ञा द्वारा कुवलयमाला पर आयोजित वाचन समूह था, जो जैन साधु उद्योतन सूरी द्वारा लिखित 8वीं शताब्दी का प्राकृत भाषा का उपन्यास है। समणी संगीतप्रज्ञा के ज्ञानवर्धक सत्र ने पाठ के ऐतिहासिक और धार्मिक महत्त्व की गहरी समझ प्रदान की, जिससे छात्रों को जैन पाठ और प्राकृत पढ़ने और भाषा के व्याकरण को समझने की जटिलताओं के बारे में जानने में मदद मिली। समर स्कूल के अन्य संकाय सदस्यों में प्रो. दलपत राजपुरोहित (यूटी ऑस्टिन), प्रो. दीप्ति खेड़ा (न्यूयॉर्क विश्वविद्यालय), प्रो. सौम्या अग्रवाल (ओपी जिंदल ग्लोबल यूनिवर्सिटी), मुकेश कुलरिया (लॉस एंजिल्स में कैलिफोर्निया विश्वविद्यालय), डॉ. नितिन गोयल (निदेशक, राजस्थान राज्य अभिलेखागार, बीकानेर), प्रो. गजादान चरण (जीएचएस गवर्नमेंट कॉलेज, सुजानगढ़), और प्रो. आयला जोनचीरे (आईआईटी जोधपुर) शामिल हैं। यह आयोजन एक जबरदस्त सफलता थी, जिसने प्रतिभागियों के बीच बहुमूल्य अंतर्दृष्टि प्रदान की और विद्वानों के आदान-प्रदान को बढ़ावा दिया।

सशक्त महिला नेतृत्व व शैक्षणिक उत्कृष्टता पर राष्ट्रीय कार्यशाला में जैविभा विश्वविद्यालय का प्रतिनिधित्व

विकसित भारत के लिए महिला नेताओं को सशक्त बनाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) द्वारा आयोजित 'महिला नेता : विकासशील भारत के लिए शैक्षणिक उत्कृष्टता को आकार देना' विषयक एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन नई दिल्ली में 13 दिसम्बर को किया गया। इस कार्यशाला में जैन विश्वभारती संस्थान की डॉ. प्रगति भटनागर ने भाग लिया। कार्यशाला का उद्घाटन केन्द्रीय शिक्षा मंत्री धर्मेन्द्र प्रधान ने किया। उन्होंने महिलाओं के नेतृत्व वाले विकास की ओर सरकार के कदमों पर प्रकाश डाला। यह कार्यशाला सन् 2047 तक विकसित भारत के दृष्टिकोण के अनुरूप शिक्षा जगत में महिला नेताओं को सशक्त बनाने पर केंद्रित रही तथा इसमें भारत में उच्च शिक्षा और नेतृत्व के भविष्य को आकार देने में महिलाओं की महत्त्वपूर्ण भूमिका पर जोर दिया गया। कार्यक्रम एनईपी 2020 के अनुरूप शिक्षा में महिलाओं को सशक्त बनाने पर जोर दिया गया।

केंद्रीय शिक्षा और पूर्वोत्तर क्षेत्र विकास राज्य मंत्री डॉ. सुकांत मजूमदार के साथ ही शिक्षा सचिव संजय कुमार, यूजीसी के अध्यक्ष प्रो. एम. जगदीश कुमार और डीआरडीओ की वैमानिकी प्रणाली महानिदेशक डॉ. राजलक्ष्मी मेनन सहित कई गणमान्य व्यक्ति कार्यक्रम में शामिल हुए।

राष्ट्रीय शिक्षा नीति को लेकर जागरूकता रैली निकाली

नई शिक्षा नीति के महत्त्व और उसके द्वारा भारतीय शिक्षा प्रणाली में आने वाले सुधारों के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) के निर्देशानुसार संस्थान में राष्ट्रीय शिक्षा नीति-2020 के संदर्भ में जागरुकता रैली का आयोजन किया गया। रैली को शिक्षा विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन और आचार्य कालू कन्या के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने हरी झंडी दिखा कर रवाना किया। इस अवसर पर प्रो. बीएल जैन ने इस नीति का उद्देश्य छात्रों के समग्र विकास को बढ़ावा देना और उन्हें आधुनिक युग की चुनौतियों के लिए तैयार करना बताया। प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने इस शिक्षा नीति को भारतीय संस्कृति और मूल्यों को ध्यान में रखते हुए वैश्विक मानकों के अनुसार शिक्षा प्रदान करने में सक्षम बताया तथा कहा कि इसके माध्यम से छात्रों को उनकी रुचियों और क्षमताओं के अनुसार शिक्षा प्राप्त करने के अधिक अवसर मिलेंगे। रैली का आयोजन एनईपी सारथी खुशी जोधा के मार्गदर्शन में किया गया। खुशी जोधा ने बताया कि इस नीति के माध्यम से छात्रों को उनके व्यक्तिगत विकास के लिए बेहतर अवसर मिलेंगे, जिससे वे समाज में सकारात्मक योगदान दे सकें। रैली में संस्थान के विभिन्न विभागों के छात्रों और शिक्षकों ने उत्साहपूर्वक भाग लिया। सभी छात्राओं ने एनईपी 2020 के समर्थन में नारे लगाए। इसमें नई शिक्षा नीति के अंतर्गत आने वाले बदलावों को दर्शाया गया। रैली के दौरान डॉ. आभा सिंह व अन्य संकाय सदस्य तथा विद्यार्थी उपस्थिति रहे।

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ

वैदिक परम्परा में निहित हैं जीव और प्राण की वैज्ञानिकता के सूत्र

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन

संस्थान के शोध एवं विकास प्रकोष्ठ द्वारा संस्थान प्राध्यापकों के अकादमिक उन्नयन हेतु आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के प्रथम व्याख्यान में जैनदर्शन, तुलनात्मक धर्म तथा दर्शन विभाग के एसोसिएट प्रोफेसर डॉ. रामदेव साहू ने 'प्राण, आत्मा एवं देवता : स्वरूप एवं समीक्षा' विषयक व्याख्यान में कहा है कि भारतीय ज्ञाननिधि के स्रोत के रूप में सर्वविदित वेद वाङ्मय में विज्ञान विषयक चेतना उन्नीसवीं शताब्दी में पं. मधुसूदन ओझा ने प्रारम्भ की थी। तब से वेद में विज्ञान का अनुसन्धान निरन्तर किया जाता रहा है। वेदों में वर्णित जीवविज्ञान के अन्तर्गत मानव के आन्तरिक तत्त्वों का गूढ प्रतिपादन आश्चर्यजनक है। इनकी अवधारणायें, जो परवर्तीकाल में भारतीय दर्शन में पल्लवित हुई, उनका वास्तविक आधार वेद में दर्शनीय है और आज सम्पूर्ण विश्व इस तथ्य से परिचित है।

वेद में है जीव के प्रादुर्भाव एवं विकास की वैज्ञानिक प्रतिपत्ति

उन्होंने कहा कि जीव की संरचना छः प्रकार के प्राणों के मिश्रण से होती है तथा जीव और प्राण के साथ वह पृथ्वी पर आता है। वह अपने अस्तिकाय को प्राप्त कर गर्भस्थ शिशु के रूप में आविर्भूत होता है। शुक्र शोणित उसके मात्र सहायक सामग्री का कार्य करते हैं। वस्तुतः जीव अपने अस्तिकाय को कर्म के आधार पर ढूंढ लेता है और उसमें प्रविष्ट हो जाता है। जीव के प्रवेश के बाद वह आत्मा को आकृष्ट करता है। आत्मा का भी जीव में प्रवेश नियत समयावधि में होता है तथा ज्योतिर्मय पिण्ड रूप देव रश्मियों से उसका पोषण होता है। अपने व्याख्यान में उन्होंने आत्मा के विभिन्न भेदों पर भी प्रकाश डाला। इस प्रकार वेद में जीव के प्रादुर्भाव एवं विकास के विषय में वैज्ञानिक विषय की प्रतिपत्ति उपलब्ध होती है। व्याख्यान के बाद सभी संकाय सदस्यों की ओर से व्यक्त विभिन्न जिज्ञासाओं का समाधान भी डॉ. साहू द्वारा किया गया। इस विषय पर प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी अपने विचार प्रस्तुत किये।

जीव की आयतनिक स्थिति और भव-भ्रमण पर जैनदृष्टि

शोध एवं विकास प्रकोष्ठ के निदेशक प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन ने कार्यक्रम का संयोजन किया तथा जैनदर्शन में वर्णित आत्म-तत्त्व पर प्रकाश डालते हुए वैदिक साहित्य में वर्णित आत्मा के स्वरूप से तुलना प्रस्तुत की। जीव की आयतनिक स्थिति और उसके भव-भ्रमण विषयक गत्यात्मक स्वरूप पर भी जैनदृष्टि से प्रकाश डाला। प्रारम्भ में उन्होंने इस मासिक व्याख्यानमाला की उपयोगिता बताते हुए कहा कि कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ के अकादमिक कार्यों के प्रति प्रोत्साहन से यह व्याख्यानमाला शुरू की गई है, जो प्रत्येक माह के द्वितीय शनिवार को आयोजित होगी। व्याख्यानों की यह श्रृंखला ज्ञान में अभिवृद्धि के साथ-साथ अकादमिक चर्चा का अवसर भी प्रदान करेगी।

कार्यक्रम के अन्त में प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के सहायक आचार्य डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में संस्थान के समस्त संकाय सदस्य उपस्थित थे।

जटिल संरचना वाले छोटे से अंग आंख का काम बहुत बड़ा- डॉ. बलवीर सिंह

विश्व दृष्टि दिवस पर कार्यक्रम आयोजित कर आंखों की देखभाल बताई

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्व दृष्टि दिवस के अवसर पर एक कार्यक्रम का आयोजन 10 अक्टूबर को किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि राजकीय नेत्र चिकित्सालय के नेत्र विशेषज्ञ डॉ. बलवीर सिंह थे तथा अध्यक्षता विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने की।

कार्यक्रम में डॉ. बलवीर सिंह ने आंखों के रखरखाव और नेत्र स्वास्थ्य पर पर्याप्त ध्यान देने की आवश्यकता बताई। उन्होंने कहा कि आंख शरीर की सबसे जटिल संरचना होती है। यह एक छोटा सा अंग होता है, लेकिन सबसे महत्त्वपूर्ण है और इसका काम बड़ा होता है। उन्होंने आंखों को हाथ से नहीं छूने की सलाह देते हुए आंख में कुछ भी गिरने, खुजली आने, आंसू आने के बावजूद उसे नहीं छूने और केवल पानी से धोने की जरूरत बताई। उन्होंने मोबाईल व अन्य गैजेट्स को देखने पर आंखों के नजदीक से देखने की मांसपेशियों के विकसित होने और दूर से देखने पर उसका गलत असर होने के बारे में बताते हुए कहा कि मोबाईल देखने का समय कम कर देना चाहिए तथा आंखों से कुछ दूरी बनाकर ही देखें। उन्होंने पलकों को झपकाने को बहुत जरूरी बताते हुए एकटक नहीं देखने की सलाह दी। उन्होंने बताया चश्मे की आवश्यकता होने पर बिना चश्मा के देखने पर आंखें पर अतिरिक्त जोर देना पड़ता है और इस प्रकार चश्मा नहीं लगाना नुकसानदायक हो सकता है।

इस अवसर पर छात्राओं ने आंखों, चश्मा, कॉन्टेक्ट लैंस आदि के सम्बंध में प्रश्न पूछ कर अपनी जिज्ञासाएं प्रकट की, जिनका समुचित समाधान डॉ. बलवीर सिंह ने किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में प्रो. बीएल जैन ने दृष्टि दिवस पर आंखों का महत्त्व बताया। कार्यक्रम में जगदीश यायावर, सोहनसिंह चारण एवं सभी छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन डॉ. अमिता जैन ने किया।

प्रथम विश्व ध्यान दिवस पर प्रेक्षाध्यान कार्यशाला आयोजित

योग और ध्यान अपनाने से व्यक्ति रोगग्रस्त नहीं होता- कुलपति प्रो. दूगड़

संस्थान के तत्वावधान में विश्व ध्यान दिवस 21 दिसम्बर पर दो कार्यक्रम आयोजित किए गए। यहां कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में हुए यूएनओ द्वारा घोषित प्रथम विश्व ध्यान दिवस के ऑफलाइन कार्यक्रम में 'प्रेक्षाध्यान कार्यशाला' का आयोजन किया गया। कुलपति प्रो. दूगड़ ने अपने अध्यक्षीय सम्बोधन में ध्यान की विशेषताएं और उपयोगिता बताई तथा कहा कि ध्यान से मनुष्य की श्वास-प्रश्वास की दर कम होती है और इससे आयु की वृद्धि होती है। व्यक्ति की विभिन्न शारीरिक तंत्र प्रणालियां, तंत्रिका तंत्र आदि और हारमोनल बैलेंस सही होता है, जिससे व्यक्ति स्वस्थ बनता है। उन्होंने बताया कि पहले योग और ध्यान को जीवन में हमेशा अपनाया जाता था, जिससे व्यक्ति रोगी नहीं होते थे, लेकिन अब उन्हें छोड़ने से मानव शरीर रोगग्रस्त होने लगा है।

ध्यान के शरीर के अवयवों पर प्रभाव बताए

कार्यक्रम के दौरान प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया गया व ध्यान का शरीर के विभिन्न अवयवों तथा मन व शरीर पर पड़ने वाले प्रभाव की जानकारी दी गई तथा सभी शारीरिक अंगों व मन के स्वास्थ्य के लिए उपयोगी ध्यान की विधियां बताई गई। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने कार्यक्रम में बताया कि सिर्फ 15 मिनट प्रतिदिन प्रेक्षाध्यान के अभ्यास से शरीर की कोशिकाओं में टेलोमीयर बढता है, जिससे आयु में वृद्धि होती है और मन पर प्रभाव पड़ता है, जिससे हृदयरोग, मधुमेह, मोटापा आदि बीमारियां दूर रहती हैं। कार्यक्रम में प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बीएल जैन व प्रो. रेखा तिवाड़ी मंचस्थ रहे। प्रेक्षाध्यान कार्यशाला के अंत में डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने धन्यवाद प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इस अवसर पर संस्थान के सभी शैक्षणिक व गैर शैक्षणिक सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने किया। संचालन में डॉ. हेमलता जोशी व दशरथ सिंह ने सहयोग प्रदान किया। अपराह्न को विश्व ध्यान दिवस का

ओनलाइन कार्यक्रम का आयोजन किया गया, जिसमें शामिल 70 प्रतिभागियों को डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने ध्यान का प्रायोगिक अभ्यास करवाया। ध्यान का परिचय व उसके फायदे डॉ. हेमलता जोशी ने प्रस्तुत किए तथा धन्यवाद ज्ञापन दशरथ सिंह ने किया।

अतिथि वक्ता का व्याख्यान आयोजित

शारीरिक अनुकूलताओं से मिल सकता है आध्यात्मिक सुकून- डॉ. सुरेखा गांधी

'उत्तम स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक अनुकूलता' पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में सोलापुर महाराष्ट्र से समागत अतिथि वक्ता डॉ. सुरेखा गांधी ने 'उत्तम स्वास्थ्य एवं आध्यात्मिक अनुकूलता' विषय पर 8 अक्टूबर को छात्राओं के हितार्थ प्रेरक व्याख्यान देते हुए कहा कि अध्यात्म और स्वास्थ्य परस्पर पूरक हैं। उत्तम स्वास्थ्य का आधार अध्यात्म है, स्वस्थ शरीर से ही अध्यात्म साधना संभव हो सकती है। इसीलिए भारत में 'पहला सुख नीरोगी काया' के रूप में कहावत बनी, जो वास्तविकता भी है। उन्होंने स्वास्थ्य के प्रति जागरूक रहने की नसीहत देते हुए स्वस्थ शरीर की अनेक अनुकूलताओं एवं आध्यात्मिक सुकून के अनेक पहलुओं पर भी प्रकाश डाला।

उनके वक्तव्य के पश्चात शंका-समाधान की श्रृंखला में छात्राओं ने डॉ. सुरेखा से अनुकूल स्वास्थ्य को लेकर अनेक जिज्ञासाएं प्रकट कीं, जिनका डॉ. सुरेखा गांधी ने समुचित समाधान प्रस्तुत किया। इस व्याख्यान कार्यक्रम की अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने की। कार्यक्रम के प्रारंभ में प्रो. त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य के दौरान छात्राओं के बीच डॉ. सुरेखा गांधी का परिचय भी प्रस्तुत किया और व्याख्यान के विषय के सम्बन्ध मे संक्षिप्त जानकारी दी। कार्यक्रम के अंत में हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

मानसिक स्वास्थ्य पर पांच दिवसीय कार्यशाला

काल्पनिक दुनिया में विचरण से युवाओं में बनी मानसिक असंतुलन की स्थिति

संस्थान के शिक्षा विभाग में 17 दिसम्बर से आयोजित पांच दिवसीय 'मानसिक स्वास्थ्य' विषयक कार्यशाला के तहत प्रथम दिवस विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल जैन ने अपने सम्बोधन में बताया कि टीवी, मोबाईल, सोशल मीडिया, एआई की काल्पनिक दुनिया के विचरण करने में युवाओं में मानसिक संतुलन खोने की स्थिति पैदा हो रही है। अपने अधिकांश समय में इन तकनीकी वर्चुअल दुनिया में व्यस्त रहने से युवा जीवन की वास्तविकताओं से दूर होते जाते हैं और उनकी स्थिति किसी सीरियल में दिखाए जाने वाली काल्पनिक दृश्य-श्रव्य सामग्री को वास्तविक मान बैठने जैसी हो जाती है। जबकि हकीकत से उनका कोई वास्ता नहीं होता। इन काल्पनिक सामग्रियों को देखने में अधिक समय व्यतीत करने से वे वास्तविक जीवन जीने वाले लोगों से बात नहीं कर पाते और व्यावहारिक तौर पर वे दूर होते चले जाते हैं। इससे रिश्तों में टूटन आ रही है। साथ ही मानसिक स्वास्थ्य को ग्लैमर की दुनिया ने भी प्रभावित किया है। युवा पीढ़ी ग्लैमर की दुनिया में जी रही है। महंगे मोबाइल, आंखों के महंगे चश्मे, ब्रांडेड या महंगे कपड़े, बड़ी स्क्रीन टीवी, टेबलेट आदि सामग्री की भरमार आर्थिक विपन्नता के बावजूद भी है। इन सब चीजों के लिए बैंकों से कर्ज लेकर कार्य कर रहे हैं। अपने आप को दुनिया का सुपरमैन मानकर ये लोग जीवन जी रहे हैं। जबकि, मानसिक रूप से स्वस्थ व्यक्ति जीवन की वास्तविकताओं के साथ जीवन जीता है और वह सामाजिक जुड़ाव, समायोजन प्रक्रिया, शैक्षिक विकास, नैतिक मूल्यों, सांस्कृतिक विस्तार, व्यावसायिक सामंजस्य स्थापित करके अपना विकास करता है। मानसिक शक्तियों, मानसिक क्षमताओं, अर्जित क्षमताओं को प्रकट करने का अवसर की तलाश और मानसिक रोगों से मुक्त होना मानसिक स्वास्थ्य है। कार्यशाला में मंच संचालन व आभार ज्ञापन डॉ. अमिता जैन ने किया। इस अवसर पर सभी संकाय सदस्य एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड. की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रही।

संवेगों पर नियंत्रण से संभव है सकारात्मक प्रबंधन

संस्थान के शिक्षा विभाग में चल रही 'मानसिक स्वास्थ्य' विषय पर पांच दिवसीय कार्यशाला के तृतीय दिवस पर 19 दिसम्बर को सहायक आचार्या डॉ. अमिता जैन ने 'संवेगों पर नियंत्रण' विषय पर व्याख्यान देते हुए कहा कि अपने संवेगों पर नियंत्रण करना जरूरी है। भावनाओं का नियंत्रण वह प्रक्रिया है जिसके द्वारा हम अपनी भावनाओं को समझते हैं, नियंत्रित करते हैं और उनका सकारात्मक रूप से प्रबंधन करते हैं। इसका उद्देश्य केवल भावनाओं को नियंत्रित करना ही नहीं, बल्कि यह भी सुनिश्चित करना है कि वे हमारी सोच, व्यवहार और जीवन की गुणवत्ता पर नकारात्मक प्रभाव न डालें। भावनाओं का नियंत्रण व्यक्तिगत समृद्धि, मानसिक स्वास्थ्य और रिश्तों में सुधार के लिए अत्यंत महत्त्वपूर्ण है। यह केवल एक कौशल नहीं, बल्कि यह हमारे मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए महत्त्वपूर्ण है। जब हम अपने संवेगों को समझते हैं और उन्हें नियंत्रित करने की कोशिश करते हैं, तो हम अपने जीवन को बेहतर तरीके से जी सकते हैं और अपने निर्णयों को अधिक समझदारी से ले सकते हैं। यह न केवल हमारे व्यक्तिगत विकास के लिए फायदेमंद है, बल्कि हमारे रिश्तों और सामाजिक जीवन में भी सुधार लाता है। भावनाएं स्वाभाविक होती हैं और हर व्यक्ति को कभी न कभी गुस्सा, चिंता, खुशी, डर या उदासी जैसी भावनाओं का अनुभव होता है। लेकिन, इन भावनाओं को सही तरीके से पहचानना और उन्हें नियंत्रित करना महत्त्वपूर्ण है। यदि हम अपनी भावनाओं को समझने और प्रबंधित करने में सक्षम होते हैं, तो यह हमारे मानसिक स्वास्थ्य और समग्र जीवन की गुणवत्ता को सुधार सकता है। अनेक उदाहरणों एवं प्रयोग द्वारा संवेग नियंत्रण को स्पष्ट किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि आज समय की बर्बादी मानसिक अस्वस्थता का कारण बनती जा रही है। अधिकांश लोग मोबाइल, सोशल मीडिया, इंटरनेट, टीवी आदि देखने में व्यतीत करते हैं, इसके साथ वे लोग गपशप लगाने, आलोचना करने, निंदा करने में अपने समय को व्यतीत करते हैं। जिनका परिणाम लाभकारी नहीं होता है। समय को सुनियोजित तरीके से व्यतीत नहीं करते हैं, वे लोग मानसिक रूप से भी अस्वस्थ रहते हैं। जिनका कोई भी कार्य समय पर नहीं होता है, हर कार्य में गलतियां करते हैं। जिनके कारण वे स्वयं परेशान होते हैं और दूसरों के द्वारा भी उन्हें सुनने को मिलता है। इसलिए समय का उपयोग मानसिक स्वास्थ्य में सर्वाधिक लाभकारी है। हड़बड़ाहट, जल्दीबाजी, भाग दौड़ की जिंदगी व्यक्ति के स्वास्थ्य पर प्रभाव डालती है, इसलिए हर कार्य शांति और संयोजित तरीके से करना चाहिए। समय को जीवनोपयोगी कार्यों में व्यतीत करने वाले व्यक्ति सदैव मानसिक रूप से प्रसन्नचित्त और प्रफुल्लित रहते हैं। कार्यक्रम में बी. एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाओं के साथ डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता पारीक, स्नेहा शर्मा आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. गिरीराज भोजक ने किया।

सच्चाई, ईमानदारी, चरित्र आदि से सम्बन्ध मजबूत बनते हैं

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'मानसिक स्वास्थ्य' विषय पर आयोजित की जा रही पांच दिवसीय कार्यशाला के अंतर्गत 20 दिसम्बर को 'संबंध क्षमता' पर डॉ. मनीष भटनागर ने व्याख्यान प्रस्तुत करते हुए बताया कि विभिन्न संबंधों को मजबूत बनाने के लिए भरोसा आवश्यक होता है और व्यक्ति का व्यवहार विभिन्न संबंधों को प्रभावित करता है। विभिन्न उदाहरण देते हुए उन्होंने संबंधों को स्थाई बनाने के लिए किए जाने वाले प्रयासों के बारे में भी विस्तार से बताया। उन्होंने कहा कि अच्छाई वापसी का रास्ता ढूंढ लेती है, हमें अपने संबंधों में परस्पर विश्वसनीयता और स्थिरता लाना आवश्यक होता है। हम दूसरों का सम्मान करते हुए कथनी-करनी में समानता रखते हुए अपने संबंधों को मजबूत बना सकते हैं। प्रत्येक संबंध में ईमानदारी आवश्यक होती है और साथ ही अपने साथी कर्मियों के साथ स्वीकारना सीखना जरूरी होता है, तभी विभिन्न संबंधों को निभाना सरल होता है। व्यक्ति का चरित्र भी इसके लिए महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाता है, जिसके अभाव में रिश्तों में अलगाव होता है और मानसिक तनाव उत्पन्न होता है। किसी के भी साथ अहंकार पूर्ण या स्वार्थपन के परिणाम स्वरूप संबंध खराब होते हैं और शक, क्रोध एवं लालच से विभिन्न संबंध बिखर जाते हैं। हमें अपना नजरिया स्वस्थ रखना चाहिए और धोखाधड़ी से बचना चाहिए। रिश्तों में सच्चाई का होना आवश्यक है। साथियों से हमेशा उदारता और तमीज से बात करनी चाहिए। सुख सुविधा के साथी बदलते रहते हैं, इसलिए ऐसे व्यक्तियों को पहचानना जरूरी है, जो स्वार्थ के कारण विभिन्न संबंधों को निभाएं रखते हैं। उनसे दूरी बनाकर ही हम मानसिक तनाव से बचे रह सकते हैं। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रो. बीएल जैन ने शिक्षक व विद्यार्थी के मध्य संबंधों पर बात करते हुए विद्यार्थियों के लिए ध्यान रखने वाली बातों और समाज में किए जाने वाले व्यवहार पर चर्चा की। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. गिरिराज भोजक ने अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन डॉ. विष्णु कुमार डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, ममता पारीक, खुशाल जांगिड़, स्नेहा जांगिड़ आदि एवं समस्त विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शांतिपूर्ण समाज के लिए एक दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर आयोजित

सुजानगढ के सोना देवी सेठिया महाविद्यालय में अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन

संस्थान का अहिंसा एवं शांति विभाग जहां संस्थान में अध्ययनरत विद्यार्थियों को अहिंसा का प्रशिक्षण प्रदान करते हुए उन्हें अहिंसक बना कर शांति के वातावरण के लिए तैयार कर रहा है, वहीं अन्य शिक्षण संस्थानों में भी ऐसे ही प्रयास किए जा रहे हैं। इसी के तहत विभाग द्वारा निकटवर्ती सुजानगढ के सोना देवी सेठिया स्नातकोत्तर महिला महाविद्यालय में 23 अगस्त को एक दिवसीय युवा अहिंसा प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने प्रारम्भ में विषय-परिचय प्रस्तुत करते हुए बताया कि वर्तमान में वैश्विक स्तर पर आतंकवाद का प्रशिक्षण दिया जा रहा है और कुछ राष्ट्र आतंकवाद के बल पर वैश्विक अशांति फैला रहे हैं। यदि इसके स्थान पर लोगों को अहिंसा का प्रशिक्षण दिया जाए, तो विश्व में शांति का माहौल बनाना संभव होगा। शांति की चाह प्रत्येक व्यक्ति में होती है, पर इसके लिए आंतरिक शांति और बाह्य शांति दोनों जरूरी है। जब तक आंतरिक रूप से व्यक्ति शांत नहीं होता, तब तक बाह्य शांति की कल्पना नहीं की जा सकती। विभाग के सहायक आचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने अहिंसा प्रशिक्षण के चार आयामों की चर्चा करते हुए कहा कि हृदय परिवर्तन, दृष्टिकोण परिवर्तन, व्यवस्था परिवर्तन तथा जीवन शैली परिवर्तन के आयामों को व्यक्ति जीवन में उतार ले, तो काफी हद तक हिंसा की प्रवृत्तियों से बचा जा सकता है। उन्होंने इतिहास के उदाहरण दिए व हिंसा के परित्याग के बारे में बताते हुए सम्राट अशोक महान के हृदय-परिवर्तन के लिए कलिंग के युद्ध को उत्तरदायी मानते हुए दृष्टिकोण बदलने से हिंसा के बजाय स्वतः ही अहिंसक बनने के बारे में बताया। उन्होंने वर्तमान वैश्विक समस्याओं के पीछे आपसी वैमनस्य एवं प्रतिस्पर्धा को मुख्य कारण बताया और राष्ट्रों के लिए हिंसा की प्रवृत्ति को छोड़कर अहिंसा की नीतियां अपनाने को जरूरी माना तथा कहा कि इससे अधिकांश अंतरराष्ट्रीय समस्याओं का निराकरण शांतिपूर्ण ढंग से हो सकता है।

यूएनओ ने भी माना अहिंसा, शांति व पारस्परिक सद्भाव को विवादों के हल का माध्यम

अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने शिविर के दौरान बताया कि संयुक्त राष्ट्र संघ जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों द्वारा भी अहिंसा, शांति एवं पारस्परिक सद्भाव की नीति को राष्ट्रों के विवादों को हल करने में महत्त्वपूर्ण आयाम मान रहा है। संयुक्त राष्ट्र संघ के माध्यम से विश्वशांति दिवस, अंतर्राष्ट्रीय अहिंसा दिवस जैसे आयोजन भी अहिंसा की नीति पर ही आधारित है। उन्होंने जैन विश्वभारती संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा शांति स्थापना की दिशा में विद्यार्थियों को दी जा रही अहिंसा एवं शांति की शिक्षा के बारे में जानकारी दी और बताया कि संस्थान इस माध्यम से युवाओं के चिंतन व दर्शन के साथ मानवीय मूल्यों को विकसित करने का प्रयास कर रहा है।

विभाग की छात्रा माया कवंर ने भी अहिंसा प्रशिक्षण विषय पर अपने विचार प्रस्तुत किए और कहा कि वर्तमान में बढ़ती हिंसक घटनाओं के निराकरण में अहिंसा प्रशिक्षण एक महत्त्वपूर्ण उपाय बन सकता है। अंत में महाविद्यालय प्राचार्या डॉ. साधना सिंह ने आभार ज्ञापित किया और बताया कि इस प्रकार के शिविरों के आयोजन की वर्तमान में आवश्यकता है। इनसे युवाओं के दृष्टिकोण में बदलाव लाया जा सकता है। जैन विश्व भारती संस्थान इस दिशा में अग्रणी भूमिका निर्वहन कर रहा है। कार्यक्रम में महाविद्यालय के सभी संकाय सदस्य एवं विद्यार्थियों के साथ अहिंसा एवं शांति विभाग के विद्यार्थियों सहित 74 प्रतिभागी उपस्थित रहे।

'क्रोध नियंत्रण एवं संयमित आचरण' के लिए विद्यार्थियों को किया प्रेरित अहिंसा एवं शांति विभाग का नव समाज रचना हेतु विशेष कार्यक्रम

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा नव समाज रचना और समाज में शांति और अहिंसा की स्थापना के लिए वातावरण तैयार करने की दिशा में चलाए जा रहे अभियान के तहत की जा रही विभिन्न गतिविधियों में 26 सितम्बर को लाडनूं तहसील के ग्राम भियाणी स्थित राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालय में 'क्रोध नियंत्रण एवं संयमित आचरण' के सम्बंध में बच्चों को प्रेरित करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने जीवन में अहिंसक बनने, नैतिकता का पालन करने एवं कर्तव्यनिष्ठ बनने के लिए विद्यार्थियों को प्रेरित किया। इस अवसर पर उन्होंने बच्चों से अनेक सवाल भी किए। उनके द्वारा भावी जीवन के सपने के बारे में पूछे जाने पर बच्चों ने अपने कॅरियर के रूप में पुलिस, सेना या चिकित्सा सेवा में जाने और प्रशासनिक अधिकारी बनने की भावनाएं और स्वप्न बताए। डॉ. बलबीर सिंह ने उनके स्वप्न और भावी जीवन की सफलता के सम्बंध में अनेक जीवनसूत्र भी बताए। कार्यक्रम में स्कूली बच्चों ने काफी उत्साह और अपनी जिज्ञासा प्रवृत्ति का प्रदर्शन किया। इस अवसर पर विद्यार्थियों के अलावा विद्यालय के प्रधानाचार्य एवं स्टाफ सदस्य भी उपस्थित रहे।

सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता, धैर्य एवं निरन्तर प्रयास जरूरी– कुलपति

शिक्षा विभाग में मनाया गया सात दिवसीय दीक्षा आरंभ सप्ताह

संस्थान के शिक्षा विभाग में नव-सत्र में प्रवेशित नवागंतुक छात्राओं के लिए आयोजित एक सप्ताह (2-7 सितम्बर) के दीक्षारंभ कार्यक्रम में नव-प्रवेशित छात्राओं को कॉलेज के नियम, पाठ्यक्रम व अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों से संबंधित जानकारियां दी गई। कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में शिक्षा विभाग के विभाग अध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने छात्राओं को सभी शिक्षकों से परिचित करवाया। डॉ. आभा सिंह ने छात्रों को आपस में परिचय करवाया। कार्यक्रम के दूसरे दिन में डॉ. प्रद्युमन सिंह शेखावत ने छात्राओं को योग करवाया व योग संबंधित जानकारियां दी। यह शारीरिक स्वास्थ्य, मानसिक शांति और आत्मिक उन्नति के लिए महत्त्वपूर्ण है।

सामायिक दिवस मनाया

द्वितीय सत्र में सामायिक दिवस मनाया गया, जिसमें मुख्य वक्ता मुनिश्री जयकुमारजी ने कहा कि स्वयं की आत्मा का अध्ययन करना ही सामायिक है। सामायिक का अर्थ है सम की रक्षा। हर धर्म की अपनी अपनी उपासना पद्धति होती है, उपासना पद्धति को हमें आत्मा से जोड़ना चाहिए, ना कि धर्म से। मुनिश्री ने छात्राओ को बताया कि जीविका से ज्यादा जरूरी जीवनदर्शन है। अतः जीविका के साथ जीवनदर्शन का समन्वय कर के चलना चाहिए। तृतीय सत्र में छात्राओं को संस्थान के केंद्रीय पुस्तकालय का भ्रमण करवाया गया एवं उन्हें पुस्तकालय से संबंधित जानकारियां दी गई। तृतीय दिवस के प्रथम सत्र में प्रार्थना एवं ध्यान का अभ्यास करवाया गया।

साईबर सिक्योरिटी समझाई

द्वितीय सत्र में डॉ. विष्णु कुमार ने छात्राओं को छात्रवृत्ति के बारे में जानकारी दी। छात्र खुशी जोधा ने पीपीटी के माध्यम से संस्थान की सुविधाओं का प्रस्तुतिकरण किया। तृतीय सत्र में डॉ. आभा सिंह ने छात्राओं को साइबर सिक्योरिटी के बारे में जानकारी दी। साइबर खतरों की पहचान, नेटवर्क सुरक्षा उपाय और साइबर सुरक्षा नियमों पर भी ध्यान केंद्रित किया गया। चतुर्थ सत्र में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं को रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की राह दिखाई। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को अहंकार से दूर रहना चाहिए। छात्राओं को सफलता पाने के लिए पुरुषार्थ का पालन करना जरूरी है।

दीक्षारंभ सप्ताह का विविध कार्यक्रमों के साथ समापन

नवागंतुक छात्राओं के एक सप्ताह के दीक्षारंभ कार्यक्रम में नव प्रवेशित छात्राओं को कॉलेज के नियम, पाठ्यक्रम व अन्य महत्त्वपूर्ण तथ्यों से संबंधित जानकारियां दी गई। इन सात दिनों में विविध गतिविधियों का संचालन किया गया। इन कार्यक्रमों के दौरान मुख्य अतिथि के रूप में कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने छात्राओं को बताया कि धैर्य एवं निरंतर प्रयास से सफलता प्राप्त हो सकती है और सफलता का कोई शॉर्टकट नहीं होता है। उन्होंने छात्राओं को सोच में स्वतन्त्रता लाने की आवश्यकता बताई तथा स्वतन्त्रता एवं स्वच्छंदता के मध्य अंतर को समझते हुए अपनी सोच में परिवर्तन लाने की प्रेरणा दी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी रहे।

सिखाए सहिष्णुता, मैत्री व सेवाभाव

दीक्षारम्भ कार्यक्रम के तहत छात्राओं द्वारा शिक्षक दिवस का आयोजन किया गया। नवागंतुक छात्राओं ने इसमें महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। नवागंतुक छात्राओं ने सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी दी और कार्यक्रम का संचालन भी किया। इंडक्शन प्रोग्राम के तहत छात्राओं को प्रार्थना, योग एवं ज्ञान का अभ्यास प्रतिदिन नियमित रूप से करवाये जाने के साथ ही प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेंद्र जैन ने व्याख्यान द्वारा छात्राओं को सहिष्णुता, मैत्री, सेवा एवं मानवीय मूल्यों के बारे में बताया। इस दौरान आयोजित गणेश चतुर्थी पर्व पर छात्राओं द्वारा विभिन्न सांस्कृतिक प्रस्तुतियां दी गई एवं भजन व पूजापाठ किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने छात्राओं को गणेशजी से मिलने वाली प्रेरणा को अपनाकर जीवन बनाने की प्रेरणा दी।

मंत्र और उपासना का महत्त्व समझाया

दीक्षारम्भ कार्यक्रम के तहत मुनिश्री कौशल कुमार के सान्निध्य में आयोजित मुनिश्री रणवीर कुमार के व्याख्यान में मंत्र-जाप और विश्वास से सिद्धि-प्राप्ति के बारे में बताया और मंत्रों के महत्त्व को समझाया। मुनिश्री कौशल कुमार ने गीत के माध्यम से नमस्कार महामंत्र के वैशिष्ट्य को प्रस्तुत किया। दूरस्थ शिक्षा के निदेशक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी व प्रो. बनवारी लाल जैन ने भी विचार व्यक्त किए। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने छात्राओं को रुचि के अनुसार व्यवसाय चुनने की राह दिखाई। कार्यक्रम के दौरान आयोजित सामायिक दिवस में मुख्य वक्ता मुनि जयकुमार ने स्वयं की आत्मा का अध्ययन करना सामायिक बताते हुए हर उपासना पद्धति को आत्मा से जोड़ने की जरूरत बताई।

छात्राओं की एबीसी आईडी बनवाई

इस अवसर पर छात्राओं की एबीसी आईडी एवं मेल आईडी बनवाई गई। डॉ. विष्णु कुमार ने छात्राओं को छात्रवृत्ति के बारे में जानकारी दी। डॉ. आभा सिंह ने छात्राओं को साइबर सिक्योरिटी के बारे में जानकारी देते हुए साइबर खतरों की पहचान, नेटवर्क सुरक्षा उपाय और साइबर सुरक्षा नियमों से अवगत करवाया। एग्जामिनेशन कंट्रोलर डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने छात्राओं को परीक्षा नियमों की जानकारी दी। इस दौरान छात्राओं को संस्थान के केंद्रीय पुस्तकालय का भ्रमण करवाया गया एवं पुस्तकालय से संबंधित जानकारियां दी गई। छात्रा खुशी जोधा ने पीपीटी के माध्यम से संस्थान की सुविधाओं का प्रस्तुतिकरण किया। इससे पूर्व विभागाध्यक्ष प्रो. जैन ने छात्राओं का परिचय उनके सभी शिक्षकों से करवाया। डॉ. आभा सिंह ने छात्राओं का आपस में परिचय करवाया।

दर्शन से जीवन को श्रेष्ठ, संयमित और शुचितापूर्ण बनाया जा सकता है– प्रो. व्यास

विश्व दार्शनिक दिवस पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग के तत्त्वावधान में 'विश्व दार्शनिक दिवस' पर 20 नवम्बर को आयोजित कार्यक्रम में मुख्य वक्ता राजस्थानी भाषा एवं साहित्य शोध केंद्र के निदेशक प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास ने अपने व्याख्यान में दर्शन के अर्थ को अलग-अलग रूपों में स्पष्ट करते हुए कहा कि दर्शन एक बहुपक्षीय प्रक्रिया है, जिसका मानव जीवन के विविध पक्षों से सम्बंध है। 'दर्शन' अपने आत्मचक्षु से किसी वस्तु एवं स्थिति को देखना है और दर्शन सीखने की प्रक्रिया है, जिसमें ज्ञान प्राप्त किया जाता है। उस ज्ञान के माध्यम से साधना एवं क्रिया की जाती है। दर्शन हमें सत्कर्म की ओर अग्रसर करने में महत्त्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है।

प्रो. व्यास ने प्राचीन दर्शन से शुरुआत करते हुए पाश्चात्य दर्शन एवं भारतीय दर्शन दोनों की विलक्षणताओं को स्पष्ट किया। उन्होंने गीता दर्शन का उदाहरण देते हुए बताया कि इसमें तीन योग माने गए हैं, जिन्हें हम ज्ञान योग, भक्ति योग तथा कर्म योग के नाम से जानते हैं। उन्होंने यह भी बताया कि दर्शन जीवन को श्रेष्ठ बनाने, संयमित बनाने एवं उसमें शुचिता लाने का एक महत्त्वपूर्ण आधार है। कार्यक्रम के प्रारंभ में विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने स्वागत वक्तव्य एवं अतिथि परिचय प्रस्तुत किया। अंत में सहायक आचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन करते हुए सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने विश्व दार्शनिक दिवस के ऐतिहासिक स्वरूप पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर सहायक आचार्य डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, ईर्या जैन आदि संकाय सदस्यों के साथ विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

वास्तुदोष के प्रभाव एवं निराकरण के वैज्ञानिक उपाय पर व्याख्यान आयोजित

दीक्षारम्भ समारोह में करवाया विद्यार्थियों को योगाभ्यास

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग तथा अहिंसा एवं शांति विभाग के संयुक्त तत्त्वावधान में 02-07 सितम्बर को आयोजित दीक्षारम्भ कार्यक्रम में हुई विभिन्न गतिविधियों में योगाभ्यास, वास्तु शास्त्र के प्रभाव, परस्पर परिचय, कौशल प्रस्तुतीकरण आदि का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के प्रथम चरण में योगाभ्यास करवाया गया। कार्यक्रम में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत के मार्गदर्शन में विद्यार्थियों को योग के विभिन्न आसन करवाए गए। दूसरे चरण में व्याख्यान कार्यक्रम हुआ, जिसमें जैन एवं तुलनात्मक धर्म दर्शन विभाग के संकाय सदस्य डॉ. रामदेव साहू ने वास्तु दोष का मानव जीवन पर प्रभाव एवं उसके निराकरण के वैज्ञानिक उपाय विषय पर अपने व्याख्यान में वास्तु शास्त्र को एक वैज्ञानिक ढंग से प्रस्तुत करने का प्रयास किया। इस चरण का संचालन अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने किया।

शिविर के तृतीय चरण में विद्यार्थियों का आपस में परिचय करवाया गया, जिसके अंतर्गत नवागंतुकों ने अपने लक्ष्य और उसकी प्राप्ति के प्रयासों पर विचार व्यक्त किये। चतुर्थ चरण में दोनों विभागों के नवागंतुक विद्यार्थियों ने अपनी अपनी रुचि एवं कौशल के बारे में व्यक्तिगत परिचय गीत, कविता एवं भाषण के माध्यम से प्रस्तुत किया। इस सत्र का संचालन अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने किया।

इन सभी सत्रों में दोनों विभागों के संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे प्रतिभागियों की संख्या 75 के करीब रही।

सात दिवसीय पयुर्षण महापर्व

लक्ष्य की साधना में महत्त्वपूर्ण होते हैं दिशाबोध और प्रज्ञा जागरण- मुनिश्री जयकुमार

पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम के तहत ध्यान दिवस मनाया

संस्थान के आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम में पयुर्षण पर्वाराधना कार्यक्रम के तहत 7वें दिन 7 सितम्बर को 'ध्यान दिवस' मनाया गया। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ की अध्यक्षता में आयोजित इस कार्यक्रम में योगी-तपस्वी मुनिश्री जयकुमार ने पर्युषण पर्व और ध्यान के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए विद्यार्थी जीवन में उसका महत्त्व बताया। उन्होंने कहा कि विद्यार्थी जीवन में एक दिशा की आवश्यकता होती है। दिशा का निर्देशन देने में शिक्षकों व ध्यान की भूमिका होती है। यदि दिशा का सही ज्ञान नहीं होता है, तो प्राप्त किया गया सारा ज्ञान मस्तिष्क पर बोझ बन जाता है। स्वयं की प्रज्ञा के जागृत होने पर ही शास्त्रों की उपयोगिता होती है। इसमें गुरू दिशा-निर्देशक होते हैं। वे हर विद्यार्थी के लिए उपयोगी दिशा बताते हैं आरै उनकी प्रज्ञा का जागरण करते हैं। विद्यार्थी जीवन में मिलने वाले दिशाबोध से ही जीवन के लक्ष्य तक पहुंचा जा सकता है।

ध्यान है एकाग्रता और जागरूकता

उन्होंने कहा कि हमें अपने भीतर झांकना-देखना चाहिए और भीतर में जाने का सेतु केवल ध्यान है। भीतर जाने पर अपनी क्षमताओं का प्रकटीकरण किया जा सकता है। मुनिश्री जयकुमार ने मन को चंचल बताते हुए कहा कि वायु की भांति मन की तीव्र गति होने से अस्थिरता बनी रहती है। मन को अभ्यास और वैराग से स्थिर किया जा सकता है, चंचलता को रोका जा सकता है। उन्होंने कहा कि मन चित के अधीन काम करता है। मन के तीन काम हैं- स्मृति, कल्पना और चिंतन। इन तीनों की अधिकता से तनाव उत्पन्न होता है। तनाव से मुक्ति के लिए भीतर की यात्रा जरूरी है। भीतर देखने की प्रक्रिया ही ध्यान है। ध्यान का शब्दिक अर्थ एकाग्रता और जागरूकता होती है। बिना एकाग्रता के लक्ष्य को प्राप्त नहीं किया जा सकता। जागरूकता, एकाग्रता, सजगता हर व्यक्ति के लिए आवश्यक है। अन्यमनस्कता के साथ काम सफल नहीं हो सकता। इसके लिए ध्यान जरूरी है। व्यक्तित्व विकास के लिए भी एकाग्रता जरूरी है।

ध्यान से होते हैं शरीर, मन और भाव स्वस्थ

मुनिश्री जयकुमार ने कहा कि ध्यान जीवन में, व्यवहार में सफलता प्राप्त करने का बहुत बड़ा माध्यम है। हर काम में ध्यान रखा जाना आवश्यक है। बिना एकाग्रता के व्यक्तित्व विकास नहीं हो सकता। हमें अपने मन को प्रशिक्षण देना होगा और यह प्रशिक्षण ध्यान से होता है। उन्होंने बताया कि मन को मंत्र के माध्यम से नियंत्रित और केन्द्रित किया जा सकता है। कार्य की, विचारों की शक्ति बहुत है, पर मन का केन्द्रीकृत होना जरूरी है। उन्होंने प्रगति के लिए तीन साधन बताए- शरीर, मन और वाणी। मन, शरीर और भाव स्वस्थ होने से व्यक्ति की कार्यक्षमता बढती है। ध्यान में रोगोपचार की शक्ति बताते हुए उन्होंने कहा कि ध्यान से शरीर, मन और भावों को स्वस्थ किया जा सकता है।

ध्यान बहुत महत्त्वपूर्ण विषय है

अध्यक्षता करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने ध्यान को महत्त्वपूर्ण विषय बताते हुए मुनिश्री जयकुमार के प्रभावी व्याख्यान की सराहना की और उनके तप और इंद्रिय-विजय के बारे में जानकारी देते हुए उनके भोजन, निद्रा आदि पर नियंत्रण के बारे में बताया और उनकी तपस्याओं के बारे में जानकारी दी और उनके मार्गदर्शन के लिए कृतज्ञता ज्ञापित की। प्रारम्भ में कार्यक्रम संयोजक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य के साथ विषय प्रवर्तन किया। कार्यक्रम का शुभारम्भ ईर्या जैन के मंगलाचरण से किया गया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बीएल

जैन ने किया। इस अवसर पर कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक, प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, आरके जैन, दीपाराम खोजा, डॉ. रामदेव साहू, डॉ. लिपि जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. बलबीर सिंह चारण, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज, अभिषेक चारण, अमीलाल चाहर, शरद जैन, रमेशदान चारण, डॉ. अमिता जैन, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विनोद कस्वा, जगदीश यायावर, प्रगति चौरड़िया, डॉ. आयुषी शर्मा, डॉ. मनीषा जैन, देशना चारण, मनीषा चौहान आदि उपस्थित रहे।

दुःख का कारण खोजने के लिए सामयिक जरूरी- मुनिश्री जयकुमार

संस्थान के शिक्षा विभाग में मनाए जा रहे सात दिवसीय पर्युषण पर्व के तृतीय दिवस 3 सितम्बर को 'सामायिक दिवस' मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता मुनिश्री जयकुमार ने कहा कि स्वयं की आत्मा का अध्ययन करना ही सामायिक है। सामायिक का अर्थ है— समता की रक्षा। हर धर्म की अपनी-अपनी उपासना पद्धति होती है, उपासना पद्धति को हमें आत्मा से जोड़ना चाहिए, ना कि धर्म से। हमें दुःख निवारण के लिए दुःख का कारण खोजना होगा और दुःख का कारण खोजने के लिए सामायिक जरूरी है। जीवन में दुःख-सुख, लाभ-हानि, मान-अपमान आदि आते रहते हैं, लेकिन व्यक्ति को हर परिस्थिति में समान भाव से रहना चाहिए। सामायिक करने से हमारे कई वर्षों के पाप भी साफ हो सकते हैं।

संसाधनों से सुविधा मिलती है, सुख नहीं

उन्होंने जीविका से ज्यादा जरूरी जीवन दर्शन बताते हुए विद्यार्थियों को जीविका के साथ जीवन दर्शन करने की भी राह दिखाई। मुनिश्री जयकुमार ने कहा कि संसाधनों से हमें सुविधा जरूर मिल सकती है, किंतु सुख नहीं मिल सकता। सुख की प्राप्ति के लिए हमें हमारी इंद्रियों को काबू में करना होगा। विद्यार्थियों को अपने लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए सामायिक का अनुसरण करना चाहिए। जब मस्तिष्क शांत व तनाव मुक्त होगा, तभी समता का भाव आ सकेगा। मुनिश्री ने विद्यार्थियों को पुण्य श्रावक की कथा सुनाते हुए कर्म निर्जरा से अवगत कराया। उन्होंने कर्मों में गति को आवश्यक बताया और व्यक्ति को अच्छी चीज ग्रहण करने के लिए प्रेरित किया। कार्यक्रम के प्रारम्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने मुनिश्री जयकुमार का स्वागत किया व विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने किया। अंत में डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य व विद्यार्थी उपस्थित रहे।

मंत्र जप से होता है चेतना का केन्द्रीकरण- मुनिश्री रणजीत कुमार

संस्थान के शिक्षा विभाग में पर्युषण पर्व के छठवें दिवस 6 सितम्बर को 'जप दिवस' के रूप में मनाया गया। मुनिश्री कौशल कुमार के सान्निध्य में आयोजित 'जप दिवस' कार्यक्रम में मुख्य वक्ता मुनिश्री रणजीत कुमार थे। कार्यक्रम में मुनि श्री रणजीत कुमार ने मंत्र जप और उस पर विश्वास से सिद्धि की प्राप्ति के बारे में प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि हमारे भीतर दो प्रकार की शक्तियां हैं- आध्यात्मिक शक्ति और भौतिक शक्ति। आत्मा की शांति के लिए हमें परमात्मा की साधना करनी चाहिए। साधना में जप का अपना महत्त्व होता है। जप का अर्थ है— मंत्र की पुनरावृत्ति। कोई भी व्यक्ति अगर ध्वनि करता है, तो उसकी प्रतिध्वनि हम सुन सकते हैं। जब तक मंत्र के प्रति हममें आस्था व विश्वास नहीं होगा, तब तक हम सिद्धि की प्राप्ति नहीं कर सकते। मंत्र जप में वाचिक, मानसिक और मानस जप प्रधान है। उन्होंने जाप को अंतर्मन से करने पर जोर दिया और कहा कि इसका प्रदर्शन करना ठीक नहीं है।

मंत्र साधना व सिद्धि प्राप्ति के अनेक प्रयोग बताए

मुनिश्री रणजीत कुमार ने बताया कि संसार में अनेक प्रकार के मंत्र होते हैं। हर धर्म में मंत्र का अपना मूल्य है। 'नमस्कार मंत्र' जैन धर्म का सबसे प्रभावशाली मंत्र है। उन्होंने 'नमस्कार मंत्र' को केवल जैन धर्म का ही नहीं, बल्कि जन-जन के धर्म का मंत्र बताया और कहा कि महामंत्र के साथ बीजाक्षर का प्रयोग होना चाहिए। मंत्र से चेतना का केन्द्रीकरण होता है। उन्होंने मंत्र की सिद्धि के लिए समय और स्थान की महत्ता को परिलक्षित करते हुए मंत्र को साधने के अनेक प्रयोग और मंत्र की संयोजना से सभी को रूबरू करवाया।

इस अवसर पर मुनिश्री कौशल कुमार ने गीतिका के माध्यम से नमस्कार महामंत्र के वैशिष्ट्य को प्रस्तुत किया। आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में मुनिद्वय का स्वागत किया व विषय-प्रवर्तन किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बनवारी लाल जैन ने किया। डॉ. अमिता जैन ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में समस्त विद्यार्थी व संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

क्षमा के आदान-प्रदान से बन सकता है कार्य-व्यवहार और जीवन शुद्ध- कुलपति प्रो. दूगड़

अनोखा विश्वविद्यालय, जहां कुलपति अपने विद्यार्थियों और पूरे स्टाफ से सार्वजनिक क्षमा मांगते हैं और चलता है क्षमा का आदान-प्रदान

संस्थान ऐसा पहला विश्वविद्यालय है, जब यहां का कुलपति अपने समस्त कर्मचारियों, शिक्षकों, विद्यार्थियों आदि से सार्वजनिक रूप से क्षमायाचना करता हैं। केवल कुलपति ही नहीं यहां के सभी प्रोफेसर्स, व्याख्याता आदि और सभी स्टाफ के लोग भी परस्पर क्षमायाचना करते हैं। विद्यार्थीगण भी सभी से क्षमायाचना करते हैं। यह विशेष कार्यक्रम 09 सितम्बर को यहां देखने को मिला, जब खमत-खामणा दिवस मनाया गया। यह अवसर साल में एक बार आता है, जिसमें बीते पूरे एक साल के दौरान किसी भी तरह से जाने-अनजाने हुई गलतियों, एक-दूसरे को पहुंची पीड़ाओं आदि के लिए सब एक-दूसरे से क्षमा याचना करते हैं। गौरतलब है कि जैन समाज के आत्मशुद्धि के पर्व पर्युषण महापर्व के तहत त्याग, तपस्या, उपवास, प्रतिक्रमण, सामायिक आदि के बाद अंतिम दिवस क्षमावाणी पर्व का आयोजन किया जाता है। इसे 'खमत खामणा दिवस' कहते हैं। इस दिन यह सब अपने आत्मीय भावों से केवल परस्पर सहकर्मियों-सहपाठियों से ही नहीं, बल्कि सृष्टि के समस्त जीवन मात्र के प्रति क्षमा का भाव अभिव्यक्त किया जाता है।

सभी ने मांगी परस्पर क्षमा

यहां महाप्रज्ञ सभागार में सोमवार को पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम के तहत खमत खामण दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने सबसे अंतःकरण से क्षमायाचना करते हुए बताया कि भारतवर्ष और जैन धर्म का यह अद्वितीय पर्व है। विश्वभर के राजनेताओं का कहना है कि अगर यह त्यौहार वैश्विक स्तर पर दिल से मनाया जाए, तो दुनिया की बहुत सारी समस्याएं हल हो सकती हैं। उन्होंने कहा कि यह एक अवसर है, जब किसी भी गलती के लिए परस्पर क्षमा का आदान-प्रदान करके अपने कार्य-व्यवहार और जीवन को शुद्ध बनाया जा सकता है। इस अवसर पर क्षमा मांगने के साथ क्षमा देने का भाव भी रहता है। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के सभी विभागाध्यक्षों द्वारा क्षमायाचना की गई और उन विभागों की छात्राओं ने भी क्षमाचायना की। प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन, प्रो. बीएल जैन, प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. बलबीर सिंह चारण, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, वितााधिकारी आरके जैन, परीक्षा नियंत्रक डॉ. युवराज सिंह खंगारोत, छात्राओं मीनाक्षी भंसाली, माया कंवर, अभिलाषा आदि ने अपने सम्बोधन में सबसे क्षमायाचना की। कार्यक्रम का प्रारम्भ ईर्या जैन के मंगलाचरण से किया गया। अंत में कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक ने आभार ज्ञापित करते हुए क्षमा को मनुष्य के 16 गुणों में से सबसे श्रेष्ठ गुण बताया। कार्यक्रम में प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. लिपि जैन, डॉ. विनोद कस्वा, डॉ. स्नेहलता जोशी, डॉ. जेपी सिंह, दीपाराम खोजा, पंकज भटनागर, डॉ. मनीष भटनागर, प्रगति चौरड़िया आदि उपस्थित रहे।

विश्व शिक्षक दिवस पर कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विश्व शिक्षक दिवस पर 5 अक्टूबर को आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि विश्व भर के शिक्षकों के योगदानों, उनके समर्पण भाव, उनकी कर्तव्य निष्ठा को सलाम करने के साथ-साथ शिक्षकों की शैक्षिक प्रक्रिया को प्रोत्साहित करने और उनमें अपने अधिकारों के प्रति जागरूकता बढ़ाना विश्व शिक्षक दिवस का उद्देश्य है। इसमें अंतर्राष्ट्रीय एकजुटता को बढ़ावा देने के साथ ही वैश्विक स्तर पर गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के महत्त्व को बढ़ाने का भाव भी रहा है। उन्होंने इस वर्ष की विश्व शिक्षक दिवस की थीम 'शिक्षकों को सशक्त बनाना, लचीलापन मजबूत करना, स्थिरता का निर्माण करना, होने के बारे में जानकारी दी और कहा कि इस थीम से शिक्षकों को सामाजिक जिम्मेदारी और पर्यावरण जागरूकता विकसित करने में समर्थन मिलता है। उन्होंने बताया कि हर साल यूनेस्को की सिफारिश पर 5 अक्टूबर 1964 से इस दिन विश्व शिक्षक दिवस मनाया जाता रहा है। इस अवसर पर समूचे वैश्विक शैक्षिक संस्थानों में विभिन्न कार्यक्रम आयोजित होते हैं। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, प्रेयस सोनी, राधिका लोहिया, मुकेश कुमार बाज्या, घासीलाल शर्मा, देशना चारण आदि संकाय सदस्य एवं छात्राएं मौजूद रहीं।

त्याग से जीवन में नियंत्रण और समता भाव बढ़ते हैं- मुनिश्री कौशल कुमार

पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम में व्रत चेतना दिवस मनाया

पर्युषण महापर्व के अवसर पर संस्थान में चल रहे सात दिवसीय पर्युषण पर्वाराधना कार्यक्रम में 5 सितम्बर को व्रत चेतना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर अमेरिका से लौटे मुनिश्री महाश्रमण के विद्वान् शिष्य मुनिश्री कौशल कुमार ने कहा कि व्रत जीवन में सार्थकता लाने में उपयोगी सिद्ध होते हैं। जीवन के प्रत्येक क्षेत्र में सार्थकता होने पर उसकी उपयोगिता बढ जाती है। उन्होंने कहा कि त्याग की शक्ति बढाने से आत्मनियंत्रण बढता है और आत्मनियंत्रण से जीवन शैली में परिवर्तन आता है, साधनों की वृद्धि हो जाती है। त्याग जीवन में समता को बढाता है। इसका चिंतन करने से जीवन में पवित्रता आती है। हमें संतोष का अभ्यास करना चाहिए।

संयम से आता है जीवन पर नियंत्राण

मुनिश्री कौशल कुमार ने हाल में किए गए विभिन्न वैज्ञानिक प्रयोगों व अनुसंधान का उल्लेख करते हुए अध्यात्म की बातों को सिद्ध किया और बताया कि आप अपनी किसी पसंदीदा चीज पर संयम करें व प्रयोग करके देखें। आपने उसे छोड़ दिया तो आप अपने जीवन पर भी नियंत्रण कर पाएंगे। इस त्याग की शक्ति को बढाते रहना चाहिए। उन्होंने आत्मनियंत्रण एवं अणुव्रत चेतना के लिए तीन आयाम बताए। नशामुक्ति, सद्भावना और नैतिकता इन तीनों आयामों के बारे में विस्तार से बताते हुए उन्होंने कहा कि अंदर से उठने वाले आवेगों, इच्छाओं में धैर्य की आवश्यकता रहती है। आज व्यक्ति फास्ट बनता जा रहा है, जिन गतिविधियों को मंद होना चाहिए, वे भी इस प्रतिस्पर्धा में फास्ट बन गई है। व्यक्ति आराम से सोच भी नहीं पाता, इससे उसके निर्णय प्रभावित होते हैं। नियंत्रण से हृदय परिवर्तन आता है।

लाभ से लोभ बढता है, प्रामाणिकता मिटती है

सद्भावना के लिए मुनिश्री कौशल कुमार ने कहा कि आज प्रमोद भावना बढ रही है। सद्भावना और नियंत्रण की शक्ति एक-दूसरे से जुड़ी हुई है। शीघ्रता करने से नियंत्रण की शक्ति कम हो जाती है। अपने मस्तिष्क को व्यापक बनाना चाहिए। नैतिकता के बारे में मुनिश्री ने बताया कि अनावश्यकता में प्रामाणिकता नहीं होती, वहां सब शिक्षाएं गौण हो जाती है और आवश्यक और अनावश्यक का भेद नहीं रहता। उन्होंने सफलता व लाभ का जोड़ा बताते हुए कहा कि जैसे-जैसे लाभ बढता जाता है, वैसे-वैसे लोभ भी बढता जाता है।

व्रतों से होती है संकल्प-सिद्धि

कार्यक्रम के अध्यक्ष कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने व्रतों की संकल्प सिद्धि का माध्यम बताया और कहा कि व्रत चाहे छोटे हों या बड़े और जीवन के किसी भी क्षेत्र में हों, उनसे संकल्पशक्ति का विकास संभव होता है। उन्होंने बताया कि मुनिश्री कौशल कुमार की माता का देहांत 3 दिन पूर्व ही हुआ है और एक माह पूर्व इनके पिता का निधन हो गया था, फिर भी यह इनकी संकल्प शक्ति का ही परिणाम है कि वे पूर्ण समता के भावों के साथ हमारे बीच उपस्थित हैं। कार्यक्रम के संयोजक प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने प्रारम्भ में पर्वराज पर्युषण के महत्त्व पर प्रकाश डालते हुए व्रतों व अणुव्रतों के बारे में जानकारी दी और आचार्य तुलसी के अणुव्रत आंदोलन के बारे में बताया। साथ ही उन्होंने मुनिश्री कौशल कुमार का जीवन परिचय प्रस्तुत करते हुए उनका स्वागत किया। कार्यक्रम का संचालन प्रो. बीएल जैन ने किया। इस अवसर पर प्रो. दामोदर शास्त्री, प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. रामदेव साहू, डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत, डॉ. लिपि जैन, डॉ. रविन्द्र सिंह राठौड़, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. आभासिंह, डॉ. अमिता जैन, पंकज भटनागर, जगदीश यायावर, डॉ. जेपी सिंह आदि सभी संकाय एवं स्टाफ सदस्य उपस्थित रहे।

पर्युषण पर्व के तहत 'वाणी संयम' दिवस मनाया

संस्थान में चल रहे पर्युषण पर्व के अंतर्गत आयोजित विभिन्न गतिविधियों में चौथे दिन 4 सितम्बर को 'वाणी संयम' विषय पर कार्यक्रम रखा गया। कार्यक्रम में मुख्य वक्ता प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने 'वाणी संयम' को एक सफल जीवन का आधार बताया एवं कहा कि जो व्यक्ति वाणी का संयम रखना है, वह न तो तनावग्रस्त रहता है और न ही उसके सामने समस्याएं अधिक आती है। उन्होंने व्यक्ति को वाणी संयम के साथ-साथ मितभाषी होने की जरूरत बताते हुए कहा कि मितभाषी व्यक्ति कम बोलता है, जिसके कारण उसकी अनेक समस्याएं स्वतः ही हल हो जाती हैं। प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेंद्र कुमार जैन ने बताया कि जैन धर्म में अनेक पर्व एवं अनुष्ठान आयोजित होते हैं, जिनमें पर्युषण पर्व काफी महत्त्वपूर्ण है। पर्युषण पर्व का संबंध केवल जैन धर्म से ही नहीं, अपितु सृष्टि के जन-जन से है जिसमें शांति, संयम, सदाचरण, समन्वय, सहिष्णुता आदि महत्त्वपूर्ण आदर्श अभिव्यक्त हैं। उन्होंने कहा कि व्यक्ति को जीवन में सदैव वाणी का संयम बनाए रखना चाहिए। इससे उसे सम्मान मिलेगा और दूसरों का सम्मान भी हो सकेगा। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने अंत में आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने किया। कार्यक्रम में डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. लिपि जैन, डॉ. बलबीर सिंह, डॉ. अशोक भास्कर, डॉ. हेमलता जोशी आदि संकाय सदस्यों के साथ संस्थान के विद्यार्थी व 70 प्रतिभागी रहे।

मोबाईल के अनावश्यक उपयोग के बजाय स्वाध्याय अपनाएं- मुनिश्री मुदितकुमार

पर्युषण पर्व सप्ताह में 'स्वाध्याय दिवस' मनाया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में मनाए जा रहे पर्युषण पर्व के अन्तर्गत 2 सितम्बर को द्वितीय दिवस आयोजित 'स्वाध्याय दिवस' में मुख्य वक्ता मुनिश्री मुदित कुमार ने जैन परंपरा में स्वाध्याय की विशिष्टता को अभिव्यक्त करते हुए कहा कि महावीर स्वामी से लेकर महात्मा बुद्ध तक ने अपने-अपने मतानुसार स्वाध्याय को पांच रूपों में विश्लेषित किया है, जिसमें वाचना, पृच्छना, परिवर्तना, अनुप्रेक्षा एवं धर्मकथा हैं। मुनिश्री मुदित कुमार ने इन सबकी व्याख्या भी प्रस्तुत की। उन्होंने मानव के वर्तमान बौद्धिक स्वरूप में जानकारी एवं ज्ञान के अंतर को सांसारिक उद्धरणों द्वारा स्पष्ट किया। साथ ही दैनिक दिनचर्या में मोबाइल के बढ़ते दुरुपयोग को शराब से भी खतरनाक नशे के रूप में स्वीकार किया तथा इसके अनावश्यक उपयोग से होने वाले नकारात्मक पहलुओं से विद्यार्थियों को आगाह किया। कार्यक्रम की शुरुआत में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य एवं विषय प्रवर्तन प्रस्तुत किया। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम का संचालन किया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद व्यापित किया।

दीक्षारम्भ भारतीय संस्कृति में महत्त्वपूर्ण

इससे पूर्व प्रातः प्रार्थना सभा में महाविद्यालय में सत्र 2024-25 में प्रवेश लेने वाली नवागंतुक छात्राओं के लिए एक सप्ताह के दीक्षारंभ कार्यक्रम के उद्घाटन सत्र में मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने अपने सम्बोधन में छात्राओं को समय की प्रतिबद्धता समझाई और विद्यार्थियों के व्यक्तित्व विकास में गुरुजनों की महत्ता पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने दीक्षारंभ कार्यक्रम के स्वरूप, महत्त्व एवं कार्यक्रम के उद्देश्य पर विस्तृत चर्चा करते हुए भारतीय सनातन संस्कृति एवं अभिन्न जीवन मूल्यों में दीक्षारंभ कार्यक्रम के विशेष योगदान के बारे में बताया। इस दौरान महाविद्यालय की पूर्व छात्रा खुशी जोधा ने पीपीटी के जरिए संस्थान एवं महाविद्यालय का विस्तृत परिचय प्रस्तुत किया। बीएससी की 5जी सेमेस्टर छात्रा कांता सोनी ने रैगिंग के दुष्प्रभावों के बारे में बताया और एंटी रैगिंग फॉर्म ऑनलाइन भरने की प्रक्रिया को पीपीटी के जरिए छात्राओं के बीच साझा किया। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद कस्वा ने इस अवसर पर छात्राओं को यौगिक क्रियाओं का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम का संयोजन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम समन्वय डॉ. प्रगति भटनागर ने अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया।

राष्ट्रीय भारतीय भाषा उत्सव

देश की सभी भाषाएं राज्यों की सीमा से बाहर निकल राष्ट्र को एकसूत्रता में बांधने को प्रतिबद्ध हैं- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में आयोजित भारतीय भाषा उत्सव के अवसर पर 11 दिसम्बर को आयोजित कार्यक्रम में अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने मातृभाषा से लेकर राष्ट्रभाषा के बीच अन्य समस्त भारतीय भाषाओं को समाहित करते हुए भाषाओं के सर्वांगीण महत्त्व एवं उनकी उपादेयता पर प्रकाश डाला तथा कहा कि भारत में आज भी भाषाएं राज्यों की सीमा से बाहर निकलकर देश को एकसूत्र आबद्ध करने के लिए प्रतिबद्ध हैं। उन्होंने साथ ही तमिल भाषा के प्रसिद्ध कवि सुब्रमण्यम भारती पर भी विस्तृत चर्चा करते हुए बताया कि उनके जन्मदिन को भारत सरकार के उच्च शिक्षा मंत्री धर्मेंद्र प्रधान द्वारा समूचे भारत में 'भारतीय भाषा उत्सव' की संज्ञा दी, जिसे संपूर्ण देश भारतवर्ष के उच्च शैक्षिक संस्थानों में मनाना स्वीकार किया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता एवं कार्यक्रम समन्वयक अभिषेक चारण ने भारतीय भाषायी इतिहास के अतीत से लेकर वर्तमान तक के अनेक परिदृश्यों पर खुलकर बात की, जिसमें ध्वनि की उत्पत्ति से लेकर भाषा के बदलते स्वरूप एवं उसके क्रमिक विकास के कई सोपानों को व्याख्यायित किया गया। कार्यक्रम में महाविद्यालय की छात्राओं की ओर से राखी शर्मा, सोनू जांगिड़, कांता सोनी, मीनाक्षी भंसाली, नम्रता सांखला, रेणुका चौधरी आदि ने अपनी प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम में महाविद्यालय के तीनों संकाय क्रमशः कला विज्ञान एवं वाणिज्य की छात्राओं ने भाग लिया। इस दौरान संकाय सदस्य मधुकर दाधीच एवं सुश्री राधिका लोहिया भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन सूचना एवं तकनीकी (कंप्यूटर) व्याख्याता डॉ. प्रगति भटनागर ने किया। इतिहास व्याख्याता प्रेयस सोनी द्वारा अंत में धन्यवाद ज्ञापन किया गया।

आईपीएसएस द्वारा प्रायोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में संस्थान प्राध्यापकों की सहभागिता

इंडियन पॉलिटिकल साईंस एसोसिएशन (आईपीएसए) द्वारा प्रायोजित एवं महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय बीकानेर द्वारा आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में 18 अक्टूबर को जैन विश्वभारती संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय) के अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर, सहायक आचार्य डॉ. रवींद्र सिंह राठौड़ तथा सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने सहभागिता निभाई। बीकानेर के महाराजा गंगा सिंह विश्वविद्यालय में आयोजित इस संगोष्ठी में देश-विदेश से आये करीब 1200 शोधार्थियों ने भाग लिया तथा अनेक विद्वानों ने अपने व्याख्यान प्रस्तुत किए। सेमिनार की अध्यक्षता आईपीएसएस के अध्यक्ष प्रो. गीतांजली दास ने की तथा सेमिनार आयोजक सचिव जनरल सेक्रेटरी प्रो. संजीव शर्मा थे।

महिला सशक्तिकरण पर प्रभावी पत्रवाचन

इस अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में अहिंसा एवं शांति विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने 'दक्षेश : निर्माण प्रक्रिया का विश्लेषणात्मक अवलोकन' विषय पर पत्रवाचन किया तथा दक्षेश के निर्माण की प्रक्रिया के विविध पक्षों को रेखांकित करते हुए इसकी स्थापना एवं लक्ष्यों पर प्रकाश डाला।

सहायक आचार्य डॉ. रवींद्र सिंह राठौड़ ने 'भारत में ग्रामीण महिलाओं का आर्थिक सशक्तिकरण : विकसित भारत के संदर्भ में' विषय पर प्रस्तुतीकरण देते हुए कहा कि विश्व में महिला सशक्तिकरण को देखते हुए भारत में महिलाओं की स्थिति में सुधार के लिए महिलाओं का सशक्त होना आवश्यक है, तभी 2047 का विकसित भारत संभव है। विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने 'महिला सशक्तिकरण : मजबूत राजनीतिक समाज की क्षमता को उन्मुक्त करने के लिए उत्प्रेरक संकेतक' विषयक प्रस्तुति दी तथा बताया कि विकसित भारत का स्वप्न तभी साकार किया जा सकता है, जब महिलाओं को सभी क्षेत्र में आगे आने के अवसर दिये जाएं तथा उनकी क्षमताओं को आंका जाए। इससे न सिर्फ पारिवारिक व सामाजिक स्तर पर अपितु राजनीतिक स्तर पर भी विकास के अनेक आयामों को खोजा जा सकेगा।

डॉ. लिपि जैन को मिला इप्सा का राष्ट्रीय अवार्ड

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन को इप्सा (IPSA) द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर अवार्ड प्रदान किया गया है। इस उपलब्धि के लिए डा. लिपि को संस्थान के समस्त स्टाफ ने बधाई एवं शुभकामनाएं प्रदान की हैं।

इंडियन पॉलिटिकल साईंस एसोसिएशन (इप्सा) द्वारा प्रायोजित एवं महाराजा गंगासिंह विश्वविद्यालय, बीकानेर द्वारा 18 अक्टूबर को आयोजित अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में सेमिनार की अध्यक्ष आईपीएसए की अध्यक्ष प्रो. गीतांजलि दास एवं आयोजक सचिव प्रो. संजीव शर्मा ने डा. लिपि जैन को यह अवार्ड दिया। उन्हें यह अवार्ड महिला सशक्तीकरण पर विशेष कार्य करने एवं अहिंसा व शांति को वैश्विक राजनीति के परिप्रेक्ष्य में प्रतिस्थापित करने के सम्बंध में उल्लेखनीय कार्य के लिए दिया गया।

संविधान के विभिन्न प्रावधानों पर चर्चा का आयोजन

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा संविधान दिवस के अवसर पर 26 नवम्बर को कार्यक्रम आयोजित किया जाकर भारतीय संविधान की लोकतांत्रिक व्यवस्था, अनुच्छेदों, अनुसूचियों आदि और संवैधानिक भावनाओं पर प्रकाश डाला गया। कार्यक्रम में सहायक आचार्या डॉ. लिपि जैन ने भारतीय संविधान की ऐतिहासिक पृष्ठभूमि को स्पष्ट किया और बताया कि हमारा संविधान ऐसा लिखित दस्तावेज है, जिसमें उल्लेखित प्रावधान लोकतांत्रिक आदर्श स्थापित करने में महत्त्वपूर्ण आधार माने जा सकते हैं। उन्होंने संविधान के अनुच्छेद एवं अनुसूचियों के बारे में भी बताया। सहायक आचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने संविधान को राष्ट्र की आत्मा बताया तथा कहा कि भारत की संप्रभुता, एकता एवं अखण्डता के आदर्श को संविधान ने अंगीकार किया है।

विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने भारतीय संविधान के दार्शनिक आधार तथा स्वरूप पर प्रकाश डाला और बताया कि भारत का संविधान विश्व के अनेक संविधानों की अच्छाइयों को अंगीकार करते हुए बनाया गया था। संविधान में राष्ट्र के नागरिकों की भावनाओं एवं अपेक्षाओं का समायोजन होता है, अतः प्रत्येक सरकार का दायित्व है कि वह संविधान के आदर्शों एवं प्रावधानों के अनुरूप ही शासन व्यवस्था का संचालन करे।

संस्कृत में समाहित है शारीरिक, मानसिक व वाणी की शुद्धि- प्रो. शास्त्री

संस्कृत दिवस समारोह का आयोजन

संस्थान के प्राकृत-संस्कृत विभाग के तत्वावधान में 23 अगस्त को आयोजित संस्कृत दिवस समारोह में मुख्य अतिथि प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा है कि संस्कृत भाषा की उत्पति महर्षि पाणिनी की तपस्या से शंकर द्वारा की जानी बताई जाती है, इसी से श्रावण मास में संस्कृत और भगवान शिव की विशेष महिमा रहती है। उन्होंने संस्कृत को हर प्रकार की शुद्धि करने वाली भाषा बताया तथा कहा कि शारीरिक शुद्धि, मानसिक शुद्धि, वाणी की शुद्धि सब संस्कृत में समाहित है। प्रो. शास्त्री ने कहा कि इस धर्म प्रधान देश भारत में धर्म का माध्यम संस्कृत ही है। संस्कृत में शब्दों की शुद्धता पर विशेष जोर देते हुए उन्होंने संस्कृत व प्राकृत सहित शब्दों की यात्रा और बदलाव के बारे में विस्तार से जानकारी दी।

समारोह की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने संस्कृत को सरल, सीधी व स्पष्ट भाषा बताया और कहा कि संस्कृत व प्राकृत सहोदरा भाषाएं हैं और ये दोनों ही सदा से चली आ रही है। यह हमारे देश की विरासत है, हमारी धरोहर हैं। उन्होंने कहा कि आत्मशुद्धि के प्रयोजन से संस्कृत का प्रयोग प्राचीनकाल से ही चला आ रहा है। उन्होंने विश्वविद्यालय में अपने विभाग की तरफ से संस्कृत-सम्भाषण शिविर लगाने की घोषणा भी की।

संस्कृत से मिलते हैं- शांति, संस्कार व आत्मविश्वास

विशिष्ट अतिथि प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने संस्कृत को दुनिया की सबसे प्राचीन भाषा बताते हुए कहा कि विश्व के सबसे पहले ग्रंथ ऋग्वेद की भाषा संस्कृत ही है। संस्कृत से शांति, संस्कार और आत्मविश्वास भी प्राप्त होते हैं। संस्कृत को उन्होंने माधुर्यपूर्ण भाषा बताया और साथ ही नई पीढी को संस्कृत से जोड़ने की आवश्यकता बताई और कहा कि संस्कृत की मिठास और पद-लालित्य को पढने-सीखने से जीवन में माधुर्य आत्मसात् हो जाता है। डॉ. रामदेव साहू ने श्रावण मास और पूर्णिमा का महत्त्व बताया और

नक्षत्रों व ग्रहों की स्थितियों की जानकारी देते हुए उसे संस्कृत के अमरत्व से जोड़ा। प्रो. रेखा तिवाड़ी ने संस्कृत को वेदों की भाषा और ऋषियों-मुनियों की भाषा तथा देश को गौरवान्वित करने वाली भाषा बताया। उन्होंने कहा कि यह विश्व की प्राचीनतम भाषा है। इसका बहुत महत्त्व है। उन्होंने संस्कृत संस्कृति, संस्कार और सुसंस्कृत होने के बारे में जानकारी देते हुए संस्कृत को सीखना जरूरी बताया।

संस्कृत सबसे शुद्ध व उपयोगी भाषा

डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य के साथ संस्कृत दिवस को श्रावण पूर्णिमा से शुरू होकर सात दिनों तक मनाया जाने वाला पर्व बताया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को जानने के लिए संस्कृत जानना जरूरी बताया। साथ ही नासा का उदाहरण देते हुए अंतरिक्ष की सबसे शुद्ध व उपयोगी भाषा संस्कृत को बताया एवं आर्टिफिशियल इंटेलीजेंसी (एआई) के लिए भी संस्कृत की उपयोगिता बताई। कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिनों ने संस्कृत गीतिका एवं विचार प्रस्तुत किए।

कार्यक्रम का प्रारम्भ मुमुक्षु बहिनों के मंगलाचरण से किया गया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन डॉ. सव्यसांची सारंगी ने किया। कार्यक्रम में मुमुक्षु बहिनें, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. विनोद कस्वां, निखिल राठौड़, जगदीश यायावर एवं संस्कृत के शोधार्थी व विद्यार्थीगण उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय स्तरीय सात दिवसीय जैन स्कॉलर कार्यशाला आयोजित

संस्थान की डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा ने आचार्य तुलसी शिक्षा परियोजना के अन्तर्गत जैन स्कॉलर के चतुर्थ बैच के सात दिवसीय पांचवें सत्र में प्राकृत भाषा का अध्यापन स्कॉलर्स को करवाते हुए प्राकृत भाषा में तद्धित प्रत्ययों के प्रयोग के बारे में सरल भाषा में समझाया। राजू दूगड़ ने भी प्राकृत भाषा के बारे में जानकारी प्रदान की। अखिल भारतीय महिला मंडल के तत्वावधान में जैन विश्व भारती परिसर में 'रोहिणी' भवन में इस जैन स्कालर कार्यशाला में प्राकृत, संस्कृत, कर्म मीमांसा और जैन भूगोल की कक्षाएं आयोजित की गई।

इन राष्ट्रीय स्तर की कार्यशालाओं का आयोजन साल में दो बार लाडनूं में ही किया जाता है। प्राकृत भाषा का अध्ययन इन सभी कार्यशालाओं में शुरू से ही समणी डॉ. संगीतप्रज्ञा द्वारा करवाया जाता है। वर्तमान में आयोजित कार्यशाला में 17 स्कालर्स ने भाग लिया।

नैतिकता की उड़ान के लिए प्रेक्षाध्यान एवं जीवन विज्ञान की आवश्यकता

प्रेक्षाध्यान कल्याणक वर्ष पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की ओर से आचार्यश्री महाप्रज्ञ प्रवर्तित प्रेक्षाध्यान के 50वें साल में प्रवेश के अवसर पर एक साल तक मनाए जाने वाले आचार्यश्री महाश्रमण द्वारा घोषित 'प्रेक्षाध्यान कल्याणक वर्ष' के प्रथम दिवस पर 30 सितम्बर को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए दूरस्थ एवं ऑनलाईन शिक्षा केन्द्र के निदेशक प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने कहा कि आगमों में आए 'पेहा' शब्द से ही प्रेक्षाध्यान बना है। 1955 में मंत्रद्रष्टा आचार्य तुलसी ने चिंतन करते हुए इस बारे में आचार्य महाप्रज्ञ तत्कालीन मुनि नथमल को संकेत किया और वे उसकी क्रियान्विति में लग गए। पूर्ण विकास, प्रयोगों, अनुसंधान आदि के बाद 1975 में प्रेक्षाध्यान का नामकरण किया गया। उन्होंने बताया कि जीवन विज्ञान, प्रेक्षाध्यान व अणुव्रत ये त्रैत हैं, जो परस्पर घनिष्ठ सम्बंध रखते हैं। इनसे ही नैतिकता की उड़ान भरी जा सकती है। अणुव्रत नैतिकता के लिए, जीवन विज्ञान संतुलित शिक्षा के लिए है और प्रेक्षाध्यान आत्म साक्षात्कार के लिए है। हर व्यक्ति को अपने जीवन में शांति चाहिए, आनन्द चाहिए, तो इसके लिए इन तीनों की आवश्यकता है। उन्होंने प्रेक्षाध्यान की उप सम्पदा के बारे में बोलते हुए भावक्रिया में सदैव अप्रमत्त रहने, वर्तमान में रहने व जानते हुए करने की आवश्यकता बताई और क्रिया की प्रतिक्रिया से बचने की जरूरत पर बल दिया। मैत्री की भावना को आवश्यक बताते हुए शत्रुओं से मुक्त होने के लिए मैत्री का प्रभाव रेखांकित किया। वाणी को तलवार के घाव से भी अधिक मर्माघात करने वाली बताते हुए 'वाणी संयम' पर जोर दिया। ध्यान व साधना के भोजन के नियंत्रण के बारे में बताते हुए उन्होंने 'मिताहार' को आवश्यक बताया। प्रो. त्रिपाठी ने प्रेक्षाध्यान को अपने जीवन से जोड़ने के लिए सबको संकल्प लेने के लिए प्रेरित किया।

उन्नति के हर आयाम पर प्रेक्षाध्यान उपयोगी

कार्यक्रम के मुख्य अतिथि प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. जिनेन्द्र जैन ने इस वर्ष का प्रेक्षाध्यान कल्याणक वर्ष माने जाने के बारे में जानकारी देते हुए प्रेक्षाध्यान को व्यक्तिगत, समाजिक, सार्वजनिक, आध्यात्मिक, बौद्धिक, वैज्ञानिक दृष्टियों से उन्नयन के लिए आवश्यक बताया। उन्होंने बताया कि प्रेक्षाध्यान के साथ जीवन विज्ञान को जोड़ कर आचार्य महाप्रज्ञ ने इसे परिपूर्णता प्रदान की। उन्होंने जीवन की हर क्रिया के साथ ध्यान करने की आवश्यकता बताई तथा इसे नियमित बनाने पर जोर दिया। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या डॉ. हेमलता जोशी ने कार्यक्रम में प्रेक्षाध्यान प्रणेता आचार्य महाप्रज्ञ के साहित्य से जीवन का हर क्षेत्र का ज्ञान प्राप्त होता है। उन्होंने आचार्य महाप्रज्ञ जीवन में चलने के लिए दिशा को महत्त्वपूर्ण बताते हैं और कहते हैं कि चलना बड़ी बात नहीं है, मुख्य बात है कि किस दिशा में चल रहे हैं। उन्होंने प्रेक्षाध्यान को आचार्य महाप्रज्ञ का बहुत बड़ा अवदान बताते हुए कहा कि प्रेक्षाध्यान शब्द पहले भी थे, लेकिन उन्हें नया आयाम देकर जन कल्याण के लिए इसका प्रयोग उन्होंने ही प्रवर्तित किया। कार्यक्रम संयोजक डॉ. युवराज सिंह खंगारोत ने प्रारम्भ में विषय प्रवर्तन करते हुए प्रेक्षाध्यान के इतिहास, उसके प्रयोग, उसके घटक एवं प्रेक्षाध्यान कल्याण वर्ष के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम का प्रारम्भ योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की छात्राओं के प्रेक्षाध्यान-गीत के माध्यम से मंगल संगान द्वारा किया गया। इस अवसर पर डॉ. विनोद कस्वा द्वारा सामूहिक महाप्राण ध्वनि का अभ्यास भी करवाया गया और उसका महत्त्व समझाया। कार्यक्रम के अंत में डॉ. अशोक भास्कर ने आभार ज्ञापित किया।

मानव जीवन के मौलिक आधार हैं मानवाधिकार

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग में 10 दिसम्बर को मानवाधिकार दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने मानवाधिकारों की अवधारणा को विश्लेषित किया और मानवाधिकार एवं सामान्य अधिकारों के अंतर को समझाया। विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने भारतीय संदर्भ में मानवाधिकारों को स्पष्ट करते हुए बताया कि मानवाधिकार संविधान एवं संविधानेतर रूप में भी हमारी संस्कृति एवं व्यवस्था में समाहित हैं। सहायक आचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने अंत में आभार ज्ञापित करते हुए गांधीवाद एवं वैश्विक परिदृश्य में मानवाधिकार संबंधी प्रावधानों को स्पष्ट किया। कार्यक्रम का संचालन छात्र नरेंद्र सिंह राठौड़ ने किया।

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग में आयोजित मानवाधिकार दिवस कार्यक्रम में सर्वप्रथम विभाग की सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने मानवाधिकारों की अवधारणा को विश्लेषित करते हुए मानवाधिकार एवं सामान्य अधिकारों में अंतर को समझाया और विस्तार से जानकारी प्रदान की। विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने भारतीय संदर्भ में मानवाधिकारों को स्पष्ट करते हुए बताया कि मानवाधिकार संविधान एवं संविधानेत्तर रूप में भी हमारी संस्कृति एवं व्यवस्था में समाहित माने जा सकते हैं। सहायक आचार्य डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने अंत में आभार ज्ञापित करते हुए गांधीवाद एवं वैश्विक परिदृश्य में मानवाधिकार संबंधी प्रावधानों को स्पष्ट किया। कार्यक्रम का संचालन छात्र नरेंद्र सिंह राठौड़ ने किया।

'भारत का गौरव : प्राकृतिक भाषा एवं साहित्य' विषयक व्याख्यानमाला का आयोजन

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के तत्त्वावधान में 'भारत का गौरव : प्राकृत भाषा एवं साहित्य' मासिक/विषयक व्याख्यानमाला का संचालन अनवरत किया जा रहा है। इस व्याख्यानमाला में प्रतिमाह एक विषय विशेषज्ञ का व्याख्यान आयोजित होता है। इस शृंखला में अब तक कुल 42 व्याख्यानों का आयोजन हो चुका है। जुलाई से दिसम्बर 2024 की अवधि में हुए व्याख्यानों का विवरण इस प्रकार है-

'आख्यानमणिकोश' में 14 हजार श्लोकों व 127 आख्यानों से दिया गया जीवन दर्शन एवं भारतीय संस्कृति व कला का वर्णन- डॉ. तारा डागा

37वाँ व्याख्यान - 29 जुलाई, 2024

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के 37वें व्याख्यान में 'आख्यानमणिकोशवृत्ति में वर्णित जीवन दर्शन' विषय पर प्राकृत भारती अकादमी की निदेशिका डॉ. तारा डागा ने कहा है कि भारतीय संस्कृति को समझने के लिए प्राकृत साहित्य महत्त्वपूर्ण है और इस परम्परा में आम्रदेव सूरि का प्रसिद्ध ग्रन्थ 'आख्यान- मणिकोशवृत्ति' प्रमुख है। इसमें 14000 श्लोक व 127 आख्यानों के माध्यम से इस ग्रन्थ में जीवन दर्शन के साथ-साथ भारतीय संस्कृति व कला के विषय में सूक्ष्म वर्णन प्राप्त होता है। उन्होंने आख्यानमणिकोशवृत्ति में वर्णित जीवन दर्शन को व्याख्यायित करते हुए कहा कि समताभाव, संसार की नश्वरता, धैर्य तथा जाति व्यवस्था के विषय में इस ग्रन्थ में अनेक आख्यानों के माध्यम से समझाया गया है। सांस्कृतिक तत्त्वों के अन्तर्गत भौगोलिक स्थिति, जनपद, राजाओं का वर्णन, धर्म-दर्शन, जैनधर्म के सिद्धान्तों के साथ-साथ अन्य धर्म-दर्शनों का वर्णन, चारों वर्ण तथा पारिवारिक मूल्यों के साथ ही आर्थिक व्यवस्था को प्रतिपादिक करने वाला यह महत्त्वपूर्ण ग्रन्थ है।

आगमों को समझने में सहायक ग्रंथ

व्याख्यानमाला की अध्यक्षता करते हुए प्रो. जिनेन्द्र जैन ने अनेक उद्धरणों के माध्यम से 'आख्यानमणिकोशवृत्ति' की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए कहा कि प्रायः वृत्तियां संस्कृत में लिखे जाने का प्रचलन रहा है, लेकिन इसकी वृत्ति प्राकृत में लिखी गई है। आगमों के सिद्धान्तों को समझने के लिए इस ग्रन्थ का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। निश्चित रूप से यह ग्रन्थ हमारी सांस्कृतिक धरोहर के रूप में है। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत अध्ययन की विद्यार्थी प्रतिभा कोठारी के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत भाषा और साहित्य में निहित है भारतीय संस्कृति का मर्म- प्रो. अनेकान्त जैन

38वाँ व्याख्यान - 31 अगस्त, 2024

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के 38वें व्याख्यान में श्रीलालबहादुर शास्त्री राष्ट्रीय संस्कृत विश्वविद्यालय के प्रो. अनेकान्त कुमार जैन ने कहा कि भारतीय संस्कृति में निहित करूणा, दया, अहिंसा, मैत्री जैसे महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को समझने के लिए प्राकृत भाषा और साहित्य का अवगाहन करना पड़ेगा और उसमें भी विशेष रूप से श्रमण परम्परा द्वारा रचित साहित्य अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। उन्होंने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विकास में श्रमण-परम्परा के योगदान को सूक्ष्मता से व्याख्यायित करते हुए कहा कि हमारे समक्ष जितना भी प्राकृत साहित्य उपलब्ध है, उसमें से अधिकतम साहित्य श्रमण-परम्परा की देन है। श्रमणों द्वारा विरचित होने के कारण इस साहित्य में भारतीय संस्कृति को अधिक से अधिक उजागर करते हुए उसके मर्म अर्थात् अध्यात्म को सूक्ष्मता से व्याख्यायित किया गया है। प्रो. जैन ने एक लम्बी श्रमण परम्परा और उनके द्वारा लिखित साहित्य की सूची भी प्रस्तुत की।

इस अवसर पर प्रो. दामोदर शास्त्री ने भी अपने विचार रखते हुए कहा कि प्राकृत कोश साहित्य के विकास में भी श्रमण-परम्परा का विशेष योगदान रहा है। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र जैन ने श्रमण परम्परा में अनेक मुनियों एवं साधियों का नामोल्लेख किया, जिन्होंने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विकास में अपना अमूल्य योगदान दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ सन्मति प्राकृत विद्यापीठ के विद्यार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विशय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 30 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

प्राकृत भाषा और साहित्य के विकास में रहा जैनाचार्यों-मनीषियों का महत्त्वपूर्ण योगदान- डॉ. रविन्द्र कुमार खाण्डवाला

39वाँ व्याख्यान - 28 सितम्बर, 2024

संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के 39वें व्याख्यान के रूप में श्री एच. के. आर्टस कॉलेज, अहमदाबाद (गुजरात) डॉ. रविन्द्र कुमार खाण्डवाला ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में निहित मानवीय मूल्यों का जीवन्त रूप जैनागमों व जैनाचार्यों-मनीषियों द्वारा रचित साहित्य में दिखाई देता है। यदि मानवीय मूल्यों जैसे-करूणा, दया, अहिंसा, मैत्री जैसे महत्त्वपूर्ण तत्त्वों को समझना हो तो प्राकृत भाषा और साहित्य का अवगाहन करना पडेगा। प्राचीन काल से लेकर आज तक प्राकृत भाषा और साहित्य पर इतना कार्य और शोध कार्य हुआ है कि इस साहित्य की विशाल परम्परा हम सभी के समक्ष प्रस्तुत है और इस कार्य में गुजरात के जैनाचार्यों और मनीषियों का महत्त्वपूर्ण अवदान रहा है।

उन्होंने प्राकृत भाषा एवं साहित्य के विकास में जैनाचार्यों और मनीषियों के योगदान को बहुत ही सूक्ष्मता से व्याख्यायित करते हुए कहा कि आज हमारे समक्ष जितना भी प्राकृत साहित्य उपलब्ध है, उसमें से अधिकतम साहित्य आचार्य-परम्परा की देन है, लेकिन इसमें जैन मनीषियों एवं श्रेष्ठीजनों का भी विशेष योगदान रहा है। डॉ. खाण्डवाला ने प्रमुख जैनाचार्यों में यशःकीर्ति, नेमिचन्द्र सूरि, जिनेश्वर सूरि, आचार्य हेमचन्द्र, चन्द्रप्रभ महत्तर, आचार्य देवेन्द्र सूरि एवं हरिभद्र सूरि आदि के उल्लेख के साथ ही उनकी प्रमुख कृतियों का उल्लेख करते हुए उनमें वर्णित विषय-वस्तु पर भी प्रकाश डाला। साथ ही पं. बेचरदास, के.आर. चन्द्रा, ए.एन. उपाध्ये, लालभाई दलपतभाई मालवणिया, अमृत भाई पटेल आदि मनीषियों का भी विशेष उल्लेख किया व बताया कि प्राकृत ग्रन्थ परिषद् संस्था ने भी प्राकृत भाषा और साहित्य में विशेष योगदान दिया है।

इस अवसर पर प्रो. दामोदर शास्त्री ने कहा कि प्राकृत भाषा और साहित्य के विकास में गुजरात के जैनाचार्यों और मनीषियों का विशेष योगदान निश्चित ही रहा है। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र जैन ने कहा कि डॉ. खांडवाला ने इतने कम समय में गुजरात के जैनाचार्यों और मनीषियों के प्राकृत भाषा और उनके साहित्यिक योगदान पर जो प्रकाश डाला है, निश्चित ही दुरूह कार्य है। डॉ. जैन ने कुछ और विद्वानों के नामों का उल्लेख किया और उनके अवदानों को भी बताया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत विद्यापीठ की छात्रा अदिति के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 25 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

अपभ्रंश प्राकृत सभी आधुनिक भाषाओं की जननी- डॉ. गजादान चारण

40वां व्याख्यान- 26 अक्टूबर 2024

राजकीय महिला महाविद्यालय लाडनूं के प्राचार्य डॉ. गजादान चारण ने संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग द्वारा आयोजित मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 26 अक्टूबर, 2024 को 'राजस्थानी भाषा पर अपभ्रंश प्राकृत का प्रभाव' विषयक 40वें विशेष व्याख्यान में सभी भारतीय भाषाओं के इतिहास पर दृष्टिपात करते हुए अपभ्रंश प्राकृत से उत्पन्न आधुनिक भाषाओं के साथ-साथ राजस्थानी भाषा पर पड़ने वाले प्रभाव पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि भारतीय संस्कृति को स्थायित्व देने में भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः भारतीय भाषाएं भारत की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार की जा सकती है। भारत की प्राचीन भाषाओं में संस्कृत, प्राकृत व पाली प्रमुख हैं। प्राकृत का ही एक रूप अपभ्रंश कहलाती है, जिसे आधुनिक भाषाओं की जननी कहा जा सकता है।

अध्यक्षीय व्यक्तव्य देते हुए प्रो. जिनेन्द्र जैन ने अनेक उद्धरणों के माध्यम से अपभ्रंश प्राकृत का राजस्थानी भाषा पर पड़े प्रभाव के परिलक्षित होने के बारे में बताया तथा उसके वैशिष्ट्य को प्रतिपादित करते हुए भाषात्मक महत्त्व को स्पष्ट किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत अध्ययन के विद्यार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में लगभग 40 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

आ. नेमिचन्द्र का प्राकृत साहित्य हमारी सांस्कृतिक धरोहर- डॉ. वीरचन्द्र जैन

41वाँ व्याख्यान- 26 नवम्बर 2024

महारानी महेश्वरलता संस्कृत विद्यापीठ के प्राकृत एवं जैनदर्शन विभाग के सहायक आचार्य डॉ. वीरचन्द्र जैन ने संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के द्वारा आयोजित ऑनलाईन मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 26 नवम्बर, 2024 को आयोजित 'आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्तीकृत प्राकृत ग्रन्थों का दार्शनिक एवं भाषात्मक वैशिष्ट्य' विषयक 41वें विशेष व्याख्यान में आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती के महनीय योगदान पर विशेष प्रकाश डाला। उन्होंने बताया कि भारतीय संस्कृति को स्थायित्व देने में आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। अतः उनका प्राकृत साहित्य भारत की सांस्कृतिक धरोहर के रूप में स्वीकार की जा सकती है। आचार्य नेमिचन्द्र ने भारतीय परम्परा के अनेक ग्रन्थों का प्रणयन किया है। प्रो. दामोदर शास्त्री ने युवा अध्येता डॉ. वीरचन्द्र जैन को साधुवाद देते हुए बताया कि विषय की पूर्ति हेतु आचार्य नेमिचन्द्र के दार्शनिक योगदान पर उन्होंने विशेष प्रकाश डाला है लेकिन, उनके ग्रन्थों के भाषात्मक वैशिष्ट्य पर अधिक बल नहीं दिया। इसकी पूर्ति स्वयं प्रो. शास्त्री ने की। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र जैन ने अनेक उद्धरणों के माध्यम से आचार्य नेमिचन्द्र सिद्धान्त चक्रवर्ती के प्राकृत ग्रन्थों के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित करते हुए उनके दार्शनिक एवं भाषात्मक महत्त्व को स्पष्ट किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ प्राकृत अध्ययन के विद्यार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 35 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

भारतीय नाट्यशास्त्र को प्राकृत भाषाओं का योगदान- डॉ. राजेन्द्र सी. जैन

42वाँ व्याख्यान- 21 दिसम्बर 2024

कवि कुलगुरु कालिदास विश्वविद्यालय, रामटेक, नागपुर के संस्कृत विभाग के प्रभारी अध्यक्ष डॉ. राजेन्द्र सी. जैन ने संस्थान के प्राकृत एवं संस्कृत विभाग के द्वारा आयोजित ऑनलाईन मासिक व्याख्यानमाला के अन्तर्गत 21 दिसम्बर, 2024 को आयोजित 'भारतीय नाट्य साहित्य को प्राकृत भाषाओं का योगदान' विषयक 42वें विशेष व्याख्यान में बताया कि संस्कृत नाटकों में प्रयुक्त सामान्य पात्रों की भाषा के रुप में दर्शाया गया है। भारतीय नाट्यशास्त्र के विकास में प्राकृत भाषाओं का महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है। नाटकों में सामान्य व महिला पात्रों के विचार विनिमय का प्रमुख माध्यम प्राकृत भाषा ही रही है। भाष आदि से लेकर वर्तमान नाटककारों तक सभी ने अपने नाटकों में प्राकृत भाषा को महत्त्वपूर्ण स्थान दिया है। प्रो. दामोदर शास्त्री ने इस अवसर पर अनेक नाटकों के उदाहरणों के माध्यम से उन नाटकों में प्रयुक्त प्राकृत भाषाओं के वैशिष्ट्य पर प्रकाश डाला। अध्यक्षीय व्यक्तव्य में प्रो. जिनेन्द्र जैन ने प्राकृत भाषाओं के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित करते हुए कहा कि नाटकों में जहां एक ओर सामान्य पात्र प्राकृत का प्रयोग करते हैं वहीं दूसरी ओर महिला पात्रों के लिए भी प्राकृत भाषा का प्रावधान किया गया है। इसका तात्पर्य यह नहीं है कि प्राकृत भाषा संस्कृत से निम्न है या वे पात्र निम्न कोटि के है। इसका उद्देश्य तो यह है कि ये पात्र सुकुमार होते हैं और प्राकृत भाषा भी सुकुमार भाषा है। इसलिए प्राकृत भाषा में इन पात्रों के लिए उपयुक्त भाषा है। उन्होंने अनेक उद्धरणों के माध्यम से प्राकृत के वैशिष्ट्य को प्रतिपादित करते हुए उसका नाटकों में महत्त्व को स्पष्ट किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ विद्यार्थियों के मंगलाचरण से हुआ। स्वागत एवं विषय-प्रवर्तन डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने किया। कार्यक्रम के अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. सब्यसाची सांरगी ने किया। संयोजन डॉ. सत्यनारायण भारद्वाज ने किया। इस व्याख्यान में देश के विभिन्न क्षेत्रों से लगभग 25 प्रतिभागियों ने सहभागिता की।

पर्यावरण क्लब गतिविधियां

छात्राध्यापिकाओं ने 'पर्यावरण क्लब' द्वारा बताया स्वच्छता का महत्त्व

सेठ सूरजमल भूतोड़िया राजकीय विद्यालय में स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में गठित 'पर्यावरण क्लब' के तत्त्वावधान में स्वच्छता ही सेवा- 2024 के तहत स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 23 सितम्बर को किया गया। स्थानीय सूरजमल भूतोड़िया राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में मेघा वाधवानी ने अपशिष्ट प्रबंधन के '5-आर' के बारे में बताया कि फाइव 'आर' में मना करना, कम करना, पुनः उपयोग करना, पुनः प्रयोजन करना, पुनर्चक्रण करना शामिल है। इनसे स्वच्छता बनाए रखने एवं गंदगी एवं कचरा को कम करने में मदद मिलती है। लाछा चौधरी ने बताया कि गंदगी में पनपने वाले बैक्टीरिया, वायरस व फफूंदी, डायरिया, वायरल बुखार, पेट का संक्रमण तथा पीलिया का सबब बन सकता है। साफ-सफाई न रखना बीमारियों को आमंत्रित करने जैसा ही है। धीरज राठौर ने छात्राओं को स्वच्छता की महत्त्वता के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। हर्षिता सोनी ने विद्यार्थियों को पर्सनल हाइजीन के उपाय बताए। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन के निर्देशन में संचालित 'पर्यावरण क्लब' के क्लब मेंटर डॉ. गिरधारी लाल शर्मा के मार्गदर्शन में संचालित की जा रही इस 'पर्यावरण क्लब' के सदस्यों की टीम ने राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविका एवं छात्राध्यापिका खुशी जोधा ने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता से संबंधित शपथ दिलाई व वातावरण को स्वच्छ रखने की विधियों के बारे में जानकारी दी। कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य जयनारायण रेगर, सुरेंद्र सिंह जोधा, रुक्मणी रांकावत, प्रेमलता शर्मा, किरण दायमा, चंचल मिश्रा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन खुशी जोधा ने किया।

पर्यावरण क्लब कार्यक्रमों के तहत 'इको-ब्रिक्स' के निर्माण और उपयोग की विधि बताई

कस्तूरबा गांधी अल्पसंख्यक आवासीय विद्यालय में श्रमदान व पौधारोपण किया

संस्थान के शिक्षा विभाग में गठित 'पर्यावरण क्लब' के तत्वावधान में स्वच्छता ही सेवा- 2024 के तहत स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 23 सितम्बर को किया गया। स्थानीय सूरजमल भूतोड़िया राजकीय कन्या उच्च माध्यमिक विद्यालय में आयोजित इस कार्यक्रम में मेघा वाधवानी ने अपशिष्ट प्रबंधन के '5-आर' के बारे में बताया कि फाइव आर में मना करना, कम करना, पुनः उपयोग करना, पुनः प्रयोजन करना, पुनर्चक्रण करना शामिल है। इनसे स्वच्छता बनाए रखने एवं गंदगी एवं कचरा को कम करने में मदद मिलती है। लाछा चौधरी ने बताया कि गंदगी में पनपने वाले बैक्टीरिया, वायरस व फफूंदी, डायरिया, वायरल बुखार, पेट का संक्रमण तथा पीलिया का सबब बन सकता है। साफ-सफाई न रखना बीमारियों को आमंत्रित करने जैसा ही है। धीरज राठौर ने छात्राओं को स्वच्छता की महत्त्वता के बारे में विस्तार पूर्वक जानकारी दी। हर्षिता सोनी ने विद्यार्थियों को पर्सनल हाइजीन के उपाय बताए। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल.जैन के निर्देशन में संचालित 'पर्यावरण क्लब' के क्लब मेंटर डॉ. गिरधारी लाल शर्मा के मार्गदर्शन में संचालित की जा रही इस 'पर्यावरण क्लब' के सदस्यों की टीम ने राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविका एवं छात्राध्यापिका खुशी जोधा ने विद्यालय के सभी विद्यार्थियों को स्वच्छता से संबंधित शपथ दिलाई व वातावरण को स्वच्छ रखने की विधियों के बारे में जानकारी दी।

कार्यक्रम में विद्यालय के प्रधानाचार्य जयनारायण रेगर, सुरेंद्र सिंह जोधा, रुक्मणी रांकावत, प्रेमलता शर्मा, किरण दायमा, चंचल मिश्रा आदि उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन खुशी जोधा ने किया।

ग्राम भियाणी और खानपुर में स्वच्छता जागरूकता एवं पेपर बैग वितरण कार्यक्रम

विश्वविद्यालय के पर्यावरण क्लब द्वारा चलाया जा रहा है विशेष अभियान

संस्थान के शिक्षा विभाग में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन के निर्देशन में गठित पर्यावरण क्लब के तत्त्वावधान में 'स्वच्छता ही सेवा-2024' के तहत स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम का आयोजन 5 अक्टूबर को निकटवर्ती ग्राम भियाणी एवं खानपुर में किया गया। छात्राध्यापिकाओं ने इस कार्यक्रम से भियाणी और खानपुर गांव में पर्यावरण के प्रति जागरूकता फैलाने के लिए महत्त्वपूर्ण पहल की। उन्होंने गांव के प्रत्येक घर में जाकर प्लास्टिक का उपयोग नहीं करने और पेपर बैग का प्रयोग करने का संदेश दिया। छात्राध्यापिका खुशी जोधा, लाछा चौधरी और हर्षित सोनी ने गांव के राजकीय प्राथमिक विद्यालय में कार्यक्रम करके विद्यार्थियों को पेपर बैग बनाने की विधि बताई और उन्हें स्वच्छता का महत्त्व समझा कर जागरूक किया। इस अवसर पर उन्होंने स्कूल में पेपर बैग वितरित भी किए और साथ ही बच्चों को स्वयं भी बैग बनाने के लिए प्रेरित किया।

इस अवसर पर सरपंच हरदयाल सिंह रूलानिया ने छात्राध्यापिकाओं के प्रयास अपने गांव के लिए महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि इससे पर्यावरण की रक्षा के साथ ही बच्चों में जिम्मेदारी की भावना भी विकसित होगी। विद्यालय के प्राचार्य कैलाश सिंह ने भी छात्राध्यापिकाओं के अभियान व काम की सराहना करते हुए कहा कि ऐसे कार्यक्रम विद्यार्थियों में स्वच्छता के प्रति जागरूकता लाने में मददगार सिद्ध होंगे।

उन्होंने छात्राध्यापिकाओं के प्रयास को प्रेरणादायी और गांव में प्लास्टिक के उपयोग को कम करने और पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूकता बढ़ाने में मददगार बताया। उन्होंने कहा कि जैविभा विश्वविद्यालय के सहायक आचार्य डॉ. गिरधारी लाल शर्मा के मार्गदर्शन में चलाया जा रहा यह प्रयास स्थानीय समुदाय के लिए प्रेरणादायक रहेगा। इससे सभी को स्वच्छतापूर्ण जीवनशैली की ओर अग्रसर होने का अवसर मिल रहा है।

मंगलपुरा में स्वच्छता जागरूकता और घर-घर में किया पेपर बैग का वितरण

'स्वच्छता ही सेवा' के तहत छात्राध्यापिकाओं द्वारा आयोजित किया गया कार्यक्रम

निकटवर्ती ग्राम मंगलपुरा में 25 सितम्बर को ग्रामीणों को स्वच्छता के प्रति जागरूक किया गया और पर्यावरण रक्षा के लिए पॉलीथीन थैलियों का इस्तेमाल रोकने और पैपर बैग का इस्तेमाल करने के लिए प्रेरित करते हुए सबको पैपर बैग का वितरण भी किया गया। जैन विश्वभारती संस्थान के शिक्षा विभाग में प्रो. बी.एल. जैन के निर्देशन में गठित 'पर्यावरण क्लब' के तत्त्वाधान में संचालित किए जा रहे 'स्वच्छता ही सेवा 2024' अभियान के तहत स्वच्छता जागरूकता कार्यक्रम के तृतीय दिवस में छात्राध्यापिकाओं ने मंगलपुरा गांव में महत्त्वपूर्ण अभियान चलाते हुए गांव के निवासियों को प्लास्टिक के बजाय पेपर बैग का उपयोग करने के लिए प्रेरित किया और गांव में घर-घर जाकर पेपर बैग वितरित किए।

प्लास्टिक से हो रहे प्रदूषण की जानकारी दी

इस अवसर पर सरपंच चंपालाल मेघवाल ने कार्य की सराहना करते हुए कहा कि यह प्रयास पर्यावरण की रक्षा के लिए महत्त्वपूर्ण है। साथ ही सबको स्वच्छता और स्वास्थ्य के प्रति जागरूक करता है। छात्राध्यापिकाओं ने ग्रामीण लोगों को स्वच्छता के महत्त्व और प्लास्टिक प्रदूषण के दुष्प्रभावों के बारे में जानकारी दी तथा कहा कि हम सबको मिलकर पर्यावरण की सुरक्षा करनी होगी और इसके लिए उठाए जाने वाले छोटे-छोटे कदम भी महत्त्वपूर्ण बनेंगे। विश्वविद्यालय के आचार्य डॉ. गिरधारी लाल शर्मा के मार्गदर्शन में हुए इस कार्यक्रम के आयोजन में सीमा भाटी, लाछा चौधरी, मेघा वाधवानी, हर्षिता सोनी, धीरज राठौड़ व खुशी जोधा द्वारा मंगलपुरा गांव में करवाया गया। इस अभियान से गांव में सकारात्मक बदलाव लाने का एक प्रयास हुआ है, इससे अन्य लोग भी प्रेरित होंगे। छात्राध्यापिकाओं द्वारा करवाए गए इस कार्यक्रम से गांव में स्वच्छता के प्रति जागरूकता बढ़ाने में भूमिका रहने के साथ ही ग्रामीणों में 'स्वभाव स्वच्छता- संस्कार स्वच्छता' की भावना को बल मिला है।

एंटी रैगिग सेल/ स्क्वॉड

सात दिवसीय एंटी रैगिंग कार्यशाला आयोजित
छात्राओं को एंटी रैगिंग नियमों की जानकारी देकर किया सचेत

संस्थान में कुलपति प्रो. बी.आर. दूगड़ के नेतृत्व में शिक्षा विभाग में सात दिवसीय (12-18 अगस्त) एंटी रैगिंग कार्यशाला आयोजित की गई। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र में 12 अगस्त को एंटी रैगिग सेल के समन्वयक एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने रैगिग के खतरों की

जानकारी छात्राओं को देते हुए बताया कि संस्थान में प्रवेश के समय से ही रैगिंग पूरी तरह से प्रतिबंधित है। यदि कोई दोषी पाया जाता है, तो उसे अपने इस अपराध के लिए दंडित किया जा सकता है। उन्होंने बताया कि प्रिंट, वेबसाइट, बैनर और प्रॉस्पेक्टस के 12 से 14 में रैगिंग रोकने के लिए नियम लिखे हुए है। एंटी-रैगिंग हेल्पलाइन और संस्थान के महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों के टेलीफोन नंबर बैनर में मुद्रित हैं। सभी छात्र 'एंटीरैगिंग डॉट इन' वेबसाइट पर ऑनलाइन अंडरटेकिंग फॉर्म अनिवार्य रूप से भरें। उन्होंने छात्राओं को एंटी रैगिग नियमों के प्रावधानों और निर्धारित दंडों से अवगत कराया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यपिकाएं उपस्थित रहीं।

रैगिंग और नशावृति शिक्षा के लिए अवरोधक होते हैं, रोका जाना जरूरी

कार्यशाला के दूसरे दिन 13 अगस्त को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में एंटी रैगिग कार्यशाला का आयोजन किया गया। कार्यशाला में एंटी रैगिग स्क्वॉड के समन्वयक व कुलसचिव डॉ. ए.पी. कौशिक ने छात्राओं को एंटी रैगिग के बारे में छात्राओं को बताया और कहा कि हमें रैगिग रोकने के साथ नशावृत्ति को भी रोकना है। ये दोनों पहलू शिक्षा में अवरोधक होते हैं, अतः सावधान रह कर इन्हें आगे बढने से रोकना चाहिए। एंटी रैगिग सेल के समन्वयक एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने संस्थान में रैगिंग पूरी तरह से प्रतिबंधित बताया और कहा कि यहां समय-समय पर एंटी रैगिग स्क्वॉड द्वारा औचक निरीक्षण भी किया जाता है। रैगिग से सम्बन्धित अनेक कार्यक्रम भी संस्थान में आयोजित किये जाते रहते हैं। इसी कारण यहां रैगिग से सम्बन्धित कोई घटना आज तक घटित नहीं हुई है। इस दृष्टि से यह अनूठा संस्थान है। यहां के सभी विद्यार्थी मित्रता, प्रेम और सौहार्दपूर्वक रहते हैं। जाति, लिंग, धर्म, भाषा, प्रांत तथा छोटे-बड़े के आधार पर यहां कोई भेदभाव नहीं किया जाता। समय-समय पर छात्राओं के साथ मीटिंग करके उनको इस बारे में अवगत कराया जाता है और उन्हें एंटी-रैगिंग के हेल्पलाइन और संस्थान के महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों के टेलीफोन नंबर से अवगत कराया जाता है। उन्होंने सभी छात्राओं को इस सम्बंध में एंटी रैगिंग वेबसाइट का एड्रेस बताते हुए वहां पर ऑनलाइन अंडरटेकिंग फॉर्म अनिवार्य रूप से भरने के लिए कहा। एंटी रैगिग सेल की सदस्या अभिलाषा स्वामी ने सभी छात्राओं को एंटी रैगिग फॉर्म भरने की प्रक्रिया को बताया। अंत में डॉ. आभा सिंह ने सेक्सुअल हर्समेंट एवं ग्रीवेंस सेल की भी जानकारी दी और आभार ज्ञापन किया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाडी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, डॉ. मधुकर दाधीच, डॉ. आभा सिह, प्रेयस, देशना चारण आदि एवं सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

नियमों की जानकारी दी

इससे पूर्व यहां शिक्षा विभाग में एंटी रैगिंग कार्यशाला में एंटी रैगिग सेल के समन्वयक एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने एंटीरेंगिग के खतरों की जानकारी छात्राओं को दी और बताया कि रैगिंग का दोषी पाया जाने पर उसे इस अपराध के लिए दंडित किया जा सकता है। उन्हेंने बताया कि प्रिंट, वेबसाइट, बैनर और प्रॉस्पेक्टस के बारह से चौदह में रैगिंग रोकने के लिए नियम लिखे हुए है। एंटी-रैगिंग हेल्पलाइन और संस्थान के महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों के टेलीफोन नंबर बैनर में मुद्रित हैं। सभी छात्र 'एंटीरैगिंग डॉट इन' वेबसाइट पर ऑनलाइन अंडरटेकिंग फॉर्म अनिवार्य रूप से भरें। उन्होंने छात्राओं को एंटी रैगिग नियमों के प्रावधानों और निर्धारित दंडों से अवगत कराया।

पीजी स्टुडेंट्स की कार्यशाला

संस्थान के स्नातकोत्तर विभाग में 14 अगस्त को (तृतीय दिवस) 'रैगिंग अपराध निषेध कार्यशाला' का आयोजन किया गया। एंटी रैगिग सेल एवं एंटी रैगिंग स्क्वॉड के तत्त्वावधान में आयोजित की जा रही एंटी रैगिंग कार्यशाला में एंटी रैगिग सेल के समन्वयक एवं शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने रैगिंग अपराध निषेध की जानकारी छात्राओं को दी और कहा कि धर्म, जाति, लिंग, क्षेत्र के आधार पर किसी को भी शारीरिक और मानसिक पीड़ा देना रैगिंग के अंतर्गत आता है। इससे पूरी तरह से बचना चाहिए। रैगिग संस्थान में पूर्णतः प्रतिबंधित है। इसके साथ ही नशामुक्ति कार्यक्रम का भी आयोजन किया गया, जिसमें मादक पदार्थों का सेवन और तस्करी से समाज को बचाने पर जोर दिया गया तथा बताया गया कि नशे के कारण स्वास्थ्य की समस्याएं, परिवार टूटने की समस्याएं, सामाजिक समस्याएं, बलात्कार, हत्या आदि कृत्य बढते हैं।

एंटी रैगिंग का ऑनलाइन अंडरटेकिंग फॉर्म अनिवार्य रूप से भरें

एंटी रैगिग स्क्वाड के समन्वयक कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक ने कहा कि रैगिंग में किसी को गाली बकना, नैतिकता भंग करना, धमकी देना, चोट पहुंचाना आदि को रोकना एंटी-रैगिंग है। रैंगिग से सम्बन्धित कोई दिक्कत आने पर एंटी-रैगिंग के हेल्पलाइन और संस्थान के महत्त्वपूर्ण पदाधिकारियों के टेलीफोन नंबर चस्पा है, उसकी मदद से अवगत करावें। समय-समय पर एंटी रैगिग स्क्वाड द्वारा औचक निरीक्षण किया जाता है। सभी छात्राओं को एंटी रैगिंग वेब साइट पर ऑनलाइन अंडरटेकिंग फॉर्म अनिवार्य रूप से भरना चाहिए। डॉ. कौशिक ने इसके साथ ही नशा मुक्ति को भी रोकने पर बल दिया और कहा कि रैगिंग और नशा करना दोनों ही शिक्षा के अवरोधक तत्त्व हैं, इनसे बचना चाहिए। शान्ति, समृद्धि और खुशी के लिए नशा को रोकना चाहिए। कार्यक्रम में डॉ. लिपि जैन, डॉ. विनोद कस्वां, डॉ. बलवीर सिंह एवं अहिंसा और शान्ति विभाग, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की छात्राएं उपस्थित रही।

सकारात्मक चिंतन की ओर बढें सभी विद्यार्थी

एंटी रैगिंग जागरूकता कार्यक्रम में 17 अगस्त को कुलसचिव डॉ. अजयपाल कौशिक ने कहा है कि रैगिंग एक सामाजिक बुराई है, जिसमें किसी भी व्यक्ति के मान-सम्मान को हनन करते हुए उसको अपमानित किया जाता है, जिससे उसको शारीरिक और मानसिक कष्ट झेलते हुए जबरन किसी कार्य के लिए बाध्य होना पड़ता है। यह बहुत संवेदनशील मुद्दा है, जिसके बारे में सभी को चिंतन करते हुए सदैव इसका विरोध करना चाहिए। उन्होंने सभी विद्यार्थियों को रैगिंग से दूर रहते हुए सकारात्मक चिंतन हेतु प्रोत्साहित किया। साथ ही डॉ. कौशिक ने नशीले पदार्थों के नुकसान के बारे में बताते हुए विद्यार्थियों को अधिकाधिक पाठ्य-सहगामी क्रियाओं में प्रवृत रहने के लिए प्रेरित किया।

नशा एवं रैगिंग से दूर रहने को किया प्रेरित

कार्यक्रम में एंटी रैगिंग सेल एवं नशा मुक्ति कार्यक्रम के समन्यवक प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि विद्यार्थियों को सदैव अपने उद्देश्य पर केन्द्रित रहते हुए नशे जैसी घातक बुराई से दूर रहना चाहिए। युवा शक्ति के लगातार नशीले पदार्थों के सेवन में लिप्त होना चिंताजनक है। गुटखा, मद्यपान, अफीम, हेरोइन जैसे नशे के कारण कैंसर जैसी घातक बीमारी तेजी से फैल रही है, जिनको रोकना हमारी नैतिक जिम्मेदारी है। उन्होंने विद्यार्थियों को नशे एवं रैगिंग जैसी विकृतियों से बचने के लिए प्रेरणा प्रदान की। कार्यक्रम में बीएड की छात्राध्यापिका खुशी जोधा ने पीपीटी द्वारा सभी विद्यार्थियों को एंटी रैगिंग फॉर्म की समस्त प्रक्रिया एवं इसके विभिन्न आयामों के बारे में विस्तार से जानकारी दी। इस अवसर पर प्रो. जैन ने छात्राध्यापिका खुशी जोधा के कार्यों की सराहना करते हुए उनको प्रमाण पत्र द्वारा पुरस्कृत करने की घोषणा की। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के सभी विद्यार्थियों सहित डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरीराज भोजक, खुशाल जांगिड़ आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के अंत में सेल की सदस्य एवं

शांति : मानव - कल्याण का आधार- विक्की नागपाल (पुलिस उप-अधीक्षक)

संस्थान के अहिंसा एवं शांति विभाग द्वारा अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस पर 21 सितम्बर को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। लाडनूं के उप पुलिस अधीक्षक विक्की नागपाल ने कार्यक्रम में मुख्य वक्ता के रूप में बताया कि जिस समाज में शांति एवं व्यवस्था रहती है, वह प्रगति करता है और उससे मानव कल्याण को बढ़ावा मिलता है। उन्होंने अपने उद्बोधन में बताया कि समाज में शांति व्यवस्था बनाए रखना पुलिस प्रशासन का प्रमुख दायित्व है। पुलिस प्रशासन इस हेतु हमेशा सक्रिय भी रहता है। पुलिस महकमे में शांति स्थापना करने के लिए समाज में शांति स्थापना बनाए रखने के लिए गठित की जाने वाली शांति समिति एक महत्त्वपूर्ण आधार होती है। इन समितियों के माध्यम से समाज में शांति व्यवस्था बनाए रखने में काफी सहयोग मिलता है।

शांति का भाव विचारों में समाहित करना जरूरी

विभागाध्यक्ष डॉ. बलबीर सिंह ने कहा कि शांति एवं अशांति दो मानव स्वभाव के सहज लक्षण है, यदि प्रत्येक मनुष्य शांति बनाए रखने का भाव अपने विचारों में समाहित कर ले तो व्यक्तिगत स्तर से लेकर अंतरराष्ट्रीय स्तर तक शांति बनाए रखना सहज एवं आसान हो जाता है। समाज का प्रत्येक व्यक्ति सह-अस्तित्व के भाव को स्वीकार कर ले तो हिंसा के प्रभाव को काफी हद तक कम किया जा सकता है। छात्रा जीनत बानो ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए। कार्यक्रम में स्वागत वक्तव्य व विषय प्रवर्तन डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़ ने प्रस्तुत किया, जिसमें उन्होंने सभी का स्वागत करते हुए अंतर्राष्ट्रीय शांति दिवस मनाए जाने के उद्देश्यों पर प्रकाश डाला। विश्व शांति की दिशा में किए गए प्रयासों पर प्रकाश डालते हुए राष्ट्रीय स्तर पर शांति स्थापित करने के लिए बनाए गए संगठनों का उल्लेख किया। कार्यक्रम का शुभारंभ विभाग की छात्रा टीना, मुस्कान एवं सारा के मंगल-संगान से हुआ। सहायक आचार्य डॉ. लिपि जैन ने आभार व्यक्त करते हुए इस बात पर जोर दिया कि शांति स्थापित करने का प्रयास व्यक्ति को स्वयं से शुरू करना चाहिए। यदि प्रत्येक व्यक्ति इस दिशा में अग्रसर होगा तो स्वतः ही समाज में शांति बढ़ावा मिलेगा। अतः हमें इस पुनीत कार्य की शुरुआत खुद से करनी चाहिए। कार्यक्रम का संचालन विभाग के विद्यार्थी नरेंद्र सिंह राठौड़ ने किया। इस कार्यक्रम में संस्थान के संकाय सदस्य, शोधार्थी एवं विद्यार्थी भी उपस्थित रहे। प्रतिभागियों की संख्या 80 के करीब रही।

एन.एस.एस.

संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना (एन.एस.एस.) की दो इकाइयां संचालित हैं। इन दोनों इकाइयों की स्वयंसेविकाओं द्वारा कुलपति प्रो. बच्छराज जी दूगड़ के निर्देशन व मार्गदर्शन तथा प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह व डॉ. आभासिंह के नेतृत्व में पूरे साल भर विविध राष्ट्रीय-सामाजिक सेवाओं, व्यक्तित्व विकास आदि की गतिविधियों का संचालन किया जाता है। प्रस्तुत है इन गतिविधियों का विवरण-

'हर घर तिरंगा' रैली का आयोजन, लोगों को किया प्रेरित

राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में शिक्षा मंत्रालय भारत सरकार तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार

14 अगस्त को 'हर घर तिरंगा' रैली का आयोजन किया गया। रैली की शुरुआत संस्थान के मुख्य द्वार से हुई। पूरे परिसर और आसपास के इलाकों में स्वयंसेविकाओं ने हाथों में तिरंगा लेकर देशभक्ति के नारों के साथ रैली को आगे बढ़ाया और लोगों को अपने घरों पर तिरंगा लगाने के लिए प्रेरित किया गया। रैली में संस्थान के छात्रों, शिक्षकों और स्थानीय निवासियों ने भी बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम का मुख्य उद्देश्य लोगों में देशभक्ति की भावना को जागृत करना और उन्हें अपने देश के प्रति गर्व महसूस कराना था। रैली के दौरान लोगों को तिरंगे के महत्त्व और इसके सही तरीके से उपयोग के बारे में भी जानकारी दी गई। रैली का आयोजन इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के मार्गदर्शन में किया गया। रैली के दौरान डॉ. अमिता जैन, डॉ. ममता परीक, स्नेहा शर्मा, डॉ. सुनीता इंदौरिया आदि संकाय सदस्य और विद्यार्थी उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय हर घर तिरंगा अभियान

इसी प्रकार विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में 'तीन दिवसीय हर घर तिरंगा अभियान' का आयोजन किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने घर घर मे तिरंगे के महत्त्व के प्रति जागरूकता फैलाने और झंडा फहराने के लक्ष्य को पूर्ण करने में छात्राओं के योगदान देने का आह्वान किया। विभाग ने छात्रों के साथ एक भव्य तिरंगा रैली का आयोजन किया, जिससे जन-जन में जागरूकता व देश के प्रति समर्पण को जीवंत रखा जाने के नारे लगाए गए। इसमें शिक्षा विभाग के सभी छात्राएं और सभी शिक्षकगण उपस्थित रहे।

खेल सप्ताह की विविध गतिविधियाँ

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वाधान में बैडमिंटन खेल का आयोजन 28 अगस्त को किया गया। इसमें अनुराग, आयशा राव, मुस्कान बानो, अमीरा, भावना सेन, ममता हटीला, दीपिका, सुप्रिया आदि छात्राओं ने उत्साहपूर्वक पूर्वक भाग लिया। खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह, खेल समन्वयक डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, डॉ. लिपि जैन, खेल प्रशिक्षक दशरथ सिंह एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

योगासन, प्रेक्षाध्यान, महाप्राण ध्वनि आदि का अभ्यास कर फिट रहने की शपथ ली

संस्थान में चल रहे खेल सप्ताह के अंतिम दिन 1 अप्रेल को राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में योगासन व प्रेक्षाध्यान करवाया गया।

खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि खेल सप्ताह के समापन के अवसर पर स्वयंसेविकाओं को ताड़ासन, वृक्षासन, सूर्य नमस्कार, धनुरासन, गौमुखासन आदि विभिन्न आसन करवाए गए। उन्हें योगासनों के साथ ही प्रेक्षाध्यान का अभ्यास भी करवाया गया, जिसमें कायोत्सर्ग, दीर्घश्वास प्रेक्षा, ज्योति केंद्र प्रेक्षा एवं ओम् के उच्चारण जैसी क्रियाएं करवाई गई। इससे पूर्व सदैव फिट रहने के शपथ ग्रहण कार्यक्रम में एनएसएस की छात्राओं ने फिट बने रहने, प्रतिदिन आधे घंटे का अभ्यास करने तथा लोगों

को भी फिट रहने के लिए जागरूक करने की शपथ ग्रहण की। यह शपथ ग्रहण राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में

आयोजित 'फिट इंडिया शपथ कार्यक्रम' में की। युवा मामले एवं खेल मंत्रालय भारत सरकार के निर्देशानुसार आयोजित खेल सप्ताह में विभिन्न खेल प्रतियोगिताएं, फिट रहने की शपथ एवं आसन व यौगिक क्रियाएं आयोजित की गई, जिनमें संस्थान के विद्यार्थियों ने प्रतिदिन रुचिपूर्वक भाग लिया। कार्यक्रम में खेल सचिव डॉ. बलबीर सिंह, राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, कुशाल जांगिड़, स्नेहा शर्मा, देवीलाल कुमावत आदि उपस्थित रहे।

तीन दिवसीय 'यह दिवाली, माय भारत वाली' कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों की स्वयंसेविकाओं द्वारा त्रिदिवसीय (26-30 अक्टूबर) 'यह दिवाली, माय भारत वाली' कार्यक्रम का आयोजन किया। कार्यक्रम के दौरान तीन दिनों में विभिन्न अस्पतालों में पहुंच कर मरीजों में आत्मविश्वास बढाने और उनके साथ दीपावली की खुशियों को साझा करने का प्रयास किया गया। इसके अलावा ट्रेफिक पुलिस को सहयोग करते हुए यातायात नियंत्रण एवं यातायात नियमों से लोगों को अवगत करवाने में भी हिस्सेदारी निभाई। स्वयंसेविकाओं ने शहर के मुख्य बाजार में सफाई अभियान भी चलाया तथा आमजन को स्वच्छता के महत्त्व से परिचित करवाते हुए अपने आसपास में सफाई रखने के लिए प्रेरित किया। साथ ही सभी लोगों को 'माय भारत' पोर्टल की उपयोगिता से वाकिफ करवाया गया।

अस्पतालों में जाकर दी अपनी सेवाएं

कार्यक्रम के पहले दिवस स्वयंसेविकाओं ने 28 अक्टूबर को विभिन्न अस्पतालों में जाकर अपनी सेवाएं दीं। इस विशेष पहल का उद्देश्य दिवाली के पर्व को मरीजों और उनके परिवारों के साथ साझा करना और उन्हें खुशियों का अहसास कराना था। इस कार्यक्रम का नेतृत्व एनएसएस स्वयंसेविका खुशी जोधा, मीनाक्षी भंसाली, स्नेहा बोहरा, राजनन्दिनी, गार्गी, हर्षिता स्वामी, और ज्योत्सना ने किया। स्वयंसेविकाओं ने स्थानीय जैन अस्पताल, श्रीराम मंगलम अस्पताल और डॉ. बी.एस. टंडन अस्पताल का दौरा किया। छात्राओं ने लोगों को 'माय भारत' पोर्टल के बारे में भी अवगत कराया, जिसमें समाज सेवा, सांस्कृतिक धरोहर और एकता का संदेश शामिल है। यह पहल युवाओं को सक्रिय रूप से समाज के उत्थान में शामिल होने के लिए प्रेरित करती है। डॉ. बी.एस. टंडन ने कार्यक्रम को मरीजों का मनोबल बढ़ाने वाला बताया तथा कहा कि इससे मरीजों को यह अहसास होता है कि समाज उनके साथ है। श्रीराम मंगलम अस्पताल के डॉ. सुरेंद्र सक्सेना ने इस पहल की सराहना करते हुए कहा कि इससे सेवा और सहयोग की भावना को प्रोत्साहन मिलता है। ऐसे कार्यक्रम त्यौंहार के समय करना बहुत महत्त्वपूर्ण है। इस कार्यक्रम को राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम की प्रभारी डॉ. आभा सिंह और इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह चारण के मार्गदर्शन में सफलतापूर्वक आयोजित किया गया।

ट्रेफिक नियंत्रण व समझाइश में निभाई भूमिका

कार्यक्रम के द्वितीय दिवस 29 अक्टूबर को स्वयंसेविकाओं ने ट्रैफिक पुलिस के साथ मिलकर ट्रैफिक नियंत्रण में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई। कार्यक्रम का उद्देश्य दीवाली के दौरान सड़क पर सुरक्षा सुनिश्चित करना और आम जनता में जागरूकता फैलाना था। इस अवसर पर भी राष्ट्रीय सेवा योजना की इन स्वयंसेविकाओं ने माय भारत पोर्टल के बारे में जानकारी प्रदान की। ए.एस.आई. पर्वत सिंह ने कहा, इस कार्यक्रम के माध्यम से लोगों को न केवल ट्रैफिक नियमों के प्रति जागरूक किया जा रहा है, बल्कि माय भारत पोर्टल के लाभों के बारे में भी बताया जा रहा है। यह पोर्टल नागरिकों को विभिन्न सरकारी सेवाओं तक पहुंच प्रदान करता है। उन्होंने स्वंयसेवकों की मेहनत की सराहना की और कहा कि इस प्रकार के कार्यक्रमों से समाज में सकारात्मक बदलाव लाने में मदद मिलती है। कार्यक्रम के दौरान कांस्टेबल प्रेमदास और भगवानराम भी उपस्थित रहे। उन्होंने स्वंयसेवकों के प्रयासों का समर्थन करते हुए कहा, युवा वर्ग की यह पहल सबको सड़क सुरक्षा और नागरिक जागरूकता को प्राथमिकता देने के लिए प्रेरित करता है।

शहर के मुख्य बाजार में चलाया सफाई अभियान

कार्यक्रम के तीसरे दिवस 30 अक्टूबर को एनएसएस स्वयंसेविकाओं ने को स्थानीय बाजार में सफाई अभियान चलाया। इस अभियान के दौरान, उन्होंने न केवल बाजार की सफाई की, बल्कि लोगों को 'माय भारत पोर्टल' के लाभों और उसके उद्देश्यों से भी अवगत कराया। स्वयंसेविकाओं ने पहली पट्टी बाजार और सदर बाजार की मुख्य सड़कों और गलियों की सफाई की, जिससे आसपास का वातावरण साफ-सुथरा बना। इसके साथ ही, उन्होंने स्थानीय निवासियों से संवाद करते हुए स्वच्छता के महत्त्व को समझाया। उन्होंने बताया कि एक साफ और स्वस्थ वातावरण कैसे हमारे जीवन की गुणवत्ता को बेहतर बना सकता है।

स्वयंसेविकाओं ने चलाया विश्वविद्यालय में सफाई अभियान

राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाइयों की स्वयंसेवी कार्यकर्ताओं द्वारा विश्वविद्यालय परिसर में 25 अक्टूबर को श्रमदान करके सफाई का कार्य किया गया। 'स्वच्छता कैंपेन 04' के अंतर्गत एनएसएस संयोजिका डॉ. आभा सिंह एवं द्वितीय इकाई प्रभारी डॉ. बलवीर सिंह के मार्गदर्शन एवं निर्देशन में राष्ट्रीय सेवा योजना की इन कार्यकर्ताओं द्वारा विश्वविद्यालय के विभिन्न विभागों के ऑफिस, लैब, डंपिंग एरिया की सफाई की गई एवं एकत्रित कचरे को डिस्पोज किया गया। कार्यकर्ताओं ने आचार्य कालू कन्या

महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग के विभिन्न ऑफिस कक्षा रूम, स्टोर रूम, विभिन्न लैब की सफाई का कार्य किया एवं आर्ट एंड क्राफ्ट के सामान की प्रदर्शनी गैलरी का निर्माण किया।

मौहल्लों में घर-घर जाकर स्वयंसेविकाओं ने किया स्वच्छता के लिए जागरूक

'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के तहत राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के तत्त्वावधान में संस्थान में चलाए जा रहे स्वच्छता पखवाड़े

के अंतर्गत एनएसएस की स्वयंसेविकाओं एवं स्वयंसेवकों ने 23 सितम्बर को यहां आसपास के मोहल्लों के निवासियों को स्वच्छता बनाए रखने के लिए जागरूक किया। स्वयंसेविकाओं एवं स्वयंसेवकों ने शहरिया बास, रामदेव मंदिर, उतरादा जाटों का बास के आसपास के घरों में जाकर स्वच्छता बनाए रखने एवं अपने आसपास के क्षेत्र को स्वच्छ रखने के लिए प्रेरित किया। अभियान के क्रियान्वयन के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह स्वयंसेवकों के साथ स्वयं उपस्थित रहे और उनका मार्गदर्शन किया।

स्वच्छता के लिए नगरपालिका ही नहीं, संस्थाएं और हर व्यक्ति जिम्मेदार- खींची

राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्त्वावधान में 24 सितम्बर को राष्ट्रीय सेवा योजना दिवस मनाया गया। इस अवसर पर

'स्वच्छता ही सेवा अभियान' में स्वयंसेविकाओं द्वारा एकत्रित किए गए एकल प्लास्टिक सामग्री के संगृहीत कचरे को नगर पालिका के कचरा वाहन में डालकर सफाई का संदेश दिया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि नगर पालिका लाडनूं के उपाध्यक्ष मुकेश खींची ने युवाओं में समाज सेवा की भावना जागृत करने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना को उपयोगी बताया। उन्होंने चलाए जा रहे 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान के बारे में बताया कि स्वच्छता बनाए रखना केवल नगरपालिकाओं का दायित्व ही नहीं, बल्कि अन्य संस्थाओं और समस्त नागरिकों की भी जिम्मेदारी है। इसमें जन-जन की भागीदारी आवश्यक है। इसके लिए जन जागरूकता के लिए विभिन्न कार्यक्रम एवं अभियानों का आयोजन आवश्यक है।

युवाओं को मिलता है समाजसेवा का अवसर

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि राष्ट्रीय सेवा योजना की इकाइयों के माध्यम से युवा वर्ग समाज सेवा में अपना योगदान दे सकता है। जैन विश्वभारती संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयां इस दिशा में क्रियाशील है और हाल ही में चल रहे 'स्वच्छता ही सेवा' अभियान को सफल बनाने में स्वयंसेविकाएं अपनी सक्रिय भूमिका का निर्वाह कर रही है। एनएसएस की इकाई द्वितीय के प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह ने प्रारम्भ में स्वागत वक्तव्य के दौरान राष्ट्रीय सेवा योजना के उद्देश्यों एवं इसमें आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का संचालन राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने किया।

एनएसएस के रक्तदान शिविर में 53 छात्राओं ने किया रक्तदान

राष्ट्रीय सेवा योजना (एनएसएस) की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में 1 अक्टूबर को राष्ट्रीय स्वैच्छिक रक्तदान दिवस के अवसर पर आयोजित एक दिवसीय रक्तदान शिविर का अवलोकन करते हुए कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने कहा, रक्तदान से न केवल किसी व्यक्ति की जान बचाई जा सकती है, बल्कि इससे रक्त देने वाले व्यक्ति को स्वस्थ बनने में मदद भी मिलती है। इसी कारण लोग स्वेच्छा से रक्तदान करके दूसरों की जिंदगी बचा रहे हैं। उन्होंने एनएसएस स्वयंसेविकाओं को प्रोत्साहित करते हुए कहा कि प्रतिदिन जितने रक्त की जरूरत मरीजों व घायलों के लिए होती है, उसका 50 फीसदी ही उपलब्ध हो पाता है। इस कारण रक्त की आवश्यकता बनी रहती है और इससे आपातकाल स्थितियों में रोगी की जान बचाने में हम सहायक बन सकते हैं। इसी कारण रक्तदान को महादान कहा जाता है। रक्तदान शिविर का शुभारम्भ आचार्य काल कन्या महाविद्यालय में किया गया। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी भी उपस्थित रहे। शिविर में स्वयंसेविकाओं के अलावा अन्य छात्राओं एवं स्टाफ के सदस्यों ने भी रक्तदान में भाग लिया। शिविर में कुल 53 यूनिट रक्त संग्रहित किया गया।

राजकीय चिकित्सालय स्थित ब्लड बैंक के स्टाफ ने शिविर में स्वास्थ्य परीक्षण एवं सक्त संग्रहण के लिए भी अपनी सेवाएं प्रदान कीं। एनएसएस प्रभारी डॉ. आभा सिंह ने अंत में रक्तदाताओं, ब्लड बैंक कार्मिकों आदि सबके प्रति आभार ज्ञापित किया। इस अवसर पर डॉ. लिपि जैन, डॉ. विष्णु कुमार, प्रेयस सोनी, शरद जैन, जगदीश यायावर, डॉ. मनीषा जैन, दशरथ सिंह आदि उपस्थित रहे।

प्रमाण पत्र देकर किया सम्मानित

एनएसएस की ओर से आयोजित किए गए रक्तदान शिविर ने रक्तदान करने वाली रक्तदाता स्वयंसेविकाओं एवं शिक्षिकाओं को 5 अक्टूबर को एक कार्यक्रम आयोजित करके सम्मानित किया गया। समाज में सेवा की भावना को मजबूत बनाने के लिए किए गए इस सराहनीय कार्य के लिए शिविर में भाग लेने और रक्तदान करने वाली छात्राओं व शिक्षकों को प्रमाण पत्र वितरित करते हुए उनके कार्य की प्रशंसा की गई। शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने रक्तदान के महत्त्व को बताते हुए उसे जरूरतमंदों की सहायता करने के साथ समाज में एकता और सहयोग की भावना को भी बढ़ावा देने वाला बताया। राष्ट्रीय सेवा योजना की संयोजक डॉ. आभा सिंह व स्वयंसेविकाओं ने इस शिविर में विशेष योगदान करते हुए स्वेच्छा से रक्तदान किया था। सम्मान कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. विष्णु कुमार, देवीलाल कुमावत, डॉ. ममता पारीक, खुशाल जांगिड़, स्नेहा शर्मा वह अन्य संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

स्वयंसेविकाओं ने लगाए पंछियों के लिए परिंडे, चुग्गा-पात्र व घोंसले

राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों एवं शिक्षा विभाग में गठित पर्यावरण क्लब व विज्ञान क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 5 अक्टूबर को पक्षियों के संरक्षण और उनकी देखभाल के लिए महत्त्वपूर्ण पहल करते हुए संस्थान के परिसर में पानी परिंडे, घोंसले और दाना बॉक्स लगाए गए हैं। इनसे पक्षियों को पानी और भोजन मिल सकेगा और साथ ही उनके रहने के लिए सुरक्षित स्थान भी उपलब्ध हो सकेगा। कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ ने इस अवसर पर कहा कि प्रकृति का हम सबके लिए महत्त्वपूर्ण स्थान है। हमें इसकी रक्षा की जिम्मेदारी उठानी चाहिए। परिंडा, घोंसलों आदि के छोटे-छोटे कदमों से जीव-जंतुओं के लिए सकारात्मक बदलाव लाया जा सकता है। उन्होंने राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाओं को सक्रिय रूप से निरन्तर प्रयासरत रहने और अपने आसपास के पर्यावरण को संरक्षित करने में सहयोग देने के लिए प्रेरित किया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने पक्षियों को पूरे पारिस्थितिकी तंत्र के लिए महत्त्वपूर्ण बताया और कहा कि उनकी रक्षा व संरक्षण की दिशा में परिंडे,

चुग्गा पात्र और कृत्रिम घोंसले का प्रयास काफी महत्त्व रखता है। इन गतिविधियों से पक्षियों की सुरक्षा में मदद मिलने के साथ ही पर्यावरण के प्रति जागरूक करने का अवसर मिलेगा। उन्होंने प्रकृति के प्रति संवेदनशील बनने और उसमें योगदान देने के लिए विद्यार्थियों से आग्रह किया। कार्यक्रम के लिए गौसेवा टीम लाडनूं ने परिंडे की सामग्री उपलब्ध करवाई। कार्यक्रम राष्ट्रीय सेवा योजना की संयोजक डॉ. आभा सिंह, विज्ञान क्लब के प्रभारी डॉ. विष्णु कुमार, गौसेवा टीम लाडनूं के गौसेवक अमित डांवर के मार्गदर्शन से हुआ। कार्यक्रम में गौसेवा टीम लाडनूं के सूर्य प्रकाश जांगिड़, गजेंद्र भोजक, शिक्षा विभाग के संकाय सदस्य, विज्ञान क्लब की छात्राएं व राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविकाएं व अन्य विद्यार्थी उपस्थित रहे।

स्वच्छता पखवाड़े के तहत स्वयंसेविकाओं ने किया श्रमदान

संस्थान में चल रहे स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाई की स्वयंसेविकाओं ने 28 सितम्बर को विश्वविद्यालय परिसर को स्वच्छ रखने में अपना योगदान देते हुए परिसर के महत्त्वपूर्ण

स्थलों पर साफ-सफाई की एवं स्वयंसेविकाओं ने परिसर को स्वच्छ बनाए रखने के लिए यह प्रतिबद्धता भी व्यक्त की कि वे प्लास्टिक के समान का कम से कम उपयोग करेंगे। सिंगल यूज प्लास्टिक सामग्री को इधर-उधर फेंकने की बजाय संग्रहित कर उसका निस्तारण करने में योगदान देंगे। साथ ही उन्हांने अपने घर के आसपास के क्षेत्र को भी स्वच्छ बनाए रखने का संकल्प लिया। स्वयंसेवकों ने खेल मैदान एवं पार्किंग परिसर के आसपास सफाई की और समाज में स्वच्छता बनाए रखने का संदेश दिया। यह गतिविधियां राष्ट्रीय सेवा योजना के समन्वयक व इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह दोनों के मार्गदर्शन में की गई।

पर्यावरण संरक्षण की दिशा में परिंडे बांधे, कृत्रिम घोंसले लगाए व चुग्गा पात्र लगाए
आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में गौसेवा टीम की ओर से एनएसएस छात्राओं ने किया कार्यक्रम

संस्थान के आचार्य महाप्रज्ञ प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र में पक्षियों के लिए परिंडे बांधने, उनमें पानी भरने, कृत्रिम घोंसले लगाने एवं चिड़ियों के

लिए चुग्गा बॉक्स की व्यवस्था के लिए स्वयंसेवी छात्राओं ने आगे आकर कार्य किया। विश्वविद्यालय में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों, शिक्षा विभाग के पर्यावरण क्लब व विज्ञान क्लब के संयुक्त तत्वावधान में 7 अक्टूबर को पक्षियों और अन्य जीवों के लिए सुरक्षित आश्रय और भोजन की व्यवस्था करनने के लिए गौसेवा टीम के सहयोग से आवश्यक सामग्री प्राप्त की जाकर इस कार्य को सफलता पूर्वक पूरा किया गया। इस कार्यक्रम में गौ सेवा टीम, लाडनूं के सौजन्य से परिंडे, घोंसले और दाना बॉक्स लगाए गए। साथ ही इस अवसर पर सबने पर्यावरण के प्रति अपनी जिम्मेदारियों को समझते हुए आगे बढ़ने का संकल्प लिया।

कार्यक्रम में गौसेवक अमित डांवर ने कहा कि प्राकृतिक संतुलन बनाए रखने के लिए हम सबको मिलकर काम करना होगा। अपने पर्यावरण के प्रति हमें जिम्मेदार होना चाहिए और ऐसे प्रयासों को लगातार आगे बढ़ाना चाहिए। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम की प्रभारी आभा सिंह ने कहा कि कार्यक्रम से छात्राओं को महत्त्वपूर्ण अनुभव हुआ है। उन्होंने पर्यावरण की रक्षा के साथ इसे अपने जीवन का हिस्सा बनाने के लिए प्रेरित किया और कहा कि ऐसे आयोजनों से समाज में जागरूकता फैलाई जा सकती है। इस अवसर पर गौसेवक सुमित भोजक, सूर्यप्रकाश जांगिड़, राष्ट्रीय सेवा योजना की स्वयंसेविका एवं सभी सदस्य उपस्थित रहे।

स्वयंसेवकों ने ली स्वच्छता की शपथ

राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के स्वयंसेविकाओं ने 18 दिसम्बर को स्वच्छता बनाए रखने की शपथ ली। क्षेत्रीय निदेशक, राष्ट्रीय सेवा योजना, राजस्थान द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार संस्थान में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाओं को स्वच्छता अपनाने एवं अपने आसपास के परिसर को स्वच्छ बनाए रखने के लिए जागृत किया गया। इस कार्यक्रम में स्वच्छता अपनाने के लिए राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक डॉ. आभा सिंह ने शपथ दिलाई। इस अवसर पर राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह तथा स्वयंसेवक एवं स्वयंसेविकाएं उपस्थित रही।

एनएसएस के शिविर में राष्ट्रीय एकता एवं साम्प्रदायिक सद्भाव पर विभिन्न कार्यक्रम आयोजित

संस्थान में संचालित राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों के संयुक्त तत्वावधान में द्वितीय एक दिवसीय शिविर का आयोजन 21 नवम्बर को किया गया। शिविर में साम्प्रदायिक सद्भाव एवं राष्ट्रीय एकता पर समूह चर्चा, प्रतिज्ञा, पोर्टल की प्रक्रिया समझना, पोस्टर व स्लोगन तैयार करने के विभिन्न कार्यक्रम आयोजित किए गए। शिविर के प्रथम चरण में विद्यार्थियों ने सांप्रदायिक सद्भाव एवं सामाजिक समरसता विषय पर समूह चर्चा कार्यक्रम का आयोजन किया, जिसमें सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेविकाओं एवं स्वयंसेवकों के दायित्व पर चर्चा की गई। सबने अपने विचार रखते हुए सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने को नैतिक एवं राष्ट्रीय दायित्व बताया और कहा कि इस दिशा में हमें पहल करनी चाहिए। इस अवसर पर सभी ने सांप्रदायिक सद्भाव बनाए रखने में पहल करने और इस दिशा में अपना योगदान देने की प्रतिज्ञा भी की। दूसरे चरण में राष्ट्रीय सेवा योजना की ईकाइयों के मार्गदर्शन में 'माय भारत' पोर्टल की विभिन्न प्रक्रियाओं को समझने, उस पर गतिविधियां क्रिएट करने एवं पोर्टल की जानकारी सभी तक पहुंचाने की दिशा में राष्ट्रीय सेवा योजना के स्वयंसेवक के योगदान पर जानकारी प्रदान की गई। शिविर के तीसरे चरण में सांप्रदायिक सद्भाव को बढ़ावा देने वाले पोस्टर एवं स्लोगन तैयार किये। शिविर का आयोजन राष्ट्रीय सेवा योजना समन्वयक एवं इकाई प्रथम प्रभारी डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के निर्देशन में किया गया।

स्वच्छता पखवाड़े के अंतर्गत छात्राओं को दिलवाई स्वच्छता की शपथ

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत चल रहे स्वच्छता पखवाड़े में 21 सितम्बर को आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला में छात्राओं को स्वच्छता की शपथ दिलवाई। शिक्षा विभाग के सभी संकाय सदस्यों ने भी स्वच्छता की शपथ ली। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी एवं समन्वयक डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह के मार्गदर्शन में संपन्न किया।

खानपुर में भियाणी में निकाली गई स्वच्छता जागरूकता रैली

संस्थान में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा प्राप्त निर्देशानुसार स्वच्छता ही सेवा अभियान के तहत चल रहे स्वच्छता पखवाड़े में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की श्रृंखला में 26 सितम्बर को स्वच्छता जागरूकता रैली का आयोजन किया गया। राष्ट्रीय सेवा योजना की दोनों इकाइयों की स्वयंसेविकाओं ने 'स्वभाव स्वच्छता-संस्कार स्वच्छता' थीम के अनुरूप गोद लिए गए गांव खानपुर तथा भियानी में नारे लगाते हुए रैली निकाली और गांव के लोगों को स्वच्छता अपनाने के लिए संदेश दिया। राष्ट्रीय सेवा योजना इकाई प्रथम प्रभारी एवं समन्वयक डॉ. आभा सिंह तथा इकाई द्वितीय प्रभारी डॉ. बलबीर सिंह भी उपस्थित रहे।

'भारतीय भाषा उत्सव'

'भाषाओं के माध्यम से एकता' विषय पर सात दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

भाषा के विभिन्न पहलुओं सम्बंधी विषयों पर किया गया गहन चिंतन

संस्थान के शिक्षा विभाग में एन.सी.टी.ई. एवं यू.जी.सी. के निर्देशानुसार एक सप्ताह के 'भारतीय भाषा उत्सव' के अंतर्गत विभिन्न कार्यक्रमों का आयोजन 4 से 11 दिसम्बर तक किया गया। इसके तहत प्रथम दिवस- 'भाषाओं और प्रकृति में सामंजस्य' विषय पर भाषण का आयोजन किया गया। द्वितीय दिवस 'भाषाओं और प्रौद्योगिकी का सम्मिश्रणः डिजिटल युग में शब्दों की शक्ति' विषय पर कार्यक्रम, तृतीय दिवस "भाषा और साहित्यः द इंटर सेक्शन' पर कार्यक्रम हुआ। चतुर्थ दिवस 'भाषा मेला' का आयोजन किया गया। पंचम दिवस 'अभिव्यक्ति की वाकपटुता : वक्तृत्व कौशल' पर, छठवें दिवस 'भाषा और समुदाय' पर और अंतिम सप्तम दिवस पर 'संस्कृति और हमः एक क्षेत्रीय उत्सव' कार्यक्रम का आयोजन किया गया।

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने प्रकृति संरक्षण और भाषा संरक्षण को एक दूसरे से जुड़ा हुआ बताया और कहा कि भाषाएं प्रकृति के साथ हमारे संबंध को दर्शाती हैं, और उनकी विलुप्ति जैव विविधता के नुकसान के समान ही चिंताजनक है। आदिवासी भाषाओं में पर्यावरणीय स्थिरता के लिए महत्त्वपूर्ण ज्ञान और रीति-रिवाजों को संरक्षित किया जाता है। इन भाषाओं को संरक्षित करना न केवल सांस्कृतिक विविधता को संरक्षित करना है, बल्कि प्रकृति को संरक्षित करना भी है। इसी प्रकार अगले दिवस भाषा और प्रौद्योगिकी के बीच जटिल संबंधों के बारे में बताया गया, जिनमें डिजिटल प्लेटफॉर्म पर भाषा के प्रभाव और भविष्य में भाषा और प्रौद्योगिकी के एकीकरण के संभावित परिणामों की पड़ताल के बारे में जानकारी दी गई। भाषा और साहित्य को एक दूसरे के पूरक बताया गया और कहा गया कि भाषा ही साहित्य की नींव है, जिसके माध्यम से साहित्यिक कार्य रचे जाते हैं। तृतीय दिवस साहित्य के बारे में बताया गया कि साहित्य भाषा को एक नया आयाम प्रदान करता है, इसे एक कलात्मक माध्यम के रूप में उपयोग करता है। चतुर्थ दिवस 'भाषा मेला' एक महत्त्वपूर्ण ज्ञानकेंद्र के रूप में विद्यार्थियों द्वारा मूल्यवान कौशल प्राप्त करने वाला, पाठ्यक्रम और अनुसंधान के लिए आवश्यक, छात्रों में रुचि, योग्यता, कार्यक्षमता और कार्यकुशलता का आगे बढ़ाने वाला और छात्रों के लिए बिना व्यवधान के सीखने और ज्ञानग्रहण करने के लिए सुंदर वातावरण बनाने वाला था। षष्टम् दिवस 'अभिव्यक्ति की वाक्पटुता : वक्तृत्व कौशल' पर प्रो. जैन ने अभिव्यक्ति को कौशल विचारों को प्रभावी ढंग से व्यक्त करने, दूसरों को प्रेरित करने और परिवर्तन लाने की कला बताया, जिसमें श्रोताओं की पृष्ठभूमि, हितों और दृष्टिकोण व विशेषताओं को ध्यान में रखकर अपनी भाषा, उदाहरण और तर्क को समायोजित करने होते हैं। 'भाषा और समुदाय' पर हुई चर्चा में भाषा और समाज का भविष्य परिवर्तन के दौर से गुजरने, वैश्वीकरण, प्रौद्योगिकी और संचार में प्रगति ने विभिन्न संस्कृतियों और भाषाओं के बीच बातचीत के तरीके को बदलने पर विचार प्रकट किए गए। अंतिम दिवस संस्कृति व क्षेत्रीय उत्सवों को भारत की राष्ट्रीय एकता में महत्त्वपूर्ण बताया गया और कहा गया कि ये उत्सव विभिन्न समुदायों के लोगों को साथ लाते हैं, जिसमें वे अपनी संस्कृति और परंपराओं को साझा करते हैं और एक-दूसरे को बेहतर ढंग से जानते हैं। कार्यक्रम में लगभग 100 प्रतिभागियों ने भाग लिया। समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी इसमें उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संयोजन डॉ. अमिता जैन ने किया।

छात्राध्यापिकाओं के दल ने किया गुजरात व माउंट आबू का पांच दिवसीय शैक्षणिक भ्रमण

गुजरात के साबरमती आश्रम, स्टैचू ऑफ यूनिटी, काकड़िया गुफाएं, स्वामी नारायणजी और आबू की नक्की झील व देलवाड़ा मंदिर देखे व ज्ञानवर्द्धन किया

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 52 छात्राध्यापिकाओं का एक दल शैक्षिक भ्रमण के लिए पांच दिवसीय कार्यक्रम (29 सितम्बर से 3 अक्टूबर) के तहत गुजरात के कोबा अहमदाबाद व माउंट आबू के पर्यटन एवं धार्मिक, ऐतिहासिक व प्राकृतिक सौंदर्य से परिपूर्ण दर्शनीय स्थलों का अवलोकन किया तथा मनोरंजन के साथ अपना ज्ञानवर्द्धन किया। यह दल यहां कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के व विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन की देखरेख में यहां प्रवासरत तपस्वी मुनिश्री जयकुमार के दर्शन एवं आशीर्वाद के पश्चात् रवाना हुआ। दूसरे दिन कोबा अहमदाबाद पहुंचने के बाद इस दल ने अहमदाबाद में अटलज बावड़ी, त्रिमंदिर, साबरमती आश्रम, अटल ब्रिज आदि रमणीय स्थलों का भ्रमण किया। अगले दिवस स्टैचू ऑफ यूनिटी के लिए प्रस्थान कर सरदार वल्लभभाई पटेल की 182 मीटर की मूर्ति, वहां के रमणीय दृश्य, वैली ऑफ फ्लावर, बांध आदि को देखा। सबका मन प्रसन्नचित हो गया। वहां पर यूनिटी से संबंधित अलग-अलग स्लोगन एवं संदेश देखने को मिले। इसके बाद अगले दिन मेट्रो ट्रेन से काकड़िया के लिए प्रस्थान किया। वहां पर चिड़ियाघर, गुफाएं आदि का अवलोकन करने के साथ विविध कैटेगरी के पशु-पक्षियों को देखा। उसी दिन अक्षरधाम मंदिर गए और वहां पर स्वामी नारायणजी

के दर्शन किए। उसके बाद वाटर शो देखा जो बहुत ही एट्रैक्टिव और मन को लुभाने वाला था। इसके बाद कोबा अहमदाबाद से प्रस्थान करके माउंट आबू पहुंचे। यहां नक्की झील और सुप्रसिद्ध देलवाड़ा जैन मंदिर के दर्शन किए। मंदिर बहुत ही शानदार एवं सुंदर नक्काशी से पूरित था।

विद्यार्थियों ने इस भ्रमण से बहुत कुछ सीखा और बहुत सारी चीजों को अपने जीवन में उतारने का प्रयास किया। विद्यार्थियों के इस दल के साथ संकाय सदस्य विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, डॉ. अमिता जैन, सुश्री स्नेहा शर्मा, देवी लाल कुमावत, किशन टाक आदि का सहयोग रहा।

'एक पेड़ मां के नाम' अभियान के तहत छात्राओं, प्रोफेसर्स आदि ने पेड़ लगाए

कुलपति प्रो. बच्छराज दूगड़ के संरक्षण में व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के निर्देशन में परिसर में 13 जुलाई को कार्यक्रम- समन्वयक अभिषेक चारण ने अगुवाई करते हुए संकाय सदस्यों एवं छात्राओं के साथ प्रधानमंत्री के आह्वान 'एक पेड़ मां के नाम' के तहत वृक्षारोपण की मुहिम में सहयोग किया। इस अवसर पर छात्राओं द्वारा फलदार, छायादार एवं औषधीय गुणों वाले पौधे लगाए तथा इन सभी पौधों की देखरेख का संकल्प लिया। इस अवसर पर प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने कहा कि यशस्वी प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी का पर्यावरण के लिए शुरू यह अभियान देशभर में 140 करोड़ वृक्षारोपण के लक्ष्य की ओर अग्रसर हो रहा है। यह अभियान पर्यावरण शुद्धि हेतु उत्तरोत्तर विकास के नए आयाम गढ़ेगा। उन्होंने बताया कि गत 5 जून को विश्व पर्यावरण दिवस के मौके पर प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा प्रारंभ हुए इस अभियान में सितंबर माह तक 80 करोड़ पौधे लगाने का लक्ष्य रखा गया है एवं मार्च 2025 तक कुल 140 करोड़ पेड़ लगाने के संकल्प के साथ यह अभियान साकार बनेगा। पौधारोपण का यह अभिनव संकल्प निश्चित रूप से समूचे विश्व के लिए मिसाल बनेगा। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन, योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत, अहिंसा एवं शांति विभाग के डॉ. रविंद्र सिंह राठौड़, संस्थान के वित्ताधिकारी आर.के. जैन, अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी, संकाय सदस्य डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच, देशना चारण, घासी लाल शर्मा आदि मौजूद रहे। संस्थान कार्मिक हीरालाल देवासी एवं अशोक की भूमिका वृक्षारोपण कार्यक्रम में सराहनीय रही।

मानवाधिकार दिवस कार्यक्रम

'हम सभी के लिए मानव अधिकार' थीम पर मानवाधिकार कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में राष्ट्रीय मानव अधिकार दिवस पर 10 दिसम्बर को आयोजित कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने अध्यक्षता करते हुए कहा कि लोगों में समानता एवं स्वतंत्रता के लिए जागरूकता होनी आवश्यक है। मानवाधिकारों का पालन करने से ही यह संभव हो सकता है। 'हम सभी के लिए मानव अधिकार' थीम पर बोलते हुए उन्होंने कहा कि वर्ष 2024 के लिए मानवाधिकार दिवस की थीम 'हम सभी के लिए मानव अधिकार' का विश्लेषण करते हुए बताया कि इसका मकसद है कि हर शख्स को समान एवं बुनियादी अधिकार मिले, चाहे वह शख्स किसी भी जाति, रंग, लिंग, वर्ण एवं धर्म का हो। इसी से लोगों में समानता एवं स्वतंत्रता के लिए जागरूकता बढ़ाना है। मानवाधिकारों से व्यक्तियों के अच्छे जीवन जीने के लिए आवश्यक स्थितियां सुरक्षित हो सकेगी। उन्होंने भारत में मानव अधिकार आयोग की भूमिका को व्याख्यायित करते हुए बताया कि एनएचआरसी मानव अधिकार के क्षेत्र में समय-समय पर अनुसंधान का कार्य भी करता है, साथ ही यह आयोग हेतु अनेक प्रकाशनों, मीडिया, सेमिनारों एवं अन्य माध्यमों से समाज में विभिन्न वर्गों के बीच मानव अधिकारों से जुड़ी जानकारी का प्रचार करता है, ताकि अधिकतम लोग इन अधिकारों की सुरक्षा के लिए प्राप्त उपायों के प्रति जागरूक हो सकें। कार्यक्रम का संचालन हिन्दी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। कार्यक्रम में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 168वीं जयंती मनाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में अपना महत्त्वपूर्ण योग देने वाले राष्ट्रवादी नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 168वीं जयंती पर 23 जुलाई को कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी ने बताया कि बाल गंगाधर तिलक राष्ट्रवादी नेता, आदर्श शिक्षक, समाज सुधारक, वकील एवं स्वतंत्रता सेनानी के रूप में अपनी स्वच्छ पहचान रखते थे। वे भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के अग्रणी थे। तिलक भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के पहले ऐसे लोकप्रिय नेता हुए, जिन्हें हिंदू राष्ट्रवाद का पिता भी कहा जाता है। 'स्वराज मेरा जन्मसिद्ध अधिकार है और इसे मैं लेकर रहूंगा', का नारा देने वाले लोकमान्य तिलक के जीवन आदर्श आज भी प्रत्येक भारतवासी को प्रेरित एवं ऊर्जान्वित करते हैं। उन्होंने तिलक के जीवन पर भी प्रकाश डाला और सभी छात्राओं से ऐसे जननायकों के जीवन से प्रेरणा लेने एवं मातृभूमि के प्रति सदैव कर्तव्यनिष्ठ बने रहने की सीख लेने की जरूरत बताई। छात्राओं की ओर से सुनीता काजला ने भी बाल गंगाधर तिलक के जीवन से जुड़े कुछ रोचक प्रसंग साझा किये। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी द्वारा धन्यवाद ज्ञापन किया गया। कार्यक्रम में डॉ. प्रगति भटनागर, श्वेता खटेड़, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, डॉ. मनीषा जैन व घासीलाल शर्मा एवं समस्त छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय अन्तरिक्ष दिवस पर विभिन्न प्रतियोगिताओं का आयोजन

भारतीय युवाओं के लिए सफलता व बेहतर अर्जन की प्रेरणा देने वाला दिवस

संस्थान के शिक्षा विभाग एवं आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में राष्ट्रीय अन्तरिक्ष दिवस पर 23 अगस्त को कार्यक्रम आयोजित किए गए। कार्यक्रम में पीपीटी के माध्यम से चन्द्रयान मिशन की जानकारी देने के साथ ही चन्द्रयान सम्बंधी मॉडल भी छात्राओं ने बनाकर प्रस्तुत किए व पोस्टर निर्माण भी किया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने भारत को प्राचीनकाल से ही ज्ञान-विज्ञान का केन्द्र बताया और कहा कि हमारी ज्ञान परम्परा का विश्व के समस्त देशों ने किसी न किसी रूप में अनुसरण किया है। नेशनल स्पेश डे सभी देशवासियों के लिए गर्व का पर्व है कि हमें चंद्रमा पर भी विजय मिल पाई। उन्होंने इसरो की उपलब्धियों से प्रेरणा लेने हेतु प्रोत्साहित करते हुए सदैव नवीन जिज्ञासा और शोधपरक चिंतन पर बल दिया। उन्होंने विज्ञान को सम्पूर्ण प्रगति का आधार बताया।

पीपीटी दिखाई व विज्ञान मॉडल व पोस्टर बनाए

कार्यक्रम में छात्रा भूमिका ने पीपीटी के माध्यम से इसरो के चंद्रयान मिशन एवं अन्य नवीन योजनाओं की जानकारी दी। कार्यक्रम के अंतर्गत चिंकी, मुस्कान, भावना मेघवाल, संजू, राधा, लक्ष्मी ने चंद्रयान से सम्बंधित निर्मित मॉडल प्रस्तुत किया। अन्य प्रशिक्षणार्थियों सिमरन, खुशी पायल, कुसुमलता शर्मा एवं चंचल ने पोस्टर का निर्माण कर प्रदर्शित किया। विभाग की प्रशिक्षणार्थियों को इसरो द्वारा आयोजित कार्यक्रम को ऑनलाइन माध्यम से दिखाया गया, जिससे उनको विज्ञान और अन्तरिक्ष सम्बन्धी जानकारियों का लाभ मिल सके। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारीलाल शर्मा, देवीलाल आदि संकाय सदस्य भी उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन एवं आभार ज्ञापन सुश्री स्नेहा शर्मा ने किया।

भाषण व पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन

आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में भाषण एवं पोस्टर प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। छात्रा मीनाक्षी ने अपने भाषण में राष्ट्रीय अंतरिक्ष दिवस की शुरूआत और पहली बार मनाए जा रहे इस दिवस पर चन्द्रयान मिशन की सफलता के बारे में बताया। स्पीच, सुनीता काजला द्वारा प्रेरणास्पद कविता पाठ किया गया। छात्रा श्वेता ठोलिया ने प्रथम एवं कुमकुम ठोलिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। पोस्टर प्रतियोगिता में साक्षी सोनी प्रथम रही। कार्यक्रम की अध्यक्षता कर रहे महाविद्यालय प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने अपने संबोधन में मिशन चंद्रयान 3 को भारतीय वैज्ञानिकों के अटल लक्ष्य की एक अद्भुत सफलता के रूप में याद किया और कहा कि नेशनल स्पेस डे प्रत्येक भारतीय युवा के लिए असफलताओं में छिपी सफलता को सीखने का दिन है। भारत सरकार द्वारा प्रारंभ किया गया यह दिवस प्रतिवर्ष युवाओं को कुछ बेहतर अर्जन करने की प्रेरणा देगा। कार्यक्रम का संयोजन छात्रा कान्ता सोनी एवं मीनाक्षी भंसाली द्वारा किया गया। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर थी। कार्यक्रम में अभिषेक चारण, प्रेयस सोनी, मधुकर दाधीच, डॉ. मनीषा जैन, सुश्री राधिका लोहिया, देशना चारण आदि मौजूद रहे।

भारत विभाजन विभीषिका स्मृति दिवस पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार एवं प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी के मार्गदर्शन में 14 अगस्त को भारत विभाजन की विभीषिका स्मृति दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम के मुख्य वक्ता इतिहास व्याख्याता प्रेयस सोनी ने बताया कि विश्व की भीषणतम त्रासदियों में से एक भारत-पाक विभाजन एक मानव जनित त्रासदी थी, जिसमें लाखों लोगों को अपना देश और अपने संपत्ति को छोड़कर एक अनिश्चिता के सफर पर जाना पड़ा। तब सांप्रदायिकता की अग्नि में झुलस कर मानवता तार-तार हुई। हजारों से अधिक लोगों को केवल सम्प्रदाय के भेद से मौत के घाट उतार दिया गया था। अंग्रेजों की फूट डालो राज करो की नीति के कारण हजारों वर्षों पुरानी संस्कृति को एक ऐसे मोड़ पर ला खड़ा किया, जिसका परिणाम कई पीढ़ियां आज तक भोग रही हैं।

कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। अंत में डॉ. प्रगति भटनागर ने धन्यवाद ज्ञापित किया। कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, मधुकर दाधीच, राधिका लोहिया, घासीलाल शर्मा एवं देशना चारण एवं छात्राएं मौजूद रहीं।

सप्तदिवसीय 'दीक्षा आरम्भ' कार्यक्रम

नैतिक विकास, व्यक्तित्व विकास एवं जागरूकता के विविध आयोजन हुए

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में चल रहे सात दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम के तहत नवागन्तुक छात्राओं के लिए हर दिन अलग-अलग कार्यक्रमों का संचालन किया जाकर उन्हें महाविद्यालय, विश्वविद्यालय की आधारभूत सुविधाओं तथा शिक्षा व पाठ्यक्रमों से अवगत करवाने के साथ ही नैतिक विकास, व्यक्तित्व विकास आदि के लिए उन्हें जागरूक बनाने की पृष्ठभूमि तैयार की जा रही है। उन्हें नए माहौल के अनुकूल तैयार करने में इन कार्यक्रमों की महत्त्वपूर्ण भूमिका रहेगी। गौरतलब है कि यह महाविद्यालय एवं विश्वविद्यालय सबसे अलग तरह का है, यहाँ आध्यात्मिक वातावरण में अध्ययन करवाया जाता है और नवागन्तुक विद्यार्थियों के साथ किसी भी तरह की रैगिंग होने के बजाए उनका स्वागत-सत्कार होता है और उनकी अध्ययन-पूर्व तैयारियां करवाई जाती हैं, उन्हें नैतिक, निडर व पॉजिटिव और आत्मरक्षा में समर्थ बनाया जाता है। दीक्षारंभ कार्यक्रम के तहत प्रतिदिन छात्राओं को डॉ. विनोद कस्वा द्वारा योग एवं प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण भी दिया गया।

कोई भी एपीके फाईल कभी मोबाईल में डाउनलोड नहीं करें- अरविंद कुमार

साईबर सिक्योरिटी पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में चल रहे दीक्षारम्भ कार्यक्रम के तहत 2 सितम्बर को आयोजित साईबर सिक्योरिटी कार्यक्रम में मुख्य वक्ता व विषय विशेषज्ञ पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंधक अरविंद कुमार ने बताया कि हमें क्रेडिट कार्ड अथवा डेबिट कार्ड का उपयोग बहुत सावधानी से करना चाहिए। कई बार हमारे क्रेडिट कार्ड और डेबिट कार्ड के क्लोन बना लिए जाते हैं तथा हमारे अकाउंट से अनाधिकृत लेनदेन कर लिया जाता है। हमें कभी भी कोई एपीके फाइल अपने मोबाइल में डाउनलोड नहीं करनी चाहिए। उन्होंने अपरिचित नंबर से आने वाले किसी भी कॉल से सतर्क रहने के लिए आगाह करते हुए कहा कि इसमें हमसे कई जानकारियां प्राप्त करके हमारे अकाउंट से पैसा चुरा लिया जाता है। अतः हमें किसी भी अपरिचित नंबर पर अपनी जानकारियां साझा नहीं करनी चाहिए। वेबसाइट का उपयोग करते वक्त बरती जाने वाली सावधानियों में उन्होंने वेबसाइट की वैधता की जांच करने की जरूरत बताई तथा कहाकि कोई भी फाइनेंशियल ट्रांजैक्शन के समबंध में सबको अत्यधिक सजग रहने की जरूरत है, तभी साईबर ठगी से हम बचे रह सकेंगे।

किसी से भी ओटीपी शेयर नहीं करें

कार्यक्रम में पीएनबी के सहायक प्रबंधक सांवरमल रोहलण ने छात्राओं को बताया कि हमें मोबाइल का उपयोग करते समय अत्यंत सावधानी बरतनी चाहिए। हमें अपने पासवर्ड पूर्णतया सुरक्षित रखने चाहिए तथा समय-समय पर उन्हें बदलते भी रहना चाहिए। जब भी आप प्ले स्टोर से कोई ऐप डाउनलोड करते हैं तो सबसे पहले यह जांच लेना चाहिए कि वह एप्लीकेशन प्रमाणिक है अथवा नहीं तथा ऐप डाउनलोड करते समय ऐप द्वारा मांगी गई जानकारी पर हमें बेहद सावधानी रखते हुए क्लिक करना चाहिए। इसी प्रकार ऑनलाइन शॉपिंग करते वक्त भी अपनी व्यक्तिगत जानकारी को अपने मोबाइल या लैपटॉप में स्टोर नहीं रखना चाहिए। उन्होंने कहा कि कई बार हमसे ओ.टी.पी. की जानकारी मांगने वाले कॉल्स भी आते हैं, लेकिन कभी भी किसी को अपना ओ.टी.पी. शेयर नहीं करना चाहिए। अंत में उन्होंने आरबीआई द्वारा विद्यार्थियों के लिए आयोजित की जाने वाली क्विज की जानकारी भी दी।

सावधानियां अपनानी आवश्यक

कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने वर्तमान के सबसे प्रासंगिक विषय 'साइबर सिक्योरिटी' के सम्बंध में बरती जाने वाली सावधानियों को स्वयं अपनाने और अपने परिवारजनों व मित्रजनों को भी अपनाने की सलाह दी। उन्होने विषय विशेषज्ञ वक्ता पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंधक अरविंद कुमार एवं सहायक प्रबंधक सांवरमल रोहलण का स्वागत एवं अभिनंदन किया एवं स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। डॉ. विनोद कस्वा द्वारा अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम का संयोजन कार्यक्रम-समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा किया गया। कार्यक्रम में व्याख्याता मधुकर दाधीच, प्रेयस सोनी, राधिका लोहिया आदि एवं छात्राएं मौजूद रहे।

प्राकृतिक चिकित्सा केन्द्र का भ्रमण

कार्यक्रम के पश्चात् दीक्षारम्भ के तहत सभी छात्राओं को डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विनोद कस्वा एवं राधिका लोहिया की अगुवाई में संस्थान में संचालित प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र का भ्रमण करवाया गया, जहां डॉ. निलेश मेहरा एवं पूनम राय द्वारा उन्हें प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की विस्तृत जानकारी दी और अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में प्राकृतिक चिकित्सा की विशिष्टता से अवगत करवाया। इससे पूर्व योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद कस्वा ने सभी छात्राओं को योग एवं प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया।

दृष्टिकोण परिवर्तन एवं 'सकारात्मक' बनने के तरीके बताए

कार्यक्रम के तहत एक व्याख्यान का आयोजन 3 सितम्बर को किया गया, जिसमें प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने 'पोजिटिव' की व्याख्या करते हुए जीवन में सकारात्मकता के लाभ बताए व सकारात्मक दृष्टिकोण के विकास के तरीके बताए। इस अवसर पर सकारात्मकता बढाने के लिए योग के प्रयोग भी बताए गए। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद कस्वा ने छात्राओं को योग एवं प्रेक्षाध्यान का प्रशिक्षण दिया। इसके अलावा सभी नवागन्तुक छात्राओं को आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं जैन विश्वभारती संस्थान विश्वविद्यालय का संपूर्ण भ्रमण करवाया गया। विश्वविद्यालय में संचालित समस्त विभागों की विस्तृत जानकारी उन्हें दी गई। भ्रमण के तहत छात्राओं द्वारा संस्थान के आचार्य महाश्रमण ऑडिटोरियम, कंप्यूटर लैब, महाप्रज्ञ सभागार, प्रशासनिक भवन तथा

शैक्षिक विभागों का अवलोकन किया गया। शैक्षणिक विभागों के अवलोकन के दौरान योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्न सिंह शेखावत ने छात्राओं को योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की विस्तृत जानकारी दी। छात्राओं ने योग प्रयोगशाला में मौजूद उपकरणों में गहरी रुचि दिखाई।

व्यक्तित्व विकास पर व्याख्यान, योग का महत्त्व बताया

दीक्षारंभ कार्यक्रम के तीसरे दिन 4 सितम्बर को प्रातः प्रार्थना सभा के बाद 'पर्सनैलिटी डेवलपमेंट' पर पूर्व वाणिज्य सहायक आचार्या सुश्री श्वेता खटेड़ ने अपने व्याख्यान में बताया कि व्यक्ति के व्यक्तित्व के दो आयाम- आंतरिक व्यक्तित्व और दूसरा बाह्य व्यक्तित्व होते हैं। उन्होंने कई उदाहरणों से आंतरिक और सहायक व्यक्तित्व का विकास करने के तरीके बताए। योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के विभागाध्यक्ष डॉ. प्रद्युम्नसिंह शेखावत ने योग के महत्त्व को बताते हुए कहा कि योग का सीधा संपर्क हमारे जीवन से है। योग एवं ध्यान केवल मोक्ष प्राप्ति के साधन ही नहीं, अपितु एक अच्छा जीवन जीने के लिए भी योग जीवन में एक महत्त्वपूर्ण स्थान रखता है। उन्होंने शारीरिक स्वास्थ्य को व्यक्ति की स्वस्थता की पहचान न मानते हुए शारीरिक एवं मानसिक स्वास्थ्य के संतुलन को ही सामाजिक स्वास्थ्य के लिए उचित माना। उन्होंने शारीरिक मानसिक एवं सामाजिक स्वास्थ्य को ठीक रखे जाने के बारे में भी बताया। कार्यक्रम में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग के डॉ. विनोद कस्वा ने छात्राओं को योग एवं प्रेक्षाध्यान का अभ्यास करवाया। कार्यक्रम के अंतिम सत्र में छात्राओं द्वारा कल्चरल कार्यक्रम भी प्रस्तुत किए गए। कार्यक्रम में मेहमानों का स्वागत प्रो. रेखा तिवारी ने किया तथा स्वागत भाषण प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी द्वारा दिया गया। कार्यक्रम का संचालन समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा किया गया।

शिक्षक दिवस आयोजित

दीक्षारंभ कार्यक्रम के चौथे दिन 5 सितम्बर को शिक्षक दिवस मनाया गया। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में इस कार्यक्रम में गुरु-शिष्य के संबंधों को व्याख्यायित किया गया। कार्यक्रम में मुख्य अतिथि शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने विद्यार्थी जीवन में शिक्षक के महत्त्व पर प्रकाश डाला एवं विद्यार्थी जीवन को कई उद्धरणों के माध्यम से विश्लेषित किया। अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने भारतीय सनातन जीवन मूल्यों में निहित गुरु के महत्त्व पर प्रकाश डाला और धर्मपाल-कुमारिल, शंकराचार्य-सुरेश्वराचार्य, कृष्ण-अभिमन्यु, द्रोणाचार्य-अर्जुन, वल्लभाचार्य-सूरदास, नरहरिदास-तुलसीदास, कुमारिलभट्ट-मंडन मिश्र, गुरु रामदास-छत्रपति शिवाजी, रामकृष्ण परमहंस-विवेकानंद के साथ आचार्य तुलसी-आचार्य महाप्रज्ञ एवं आचार्य महाप्रज्ञ-आचार्य महाश्रमण तक की आदर्श एवं स्वस्थ गुरु-शिष्य परंपराओं के महत्त्व को प्रतिपादित किया। उन्होंने गुरु शब्द का उत्तरदायित्व शिष्यों की सृजनात्मक क्षमता को विकसित करना बताया और कहा कि इस आदर्शवादिता की कसौटी पर भारतीय गुरु-शिष्य परंपरा खरा उतरती रही है और यह पूरे विश्व के लिए प्रेरक है।

इस अवसर पर अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने भी शिक्षक दिवस पर प्रकाश डाला। प्रारम्भ में छात्रा मेघना सोनी ने सरस्वती वन्दना की और इसके बाद हर्षिता कोठारी, मीनाक्षी भंसाली, रक्षिता, तृप्ति कोठारी, तमन्ना तंवर, मीनाक्षी आदि छात्राओं ने भी शिक्षक दिवस पर अपनी-अपनी भावाभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम की रूपरेखा स्नेहा बोहरा एवं गार्गी जांगिड़ के साथ ईशा प्रजापति आदि छात्राओं ने तय की। कार्यक्रम का संचालन छात्रा स्नेहा सोनी एवं विनीता कंवर ने किया। डॉ. प्रगति भटनागर द्वारा अंत में धन्यवाद ज्ञापित किया गया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभासिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. बलबीर सिंह, अभिषेक चारण,, डॉ. विनोद कस्वा, मधुकर दाधीच, डॉ. आयुषी शर्मा, सुश्री प्रगति चौरड़िया, कुशाल जाँगिड़, सुश्री स्नेहा शर्मा, देवीलाल प्रजापत, डॉ. मनीषा जैन, डॉ. ममता पारिक, सुश्री राधिका लोहिया, मुकेश कुमार, देशना चारण एवं घासीलाल शर्मा मौजूद रहे।

गीत, नृत्य, कॉमेडी से टैलेंट राउंड में किया प्रभावित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित सप्तदिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम के समापन पर अंतिम दिन 7 सितम्बर को शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि हमें अपना लक्ष्य निर्धारित कर निरंतर उसे प्राप्त करने की दिशा में अग्रसर रहना चाहिए। साथ ही अपनी आंतरिक प्रतिभा को पहचान कर उसे विकसित करने का प्रयास करना चाहिए। इस अवसर पर नवागंतुक छात्राओं की प्रतिभा को उजागर करने के लिए एक टैलेंट राउंड का आयोजन किया गया, जिसमें मेघना सोनी, सिमरन, हर्षिता कोठारी, मीनाक्षी भंसाली, रक्षिता, तृप्ति, राधिका, अवंतिका आदि छात्राओं ने कविता पाठ, एकल एवं सामूहिक नृत्य, स्टैंड अप कॉमेडी, भाषण, गायन आदि के रूप में अपनी प्रस्तुतियां दी। इनमें छात्रा दीपाली शास्त्री ने स्टैंड अप कॉमेडी प्रस्तुत करके और छात्रा संयोगिता ने महिला सशक्तिकरण पर अपने विचार रख कर सबको प्रभावित किया। कार्यक्रम में योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्य डॉ. विनोद कस्वा द्वारा छात्राओं को प्रेक्षाध्यान एवं योग का अभ्यास करवाया गया। समापन समारोह की मुख्य अतिथि अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवारी ने भी अपने विचार प्रस्तुत किए और छात्राओं की हौसला अफजाई की। प्रारम्भ में आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। छात्रा सोनू जांगिड़ ने सप्त दिवसीय दीक्षारंभ कार्यक्रम की रिपोर्ट प्रस्तुत की। छात्रा मीनाक्षी, नम्रता सांखला एवं श्वेता ने अपने सात दिनों के अनुभवों को साझा किया।

मासिक व्याख्यान माला का आयोजन

मानव संसाधन विकास से कर्मचारियों की निष्ठा में वृद्धि संभव- राधिका लोहिया

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में 4 दिसम्बर को मासिक व्याख्यान माला का आयोजन हुआ, जिसमें वाणिज्य संकाय की राधिका लोहिया ने 'मानव संसाधन विकास विकसित राष्ट्र का आधार' विषय पर अपना व्याख्यान प्रस्तुत किया। लोहिया ने व्याख्यान में बताया कि किसी भी राष्ट्र के विकास हेतु प्राकृतिक संसाधन एक महत्त्वपूर्ण घटक होते हैं, परंतु मानवीय संसाधनों के महत्त्व को किसी भी सूरत में नकारा नहीं जा सकता। क्योंकि, हमारे दैनिक जीवन में मानवीय प्रयत्नों से ही हर प्रकार के कार्य कुशलतापूर्वक संपादित होते हैं। लोहिया ने मानव संसाधन प्रबंधन और विकास की सफलता के सोपानों, व्यक्तिगत विकास के सिद्धांतों, वैज्ञानिक प्रबंध के सिद्धांतों, अभिप्रेरणा के सिद्धांत, स्वप्रेषण के सिद्धांत, उचित पारिश्रमिक के सिद्धांत, श्रम एवं प्रतिष्ठा के सिद्धांत, सहभागिता के सिद्धांत, मानवीय संसाधनों के प्रभावी उपयोग के सिद्धांत, टीम भावना के सिद्धांत के साथ राष्ट्रीय समृद्धि में योगदान के सिद्धांत पर भी विस्तृत प्रकाश डाला। व्याख्यान के अंत में मानव संसाधन विकास से संबंधित संस्थाओं को होने वाले लाभों पर भी लोहिया ने चर्चा करते हुए घनश्याम दास बिड़ला, जमशेदजी टाटा, जमनालाल बजाज, धीरूभाई अंबानी, गौतम अडानी, बजरंगलाल तापड़िया आदि के जनहित योगदानों के उदाहरण भी प्रस्तुत किए और घनश्याम दास बिरला द्वारा अपने पुत्र को लिखे उस पत्र का भी वाचन किया, जिसे विश्व के बेहतरीन प्रेरक पत्रों में से एक के रूप में गिना जाता है। अध्यक्षता करते हुए प्रो. त्रिपाठी ने आधुनिक संदर्भ में व्याख्यान को सार्थक माना और सर्वाधिक युवा आबादी युक्त भारत जैसे विकासशील देश के संदर्भ में प्रासंगिक बताया। व्याख्यान का संचालन एवं आभार ज्ञापन इतिहास व्याख्याता प्रेयस सोनी ने किया। व्याख्यान कार्यक्रम में प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, मधुकर दाधीच, डॉ. आयुषी शर्मा, देशना चारण, अंजुला जैन आदि की उपस्थिति रही।

महिला स्वतंत्रता सेनानी मणिबेन के जीवन व कार्यों को याद किया

मासिक व्याख्यानमाला में प्रेयस सोनी ने मणिबेन को समुचित स्थान दिलाने की मांग उठाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में संचालित मासिक व्याख्यानमाला में 13 सितम्बर को 'मणिबेन : एक भूला बिसरा राष्ट्रीय चरित्र' विषय पर व्याख्यान आयोजित किया गया। प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में हुए इस आयोजन में इतिहास व्याख्याता प्रेयस सोनी ने अपने व्याख्यान में सरदार पटेल की पुत्री मणिबेन के जीवन-चरित्र का खाका खेंचते हुए उनके जीवन की संघर्षपूर्ण चुनौतियों का विस्तृत वर्णन किया तथा कहा कि मणिबेन ने महात्मा गांधी के सत्याग्रह पथ पर चलते हुए अनेक राष्ट्रीय आन्दोलनों में भाग लिया। इसमें मणिबेन अनेक बार जेल गई और जेल में रहते हुए भी अपनी सहयोगी सत्याग्रही साथियों के हौंसलों को भी ऊंचा बनाए रखा। अपना सर्वस्व देश को समर्पित करने के अडिग विश्वास ने उन्हें विवाह करके गृहस्थी बसाने का अवकाश ही नहीं लेने दिया। स्वतंत्रता के पश्चात चुनाव जीत कर वे कई बार लोकसभा एवं राज्यसभा में जनता की प्रतिनिधि भी रही। सोनी ने कहा कि राष्ट्रीय अस्मिता की चिर संरक्षक रही इस महान विभूति को इतिहास में जो सम्मान एवं स्थान मिलना चाहिए था वो न मिल सका, अब वक्त का तकाजा है कि इस महान प्रतिभा की यादों को अमिट बनाया जाए। अध्यक्षीय उद्बोधन में प्राचार्य प्रो. त्रिपाठी ने भारतीय इतिहास में नारी की भूमिका को सदैव श्रेष्ठ एवं उच्चतर मानते हुए भारत के वर्तमान सफल स्वरूप में मणिबेन के योगदानों की सराहना की। कार्यक्रम का संचालन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने किया। अंत में मधुकर दाधीच ने धन्यवाद ज्ञापित किया। इस अवसर पर प्रो. रेखा तिवारी, डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. आभा सिंह, डॉ. विनोद कस्वा, सुश्री राधिका लोहिया, मुकेश कुमार, घासीलाल शर्मा आदि उपस्थित रहे।

आगमों एवं प्राचीन अभिलेखों में हैं भारतीय संस्कृति के समस्त मूल तत्त्व- डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा

कानपुर में मुख्य वक्ता के रूप में दिया व्याख्यान

आचार्य विद्यासागर सुधासागर जैन शोध पीठ कानपुर के तत्त्वावधान में 'भारत और विश्व को प्राकृत भाषा का महत्त्व' विषय पर आयोजित एक दिवसीय गोष्ठी में मुख्य वक्ता के रूप में जैन विश्वभारती विश्वविद्यालय की डॉ. समणी संगीतप्रज्ञा ने 'प्राकृत साहित्य में भारतीय संस्कृति का स्वरूप' विषय पर अपनना व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने भारतीय संस्कृति को अजर-अमर बताया और इसके मूल आधार के रूप में अहिंसा, मैत्री, करूणा, दया आदि तत्वों को व्याख्यायित करते हुए उन्होंने बताया कि ये सारे तत्त्व और सम्बंधित धार्मिक तत्त्व सभी प्राकृत साहित्य और विशेष रूप से आगम साहित्य में विद्यमान हैं। अपने व्याख्यान में उन्होंने भारतीय संस्कृति में ओड़ीशा के खारवेल के शिलालेख उल्लेख करते हुए कहा कि सम्राट खारवेल के अभिलेख में मात्र 17 पंक्तियों में भारत के सम्पूर्ण सांस्कृतिक तत्त्व मौजूद हैं।

इसी प्रकार सम्राट अशोक के अभिलेखों में भारतीय संस्कृति को और विशेष रूप से अहिंसा, मैत्री, करूणा और दया के सभी तत्त्व प्राप्त होते हैं। इन्हीं मूल तत्त्वों के कारण भारतीय संस्कृति अजर-अमर बनी हुई है। उन्होंने बताया कि भारत सरकार ने 3 अक्टूबर को प्राकृत को शास्त्रीय भाषा का दर्जा प्रदान किया है। इस एकदिवसीय संगोष्ठी में छत्रपति साहूजी महाराज विश्वविद्यालय कानपुर के कुलपति डॉ. विनय कुमार पाठक, मुख्य अतिथि के रूप में अरविंद कुमार जैन तिजारा, राष्ट्रपति पुरस्कार से सम्मानित डॉ. आशीष जैन आचार्य एवं अन्य विद्वान उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताएँ

अनुपयोगी सामग्री के उपयोग से सजावटी व उपयोगी वस्तुओं का निर्माण

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के दौरान बनाये विभिन्न आकर्षक उत्पाद

संस्थान में सत्र 2024-25 की सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के उद्घाटन सत्र पर 19 अक्टूबर को अनुपयोगी सामग्री का उपयोग प्रतियोगिता का आयोजन किया गया, जिसमें छात्राओं ने अनुपयोगी सामग्री द्वारा राम मंदिर, गांधीजी का चरखा, जैन विश्वभारती संस्थान का लोगो, वॉल हैंगिंग, पायदान, ग्लोब, सजावट की विभिन्न वस्तुएं आदि वस्तुओं का निर्माण किया। प्रतियोगिता में संस्थान की 25 छात्राओं ने भाग लिया। विभिन्न वस्तुओं के निर्माण में कुछ छात्राओं ने व्यक्तिगत रूप से काम किया और कतिपय छात्राओं के सामूहिक रूप से 2-3 के समूहों में वस्तुओं का निर्माण किया। कार्यक्रम में निर्णायक रहे प्रो. आनंद प्रकाश त्रिपाठी एवं प्रो. बी. एल. जैन ने छात्राओं द्वारा तैयार किए गए सभी उत्पादों का अवलोकन किया। इस अवसर पर प्रो. जैन ने इस प्रकार की प्रतियोगिताओं को छात्राओं के लिए रोजगार और कौशल में दक्षताएं प्रदान करने वाली बताया। प्रो. त्रिपाठी ने प्रतियोगिताओं को व्यक्तिगत और सामाजिक विकास में लाभकारी एवं उपयोगी बताया और छात्राओं में कौशल के विकास के लिए सहायक बताया। कार्यक्रम में सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन एवं डॉ. लिपि जैन भी उपस्थित रही। साथ ही अन्य विभागों की छात्राओं ने भी प्रतियोगिता के लिए तैयार अपनुपयोगी वस्तुओं से निर्मित विभिन्न वस्तुओं का अवलोकन किया।

मेहंदी प्रतियोगिताओं में 28 छात्राओं ने हाथों पर सजाई नई-नई डिजाइनें

संस्थान में चल रही सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं के तहत 25 अक्टूबर को मेहंदी प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने कहा कि मेहंदी प्रतियोगिता में 28 प्रतिभागियों ने बढ़-चढ़कर भाग लिया। प्रतियोगिता की निर्णायक डॉ. मनीषा जैन एवं डॉ. ईर्या शास्त्री रही। प्रतिभागियों ने अलग-अलग डिजाइनों को आकार देते हुए हाथों में बहुत ही सुंदर मेहंदी लगाई, जिन्हें देखकर सभी का मन मोहित हुआ। प्रतिभागी छात्राओं ने मेहंदी की डिजाइनों में मौलिकता, सटीकता और सौंदर्य का समावेश किया। राजस्थान की परम्परागत मेहंदी को नवीनतम डिजाइनों के माध्यम से उन्होंने अपनी अनूठी रचनात्मक और सांस्कृतिक विरासत के रूप में प्रदर्शित किया। कार्यक्रम में डॉ. ममता पारीक, डॉ. विनोद कस्वा आदि संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

सांस्कृतिक प्रतियोगिताओं में छात्राओं ने सजाई आकर्षक रंगोलियां

संस्थान में चल रही सांस्कृतिक प्रतियोगिताएं 2024-25 के तहत 7 नवम्बर को रंगोली प्रतियोगिता का आयोजन किया गया। सांस्कृतिक सचिव डॉ. अमिता जैन ने बताया कि रंगोली प्रतियोगिता में 60 प्रतिभगी छात्राओं ने 14 समूहों में हिस्सा लिया। प्रतियोगिता में प्रतिभागियों ने अपनी रंगोलियों में मौलिकता, सटीकता और सौंदर्य पर जोर दिया तथा अलग-अलग डिजाइन को आकार देकर रंग-बिरंगी सुंदर रंगोलियां बनाई, जिनके आकर्षण ने सबका मन मोह लिया। निर्णायकों व दर्शकों ने पाया कि रंगोलियों का निर्माण करके प्रतिभागियों ने अपनी अनूठी रचनात्मकता और सांस्कृतिक विरासत को परिलक्षित किया है।

प्रतियोगिता में निर्णायक के रूप में डॉ. ममता पारीक एवं डॉ. सुनीता इंदौरिया रही। कार्यक्रम में डॉ. विनोद कस्वा, डॉ. लिपि जैन आदि संकाय सदस्यों के अलावा सभी छात्राएं उपस्थित रहीं।

भारतीय सांस्कृतिक मर्यादाएं लम्बे अंतराल के बाद भी बनी हुई हैं- प्रो. जयकुमार

छात्राध्यापिकाओं ने गरबा महोत्सव में जमकर नृत्य का आनंद लिया

संस्थान के शिक्षा विभाग के तत्वावधान में 11 अक्टूबर को दुर्गापूजा पर्व पर छात्राध्यापिकाओं द्वारा आयोजित गरबा महोत्सव में मुख्य अतिथि के रूप में बोलते हुए श्रमण संस्कृति संस्थान जयपुर के प्रो. जयकुमार जैन ने कहा है कि भारतीय संस्कृति में उल्लेखित मर्यादाएं लम्बे अंतराल के बाद भी आज बनी हुई है। संस्कृति का उल्लेख सबसे पहले ऋग्वेद में आया है, जो आचार, विचार और व्यवहार को लेकर है। आरण्यक में आचार के स्थान पर सदाचार को संस्कृति की विशेषता बताया गया है। हमें अपनी सांस्कृतिक गरिमा को पुनः प्राप्त करना है और इन सांस्कृतिक कार्यक्रमों का उद्देश्य भी यही रहता है। उन्होंने बताया कि प्राचीनतम समय में वेदों और अवेस्ता की विषयवस्तु में देवताओं के साथ देवी की प्रतिष्ठा भी है। उन्होंने दोनों धर्मग्रंथों की साम्यता बताते हुए कहा कि ऋग्वेद और अवेस्ता दोनों का प्रारम्भ एक ही मंत्र से होता है, जो 'अग्निमीडे पुरोहितं' है। इससे पता चलता है कि भारतीय संस्कृति का प्रसार विश्वभर में था।

पारम्परिक वेश में डांडिया व लोकनृत्यों ने मचाई धूम

गरबा महोत्सव कार्यक्रम में राजस्थानी, हरियाणवी, गुजराती के सुमधुर लोकगीतों के साथ हिन्दी फिल्मों के संस्कृति प्रधान गीतों पर विभिन्न पारम्परिक राजस्थानी-गुजराती ड्रेसों के साथ नृत्यों एवं गरबा डांस की आकर्षक प्रस्तुतियां दी गई। कार्यक्रम के दौरान पलक एवं ग्रुप, सुप्रिया एवं समूह एवं खुशी एवं समूह ने सामुहिक नृत्य में गरबा की प्रस्तुति दी। निशिता एवं अनीता एवं प्रियंका व पलक ने युगल नृत्य पेश किए तथा ममता, खुशी जोधा, पूनम व कोमल प्रजापत ने एकल नृत्यों की प्रस्तुतियां दी। कार्यक्रम के विशिष्ट अतिथि अपेक्स यूनिवर्सिटी के प्रो. अशोक सिडाना ने संस्कृति के साथ लोकनृत्य के बारे में अपने विचार रखे।

एक महिला बदल सकती है पूरा समाज को

केन्द्रीय वितमंत्री निर्मला सीतारमण की सलाहकार दीवा जैन कोलकाता ने इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं को सम्बोधित करते हुए महिला शक्ति पर विचार रखे और कहा कि एक महिला पूरे समाज को बदल सकती है। किसी भी परिवार में एक महिला पढी हुई हो तो वह पूरे परिवार ही नहीं, समाज को भी दिशा दे सकती है। इसलिए अपने आप को साबित करो, निश्चित ही आपको सफलता मिलेगी और सभी ओर से भरपूर प्यार भी मिलेगा। कार्यक्रम में प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी, प्रो. जिनेन्द्र कुमार जैन व प्रो. लक्ष्मीकांत व्यास अतिथियों के रूप में मंचस्थ थे। कार्यक्रम के प्रारम्भ में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम का प्रारम्भ दुर्गापूजन एवं आरती के साथ किया गया। अंत में डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन अभिलाषा स्वामी व ज्योति बुरड़क ने किया। गरबा महोत्सव कार्यक्रम में डॉ. लिपि जैन, डॉ. सुनीता इंदौरिया, डॉ. आभा सिंह, डॉ. विनोद कस्वां, प्रगति चौरड़िया, खुशाल जांगिड़, देवीलाल, ईर्या जैन, जगदीश यायावर आदि एवं समस्त छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

मेहंदी और लहरिया महोत्सव कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान में श्रावणी पूर्णिमा व रक्षाबंधन के उपलक्ष्य में मेहंदी और लहरिया महोत्सव का आयोजन 17 अगस्त को किया गया। इस अवसर पर छात्राओं ने अलग-अलग तरह के रंग-बिरंगे लहरिये पहन कर शानदार राजस्थानी नृत्य प्रस्तुत करते हुए अपनी कला का प्रदर्शन करते हुए लोक-संस्कृति को जीवन्त किया। कार्यक्रम में संस्थान की समस्त छात्राओं ने बढ़-चढ़ कर हिस्सा लिया। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कार्यक्रम की सराहना करते हुए कहा कि यह त्यौहार महिलाओं के लिए विशेष अवसर होता है। कार्यक्रम समन्वयक डॉ. अमिता जैन ने छात्राओं द्वारा उत्सुकतापूर्वक हिस्सा लेकर अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करने को प्रशंसनीय बताया। इस अवसर पर डॉ. आभा सिंह, डॉ. लिपि जैन, डॉ. विनोद कस्वा, देशना चारण, डॉ. सुनीता इन्दौरिया, राधिका लोहिया

आदि संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

संकट की घड़ी में निडर होकर मन एवं मस्तिष्क को साधे रखें महिलाएं- नीतू चौपड़ा

साहसी पर्वतारोही-बाइकर नीतू चौपड़ा ने सिखाए आत्मरक्षा के गुर

विश्वभर में महिला सुरक्षा कोच, ब्लॉगर, बाइकर, पर्वतारोही के रूप में जानी जाने वाली हिम्मत एवं हौंसले की प्रतिमूर्ति नीतू चौपड़ा बालोतरा ने संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय एवं शिक्षा विभाग में छात्राओं को साहस का पाठ पढाया। 2 दिसम्बर को यहां आयोजित कार्यक्रम में चौपड़ा ने छात्राओं को आत्मरक्षा के अनेक गुर सिखाए, ताकि भविष्य में छात्राओं के लिए वे पाथेय का काम करे। चौपड़ा ने बताया कि हिम्मत और हौसला हर महिला के लिए आवश्यक है। जब कभी कोई संकट आए, तो उस विकट घड़ी में भी महिलाओं को अपने मन व मस्तिष्क को साधे रखना चाहिए। धैर्य और साहस से किसी भी परिस्थिति से मुकाबला किया जाना संभव होता है। कार्यक्रम के दौरान छात्राओं ने नीतू चौपड़ा से विभिन्न प्रश्न भी पूछे, जिनका समुचित समाधान चौपड़ा ने किया। इस अवसर पर नीतू चौपड़ा ने अपने खुद के जीवन के अनुभवों को भी प्रस्तुत किया, जिन्हें जानकर एवं उनके समक्ष आने वाली कठिनाइयों से पार होने की कहानी की रोचक जानकारी से छात्राएं रोमांचित व ऊर्जस्वित हुई।

चौपड़ा के जीवन के रोमांचक कार्य

चौपड़ा ने बताया कि हैदराबाद के देशभर में चर्चित प्रियंका रेड्डी गैंग रैप के विरोध में 'लड़कियों घर से बाहर निकलो अभियान' के तहत उन्होंने 18 दिन में कश्मीर से कन्याकुमारी तक 4600 किमी की यात्रा कर महिलाओं को आत्मनिर्भर बनने का संदेश दिया था। बाद में 'युवा जागेगा देश बचेगा' के आह्वान के साथ उन्होंने 'संपूर्ण भारत में अकेले बाइक राइड कर 20 हजार 354 किमी की यात्रा की तथा अपने साथ एक पैसा भी रखे बिना संपूर्ण भारत के 28 राज्यों व 9 केंद्र शासित प्रदेशों को बाइक से नापकर एक कीर्तिमान कायम कर पहली भारतीय महिला बनने का गौरव हासिल किया था। वर्तमान में वे 'प्रोजेक्ट परवाज- डर को डराओ, डेयरिंग बन जाओ' के तहत 5 देशों की ट्रक ड्राइवर के साथ लिफ्ट लेकर यात्रा कर रही हैं, जिसमें भारत तथा नेपाल की यात्रा पूर्ण हो चुकी है और अब भूटान की यात्रा करेंगी। वे एवरेस्ट बेस कैंप सर्किट 26 दिन में बिल्कुल अकेले करते हुए 48 घंटे ग्लेशियर में फंसने के बावजूद 'सेल्फ रेस्क्यू' करते हुए जिंदा वापस लौटी थी। हाल ही में उन्होंने पांच कैलाश की 580 किमी लंबी दुर्गम यात्रा 64 दिनों में पैदल चलकर पूर्ण की है। वे पैराग्लाइडिंग, पर्वतारोहण, समुद्री लहरबाजी, स्कूबा आदि एडवेंचर की ट्रेनिंग भी सफलतापूर्वक पूर्ण कर चुकी हैं। इसके अलावा 'कौन बनेगा करोड़पति' टीवी शो में अमिताभ बच्चन द्वारा भी उन्हें सम्मानित किया गया था।

अपूर्व साहस से भरी महिला हैं चौपड़ा

कार्यक्रम के प्रारम्भ में महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी व शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कार्यक्रम की रूपरेखा और नीतू चौपड़ा का परिचय प्रस्तुत करते हुए उनका स्वागत किया। उन्होंने नीतू चौपड़ा को दृढ संकल्पों युक्त, अतीव परिश्रमी एवं अपूर्व साहस से भरी महिला बताया। कार्यक्रम की अध्यक्षता अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रोफेसर रेखा तिवाड़ी ने करते हुए आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम का संचालन हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण व डॉ. अमिता जैन ने किया। कार्यक्रम के दौरान सभी संकाय सदस्यों एवं छात्राओं की उपस्थिति रही।

युवाओं के श्रम व कार्यबल के उपयोग के लिए अवसर उपलब्ध कराने जरूरी- प्रो. जैन

अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस तथा नशा मुक्ति कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में अन्तर्राष्ट्रीय युवा दिवस तथा नशा मुक्ति कार्यक्रम का आयोजन 12 अगस्त को किया गया। इस अवसर पर शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कहा कि सन् 2070 तक भारत युवा बना रहेगा, क्योंकि 1.4 अरब मानव संसाधनों में से लगभग एक अरब भारतीय 35 साल से कम उम्र के हैं। हमारी औसत उम्र 29 साल है। भारतीय युवाओं को सर्वश्रेष्ठ बनाने के लिए उनके लिए आर्थिक, शिक्षा, नवाचार, स्टार्टअप, उद्यमिता, कौशल आदि का ज्ञान आवश्यक है। स्टार्टअप परिस्थिति तंत्र को मजबूत बनाने के लिए युवाओं के श्रम व कार्यबल के बेहतर उपयोग के लिए उन्हें अधिक से अधिक अवसर उपलब्ध कराने होंगे। युवा उद्यमियों के सामने बाजार में उपलब्ध नवोन्मेष के असंख्य क्षेत्रों में से सूक्ष्म, छोटे और मध्यम उद्यमों से अपना स्टार्टअप शुरू किया जा सकता हैं। युवाओं में आत्मनिर्भरता बढ़ाना आवश्यक है। प्रो. जैन ने नशामुक्ति को लेकर भी सावचेत किया कि इससे बचना चाहिए। नशा शरीर का नाश करता है तथा कैंसर जैसी विभिन्न बीमारियों से ग्रसित करता है। सबको भारत सरकार की नशा मुक्त रहने की प्रतिज्ञा लेनी चाहिए। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारी लाल, खुशाल जांगिड, ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि के साथ ही बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिका उपस्थित रहीं।

जनता की दुखती नसों को पहचान कर चलाई थी कलम- प्रो. जैन

प्रख्यात लेखक मुंशी प्रेमचंद जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में 31 जुलाई को मुंशी प्रेमचंद जयंती का कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बताया कि उत्तरप्रदेश के लमही में 31 जुलाई 1880 को जन्मे प्रख्यात लेखक मुंशी प्रेमचंद का जीवन बहुत कठिनाईयों के साथ व्यतीत हुआ। अभाव को भी भाव के रूप में उन्होंने जिया। उनके रचित उपन्यासों में समाजवादी आदर्श की झलक मिलती है। इंसान की सेवा को ही वे ईश्वर की सच्ची पूजा मानते थे। गरीबों के दुःख-दर्द को उन्होंने बहुत तीव्रता के साथ अनुभव किया। उन्हें जनता की दुखती नसों को पहचाना। गरीबी और सामाजिक शोषण के वह खुद भी शिकार बन चुके थे। वे वर्ग जाति-पाति, छुआछूत और सांप्रदायिकता से बहुत ऊपर थे।

कथा साहित्य के माध्यम से दरिद्रता, भूख, अशिक्षा, शोषण को ललकारा

प्रो. जैन ने बताया कि मुंशी प्रेमचंद की कहानियां ग्रामीण जीवन की सजीव झांकियां उपस्थित करती हैं। उनके पात्रों में पिता-पुत्र, स्त्री-पुरुष, बाल-वृद्ध, हिंदू-मुस्लिम, उच्च और नीचे सभी वर्गों के लोग हैं, जिन्नका उन्होंने यथार्थ मनोवैज्ञानिक चित्रण किया है। कथा साहित्य को माध्यम बनाकर उन्होंने देहातियों की दरिद्रता, भूख, अशिक्षा, रूढ़िवादिता, सामाजिक शोषण, अंधविश्वास और लाचारियों का मार्मिक चित्रण किया है। अपने उपन्यास 'सेवा सदन' और 'प्रेम आश्रम' में उन्होंने समाज में स्त्रियों की असहाय दशा का वर्णन भी किया है। देश की बहुमुखी समस्याओं और आने वाले युग की पृष्ठभूमि को समझते हुए उन्होंने समस्याओं को सुलझाने की चेष्टा भी की है। 8 अक्टूबर 1936 को उनका देहावसान हो गया। मुंशी प्रेमचंद की कहानी और उपन्यास आज भी बड़े चाव से पढ़े जाते हैं। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, प्रमोद ओला, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी. एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रही।

सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में स्वामी, ठोलिया व बुरड़क तीनों प्रथम रहीं

संस्थान के शिक्षा विभाग में विभागीय सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता का आयोजन 3 अगस्त को किया गया। इस प्रतियोगिता में केन्द्रीय बजट, राष्ट्रीय शिक्षा नीति, सघन वृक्षारोपण महाभियान, ओलम्पिक खेल, प्रसिद्ध स्थान आदि से सम्बन्धित लिखित प्रतियोगिता परीक्षा ली गई। इसमें तीन छात्राओं अभिलाषा स्वामी, मोनिका ठोलिया, मोनिका बुरडक ने प्रथम स्थान हासिल किया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने इस अवसर पर कहा कि इन सबसे एक माह तक प्रतिदिन सामान्य ज्ञान के प्रश्न लिखवाये जाते रहे थे। उसके बाद यह परीक्षा ली गई है। इससे छात्राध्यापिकाओं में अध्ययन के साथ प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी की भावना विकसित की जाती है। इस सामान्य ज्ञान प्रतियोगिता में बी. एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की सभी छात्राध्यापिकाओं ने भाग लिया। इस दौरान शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, सुश्री स्नेहा शर्मा एवं सभी छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

छात्राध्यापिकाओं द्वारा विभिन्न विद्यालयों के विद्यार्थियों को निर्देशन तथा परामर्श प्रदान किया गया

संस्थान के शिक्षा विभाग की छात्राध्यापिकाओं द्वारा विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन के मार्गदर्शन में 14-19 अक्टूबर तक लाडनूं तथा जसवंतगढ़ के विद्यालयों में विद्यार्थियों की समस्याओं के समाधान तथा विद्यालय गतिविधियों में सुधार हेतु निर्देशन तथा परामर्श प्रदान किया गया। कार्यक्रम के प्रभारी डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने बताया कि छात्राध्यापिका दिव्या पारीक ने विमल विद्या भारती सी. सै. स्कूल लाडनूं के विद्यार्थियों की शैक्षिक समस्याओं तथा व्यावसायिक जिज्ञासाओं के समाधान हेतु मार्गदर्शन प्रदान किया। ज्योति फुलवरिया ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लाडनूं की कंप्यूटर लैब का अवलोकन किया और कंप्यूटर के महत्त्व से विद्यार्थियों को अवगत कराया तथा प्रधानाचार्य को लैब में आवश्यक सुधार हेतु सुझाव प्रस्तुत किए। ऐश्वर्या सोनी ने प्यारी देवी तापड़िया विद्यालय, जसवंतगढ़ में विज्ञान प्रयोगशाला का भ्रमण किया। वहां की कार्यशैली को जाना, विद्यार्थियों को प्रायोगिक कार्यों का महत्त्व बताया तथा लैब में आवश्यक सुधार हेतु प्रधानाचार्य को सुझाव प्रस्तुत किए। कृष्णा जैतमाल ने राजकीय उच्च प्राथमिक विद्यालनय नं. 4 लाडनूं की 'नो बैग डे' के दौरान होने वाली गतिविधियों का निरीक्षण कर विद्यार्थियों तथा प्रधानाचार्य को आवश्यक सुझाव प्रस्तुत किए। अभिलाषा स्वामी ने राजकीय उच्च माध्यमिक विद्यालय लाडनूं में होने वाली प्रार्थना सभा का तीन दिन अवलोकन किया, उस दौरान होने वाली गतिविधियों को जाना, विद्यार्थियों को प्रार्थना सभा के महत्त्व से अवगत कराया तथा कुछ अन्य गतिविधियों को विद्यार्थियों के विकास हेतु प्रार्थना में सम्मिलित करने का सुझाव प्रस्तुत किया। सभी विद्यार्थियों के प्रधानाचार्यों ने जैन विश्वभारती संस्थान के इस प्रकार के कार्य की सराहना की तथा इसे अपने विद्यार्थियों हेतु उपयोगी बताया।

जैन संस्कृति के मूल्यों में है वैश्विक समस्याओं का समाधान

'वैश्विक पर्यावरणीय समस्याएं एवं युवाओं की भूमिका' विषय पर आयोजित भाषण प्रतियोगिता में खुशी जोधा प्रथम रही

संस्थान के शिक्षा विभाग में आयोजित भाषण प्रतियोगिता में 20 नवम्बर को 'वैश्विक पर्यावरण समस्याएं एवं युवाओं के दायित्व' विषय पर विभिन्न छात्राध्यापिकाओं ने अपने वक्तव्य में विचार प्रकट किए। भाषण प्रतियोगिता में खुशी जोधा ने प्रथम, लक्ष्मी शर्मा ने द्वितीय एवं अंकिता अचेरा ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। प्रतिभागी स्टूडेंट्स फॉर डेवलपमेंट संस्थान द्वारा आयोजित तृतीय राष्ट्रीय पर्यावरण युवा संसद-2025 में जैन विश्व भारती संस्थान का प्रतिनिधित्व करते हुए भाग लेंगे, जिसका आयोजन जनवरी 2025 में जयपुर में किया जायेगा।

प्रतियोगिता में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि वैश्विक स्तर पर हो रहे विकास के साथ पर्यावरण सम्बन्धी समस्याएं लगातार बढती जा रही हैं। इनमें ग्लोबल वार्मिंग, जल एवं वायु प्रदूषण प्रमुख हैं, जिनसे आम जनजीवन प्रभावित हो रहा है। भारत के प्रमुख राज्य एवं शहर घटते भूमिगत जल स्तर, अनुपजाऊ मृदा, बढ़ते दैनिक तापक्रम जैसी समस्याओं से प्रभावित हो रहे हैं, जिनमें दिल्ली, पंजाब, हरियाणा चेन्नई, हैदराबाद आदि प्रमुख हैं। उन्होंने विद्यार्थियों को पुनः प्राचीन भारतीय मूल्यों को अपनाने हेतु प्रेरित करते हुए कहा कि जीवन में जैन संस्कृति के अनुसार संयम को धारण करने से हमारी आवश्यकताओं को कम किया जा सकता है, जिससे प्राकृतिक संसाधनों के दोहन को रोका जा सकता है। प्रतियोगिता के निर्णायक डॉ. विष्णु कुमार व गिरधारी लाल शर्मा थे। डॉ. विष्णु कुमार ने इस अवसर पर छात्राध्यापिकाओं को भाषण कला से सम्बंधित कौशल हाव-भाव पूर्ण प्रस्तुतीकरण, प्रभावी सम्प्रेषण और विषय सामग्री को प्रभावी बनाने की आवश्यकता बताई। वहीं निर्णायक डॉ. गिरधारी लाल शर्मा ने विद्यार्थियों को पर्यावरण से जुडी वैश्विक समस्याओं के गहन अध्ययन एवं भविष्य में किये जाने वाले उपायों हेतु युवाओं की सकारात्मक भूमिका के बारे में विचार रखे।

कार्यक्रम में खुशी, पूजा, अंकिता, इरम, लिछमा, सुमन, मोनिका, तनिष्का, निकिता, मंजू, लक्ष्मी, चंपा आदि प्रतिभागियों ने भाषण देते हुए पर्यावरण सम्बन्धी अनेक विषयों पर विचार रखे। कार्यक्रम के समन्वयक एवं निर्णायक डॉ. गिरिराज भोजक ने सभी प्रतिभागियों एवं संकाय सदस्यों का आभार ज्ञापित करते हुए सभी विजेताओं को शुभकामनाएं प्रेषित की। कार्यक्रम में डॉ. अमिता जैन, डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, देवीलाल कुमावत, खुशाल जांगिड, स्नेहा शर्मा, डॉ. ममता शर्मा आदि संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम का संचालन लाछा चौधरी ने किया।

महायोगी महर्षि अरविन्द पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में महायोगी श्री अरविंद के बारे में आयोजित व्याख्यान में डॉ. मनीष भटनागर ने बताया कि महायोगी अरविंद का जन्म 15 अगस्त 1872 को कोलकाता में हुआ था। इनके पिता कोलकाता के सिविल सर्जन थे। अरविंद की पढ़ाई इंग्लैंड में हुई और उन्होंने इंडियन सिविल सर्विस परीक्षा उत्तीर्ण की। उन्होंने अंग्रेजी दासता स्वीकार करने के बजाए 1893 में महाराजा श्यामजी राव के यहां 13 वर्ष तक नौकरी की और 1905 में बंग-विभाजन के समय सक्रिय राजनीति में आ गए। इन्होंने कर्मयोगी साप्ताहिक पत्र भी प्रारंभ किया, जिसका प्रभाव संपूर्ण देश के विचारों पर पड़ा। श्री अरविंद को 1908 में जिला जज किंग्सफोर्ड की गाड़ी पर बम फेंकने के आरोप में गिरफ्तार किया गया था, जो मुजफ्फरपुर के जिला जज थे। देशबंधु चितरंजन दास की कुशल पैरवी के कारण किया वे रिहा हुए। फिर सक्रिय राजनीति से अलग होकर स्वामी ब्रह्मानंद से मिलने पर आध्यात्मिक सदनों में बढ़ने लगे। 1907 में विष्णु भास्कर लेले के साथ तीन दिन साधना की और अनुभव प्राप्त किया। 1910 में पांडिचेरी चले गए। इन्हें दो बार कांग्रेस अध्यक्ष बनाने को कहा गया, लेकिन उन्होंने पद स्वीकार नहीं किया। इन्होंने 'आर्य' नामक मासिक पत्र प्रकाशित करना आरंभ किया, जो 1921 में बंद हो गया। 1926 में अरविंद ने पांडिचेरी में आश्रम की स्थापना की और 5 दिसंबर 1950 को इनका निधन हुआ।

श्री अरविंद के अनुसार जो दर्शन में ब्रह्म है, वही धर्म में ईश्वर कहना चाहिए। विश्व ब्रह्म की लीला है, ज्ञान एवं अज्ञान परस्पर विरोधी नहीं है। उन्होंने विकास के सिद्धांत पर गंभीर विवेचन किया था। श्री अरविंद राष्ट्र को माता एवं शक्ति के रूप में मानते थे। उनके अनुसार आध्यात्मिक क्षेत्र में भारत विश्व में सिरमौर है। राष्ट्रवाद एक धर्म है। श्री अरविंद के अनुसार व्यक्ति का आध्यात्मिक रूपांतर आवश्यक है। उनके अनुसार शिक्षा का आधार अंतरण है जिसके चार पटल हैं- भूतकालिक, मानसिक, संस्कार, मानस बुद्धि एवं सत्य के अंतर्दृष्टिकरण। शिक्षकों को इसके विकास की ओर ध्यान देना चाहिए। अरविंद के अनुसार पाठ्यक्रम से शारीरिक, मानसिक, आध्यात्मिक, भावात्मक और बौद्धिक विकास होना चाहिए। वह विद्यार्थियों को सक्रिय बनाने के पक्षधर थे। व्याख्यान में विभाग के अध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, खुशाल जांगिड़, स्नेहा शर्मा, प्रमोद ओला एवं सभी विद्यार्थी उपस्थित थे।

कृष्ण के विराट् व्यक्तित्व से प्रेरणा लें- डॉ. भटनागर

छात्राध्यापिकाओं ने जन्माष्टमी पर्व मनाया, नृत्य व भजनों से कृष्ण को रिझाया

संस्थान के शिक्षा विभाग द्वारा जन्माष्टमी पर्व को लेकर 24 अगस्त को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भगवान श्रीकृष्ण के विराट् व्यक्तित्व से प्रेरणा लेने को प्रोत्साहित किया गया और उनके बताए कर्म और फल के अनुरूप सदैव सत्य के मार्ग पर चलने की आवश्यकता बताते हुए उनके संदेश को जीवन में आत्मसात करने की जरूरत बताई गई। डॉ. मनीष भटनागर ने कार्यक्रम में अपने विचार रखते हुए कृष्ण जन्माष्टमी पर्व को भारतीय संस्कृति का प्रमुख पर्व बताया और विद्यार्थियों को इस अवसर पर कृष्ण को याद करने के साथ ही अपने व्यक्तित्व में शुचिता, सद्भावना और निश्चल प्रेम जैसे गुणों को विकसित करने के लिए प्रेरित किया।

नृत्य, भजनों, कविताओं से रिझाया कृष्ण को

डॉ. विष्णु कुमार ने पर्व से सम्बंधित महान व्यक्तित्व के आचरण से प्रेरणा लेते हुए सदैव परोपकार, जन कल्याण एवं सामाजिक सहभागिता से सम्बंधित कर्म करने के लिए छात्राध्यापिकाओं को प्रेरित किया। कार्यक्रम में सुप्रिया, उर्मिला, दीपिका आदि ने सामूहिक भजन, निशा स्वामी ने एकल भजन, लाछा चौधरी ने कविता, ज्योत्सना कंवर ने विचार अभिव्यक्ति, प्रियंका एवं कोमल ने मनमोहक नृत्य की प्रस्तुतियां देकर वातावरण को भक्तिमय बना दिया। कार्यक्रम के समन्वयक डॉ. गिरिराज भोजक ने आभार ज्ञापित करते हुए श्रीकृष्ण के व्यक्तित्व से मातृ प्रेम, कर्म प्रधान व न्यायपूर्ण जीवन, पशु एवं प्रकृति प्रेम जैसे सद्गुणों को अपनाने पर बल दिया। कार्यक्रम का प्रारम्भ कृष्ण-पूजन से किया गया एवं भगवान श्रीकृष्ण की सामूहिक आरती के साथ सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम में डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, देवीलाल कुमावत, खुशाल जांगिड, स्नेहा शर्मा आदि संकाय सदस्य एवं छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं। कार्यक्रम का संचालन अभिलाषा स्वामी ने किया।

हिंदी दिवस मनाया

मान, सम्मान और गौरव की भाषा है हिन्दी

संस्थान के शिक्षा विभाग में हिंदी दिवस के अवसर पर 14 सितम्बर को आयोजित कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने कहा कि हिंदी हमारी राष्ट्रभाषा होने के साथ ही हमारे मान, सम्मान और गौरव की भाषा है। विश्व में हमारी पहचान है तो हमारी राष्ट्रभाषा के कारण ही है। वर्तमान राष्ट्रीय शिक्षा नीति- 2020 से हमारी मातृभाषा और राष्ट्रभाषा का महत्त्व बढा है। हमें अपने क्षेत्र में हिंदी भाषा को और मजबूत बनाना है। जिन राज्यों में हिंदी समझने में दिक्कत आती है, उनमें हिंदी भाषा को सिखाने का प्रयास होना चाहिए। अनेक हिन्दीभाषी कवियों, रचनाकारों ने अपना साहित्य रचकर भाषा को गौरवान्वित किया है। कार्यक्रम में कुसुमलता, कंचन, कोमल स्वामी, अभिलाषा स्वामी, हर्षिता सोनी आदि विद्यार्थियों ने गायन, कविता, भाषण आदि के माध्यम से अपनी अभिव्यक्ति दी। कार्यक्रम का संचालन छात्राध्यापिका प्रकृति ने किया। अंत में डॉ. अमिता जैन ने आभार ज्ञापित ने किया। कार्यक्रम में समस्त संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गुरू नानक जयंती पर कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में गुरु नानक जयंती पर्व पर 14 नवम्बर को कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने गुरु नानक को सिख पंथ के रूप में एक नए धर्म का संस्थापक बताया तथा कहा कि वे महान आध्यात्मिक नेता थे, जो ईश्वर व आत्मा में विश्वास करते थे। गुरु नानक देव ने निःस्वार्थ सेवा, विनम्रता और सत्य की खोज के महत्त्व पर जोर दिया था। उन्होंने महिलाओं, उनके अधिकारों और समानता के बारे में बात की। उन्होंने नामजप का महत्त्व बताया था। उनकी शिक्षाएं उनके साथ ही समाप्त नहीं हुईं, बल्कि उनके उत्तराधिकारियों के माध्यम से अगली पीढ़ियों तक पहुंचीं और वे शिक्षाएं अब सिखों की पवित्र पुस्तक 'गुरु ग्रंथ साहिब' में शामिल हैं। डॉ. विष्णु कुमार ने गुरु नानक पर अपने विचारों में बताया कि गुरू नानक ने दूसरों की मदद और सेवा करके आध्यात्मिक जीवन जीने की शिक्षा दी। उन्होंने सिख धर्म के तीन स्तंभों- नाम-जप, एक ही शाश्वत निर्माता और भगवान मानना तथा वंड चकना यानि मिलजुलकर खाना और बांटना। गुरु नानक के काल में जाति व्यवस्था अपने चरम पर थी, उन्होंने उसके खिलाफ आवाज उठाई और जाति, पंथ, नस्ल, स्थिति आदि सभी भेदभावों के खिलाफ लोगों तक पहुंच बनाई। कार्यक्रम में संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिधारी लाल शर्मा, ममता पारीक, स्नेहा शर्मा आदि उपस्थित रहे।

गणेश चतुर्थी कार्यक्रम में भजन-वंदना, श्लोक, आरती की प्रस्तुति

संस्थान के शिक्षा विभाग में गणेश चतुर्थी के अवसर पर 7 सितम्बर को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में भगवान गणपति का पूजन कर उनको लड्डुओं का भोग लगाया गया। साथ ही गणेश वंदना के साथ उनके महत्त्व व पूजन की जानकारी व परम्परा के बारे में बताया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने देश के विभिन्न भागों में आयोजित होने वाले गणेश उत्सव को देश की सामाजिक एवं धार्मिक एकता का आधार बताया और सभी प्रशिक्षणार्थियों को ऐसे उत्सवों में उत्साहपूर्वक भाग लेने हेतु प्रोत्साहित किया। उन्होंने भगवान गणपति को बुद्धि एवं सिद्धि का देवता बताया और कहा कि जीवन में सुख एवं समृद्धि का भंडार भरने के लिए उनकी पूजा की जाती है। उन्हें कुशाग्र बुद्धि सम्पन्न बताते हुए उन्होंने कहा कि वे हमें सदैव बुद्धिमान एवं ज्ञानवान बनने हेतु प्रेरित करते हैं। कार्यक्रम में पूनम पंवार ने गजानन भगवान का पौराणिक आख्यान, दीपिका एवं कोमल प्रजापत ने गणेश वंदना, धापू चौधरी ने गणेशजी के मुख्य श्लोक, कोमल ने गीत, कंचन ने मारवाड़ी भजन, हर्षिता ने विचार अभिव्यक्ति की प्रस्तुतियां दी। सामूहिक आरती के साथ कार्यक्रम सम्पन्न किया गया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता शर्मा, देवीलाल कुमावत, खुशाल जांगिड आदि सभी संकाय सदस्य उपस्थित रहे। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. गिरिराज भोजक ने अंत में शुभकामनाओं के साथ आभार ज्ञापित किया। कार्यक्रम में मंच संचालन आयुश्री चोटिया ने किया।

संस्कृत दिवस व रक्षाबंधन कार्यक्रम आयोजित

संस्कृत साहित्य का पठन-पाठन जीवन में आवश्यक

संस्थान के शिक्षा विभाग में संस्कृत दिवस एवं रक्षाबंधन का आयोजन 20 अगस्त को किया गया। कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि संस्कृत भाषा संसार की प्राचीनतम भाषा है। इस भाषा में नवीन विषय सामग्री के साथ विश्व की प्रत्येक समस्या का समाधान निहित है। यह भाषा भौतिकता की अपेक्षा आध्यात्मिकता से ओतप्रोत है। इस भाषा में वेद, उपनिषद, स्मृति, पुराण आदि श्रेष्ठ ग्रन्थ लिखे गये हैं। अतः भारतीय संस्कृति का स्रोत संस्कृत भाषा ही है और इसका साहित्य अत्यधिक समृद्ध है। हमें अपने जीवन में संस्कृत साहित्य का पठन-पाठन करना चाहिए। उन्होंने रक्षाबंधन के महत्त्व के बारे में बताया कि रक्षाबंधन आध्यात्मिक पृष्ठभूमि का पर्व है। जिसमें आध्यात्मिक संकल्प के साथ बहनें अपने भाइयों के राखी बांधती हैं और तिलक लगाती हैं। इस दिन कार्यों में पवित्रता और कोई गलत कार्य नहीं करने की अपेक्षा हर बहिन की अपने भाई से रहती है। इस अवसर पर बांधा जाने वाला पवित्र धागा धार्मिक एवं आत्मिक मनोभावों को लेकर बांधा जाता है। कार्यक्रम के संयोजक डॉ. अमिता जैन ने भी अपने विचार व्यक्त किये तथा शिक्षा विभाग की समस्त संकाय सदस्य एवं छात्राएं उपस्थित रहीं।

महात्मा गांधी जयंती मनाई

महात्मा गांधी के सत्य और अहिंसा आज भी जरूरी हैं

संस्थान के शिक्षा विभाग में महात्मा गांधी जयंती पर 1 अक्टूबर को एक कार्यक्रम का आयोजन किया गया। कार्यक्रम में सहायक प्रोफेसर डॉ. विष्णु कुमार ने कहा कि आज गांधीजी के बताए हुए सत्य व अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करने की आवश्यकता है। महात्मा गांधी ने अपने अहिंसात्मक आंदोलन के बल पर अंग्रेज सरकार की मनमानियों का मुकाबला किया।

इनमें चंपारण व खेड़ा सत्याग्रह, नमक सत्याग्रह, धरसाना का सत्याग्रह आदि सफल रहे। उनके सत्याग्रह का अमेरिकन, क्टिविस्ट मार्टिन लूथर, जेम्स बेवल आदि पर बहुत गहरा प्रभाव पड़ा। अहिंसा का विज्ञान व्यक्ति को शुद्ध लोकतंत्र के मार्ग पर ले जाने में सक्षम है। गांधी ने स्वदेशी आंदोलन, हिन्दू-मुस्लिम एकता, शिक्षा के साथ स्किल डेवलपमेंट, शिक्षा की भाषा मातृभाषा रखे जाने आदि महत्त्वपूर्ण कार्य किये। उनकी ताकत सत्य और अहिंसा ही थी। आज भी उनके सिद्धान्तों को अपनाकर समाज में महत्त्वपूर्ण बदलाव लाया जा सकता है। कार्यक्रम में विभाग की छात्राएं, संकाय सदस्य सहायक प्रोफेसर डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, खुशाल, ममता शर्मा आदि उपस्थित रहे।

राष्ट्रीय एकता व दीपोत्सव कार्यक्रम आयोजित किया

संस्थान के शिक्षा विभाग के अंतर्गत दीपोत्सव व सरदार पटेल जयंती का आयोजन 28 अक्टूबर को विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में किया गया। प्रो. जैन ने कार्यक्रम के दौरान कहा कि दीपावली हमारे देश की सांस्कृतिक एकता की प्रतीक है और लौहपुरूष सरदार पटेल देश की भौतिक एकता के प्रतीक थे। इस बार 31 अक्टूबर को दोनों अवसर एक साथ आ रहे हैं। उन्होंने छात्राध्यापिकाओं से कहा कि सरदार पटेल का जीवन-दर्शन युवाओं के लिए प्रेरणादायक है। आजाद भारत में बिखरी हुई रियासतों का विलय करते हुए सरदार पटेल ने ही देश को एकता के सूत्र में बांधा था। पूरा देश हर वर्ष 31 अक्तूबर को उनकी जयंती 'एकता दिवस' के तौर पर मनाता हैं। इस कार्यक्रम में संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी लाल शर्मा, डॉ. ममता, खुशाल जांगिड, स्नेहा शर्मा, देवीलाल कुमावत आदि के साथ छात्राओं ने भी दीपोत्सव एवं सरदार पटेल के जीवन पर अपने विचार व्यक्त किए।

दीपावली पर तीन दिवसीय कार्यक्रम आयोजित

संस्थान के शिक्षा विभाग में मनाए गए तीन दिवसीय दीपावली कार्यक्रम (24-26 अक्टूबर) में स्वच्छता अभियान, साहित्यक कार्यक्रम तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम आयोजित किए गए। साहित्यक कार्यक्रम में संयोजक देवीलाल कुमावत की देखरेख में आयोजित किया गया। इस अवसर पर उन्होंने बताया कि दीपावली का पर्व कार्तिक अमावस्या को पूरे भारतवर्ष में हर्षोल्लास के साथ मनाया जाता है। इस दिन मर्यादा पुरुषोत्तम भगवान राम ने धर्म से अधर्म पर विजय प्राप्त की थी। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने बताया कि दीपावली का पर्व राष्ट्रीय एकता का पर्व है। धार्मिक मान्यता के अनुसार इस दिन धन की देवी लक्ष्मी की पूजा की जाती हैं। यह पर्व मानव को समस्त बुराइयां छोड़कर अच्छाइयां अपनाने पर बल देता है।

सांस्कृतिक कार्यक्रम में बीएसी-बीएड तीसरे सेमेस्टर की छात्राओं रश्मि और आयुषी ने भजन प्रस्तुत किया। इनसे पूर्व स्वच्छता अभियान में डॉ. आभा सिंह, डॉ. ममता और खुशाल जांगिड़ के नेतृत्व में स्वच्छता का कार्यक्रम सभी छात्राओं ने विभाग मे किया।

इन सभी कार्यक्रमों में सभी संकाय सदस्य डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. गिरधारी शर्मा, स्नेहा शर्मा आदि इस तीन दिवसीय कार्यक्रम में उपस्थित रहे।

दो दिवसीय कार्यशाला में दी पीपीटी की जानकारी

संस्थान के शिक्षा विभाग दो दिवसीय कार्यशाला (9-10 अगस्त) का आयोजन शिक्षा विभाग के विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन की अध्यक्षता में किया गया। प्रो. जैन ने कहा कि विद्यार्थियों को इस विषय की जानकारी जरूरी बताते हुए इसे वर्तमान युग की मांग बताया। कार्यक्रम की संयोजक डॉ. अमिता जैन ने विद्यार्थियों को प्रेरणा प्रदान की। कार्यशाला में आईसीटी मैन्टर हर्षिता सोनी एवं चंचल सोनी ने विद्यार्थियों को प्रशिक्षण प्रदान किया। कार्यशाला में बी.एड., बी.ए.-बी.एड., बीएससी.-बीएड. की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

आदिवासी दिवस कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में 9 अगस्त को अन्तर्राष्ट्रीय आदिवासी दिवस कार्यक्रम आयोजित किया गया। विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने कार्यक्रम में कहा कि 'स्वैच्छिक अलगाव और प्रारम्भिक सम्पर्क' के रूप में इस वर्ष यह दिवस मनाया जा रहा है। आदिवासी लोगों ने पेड़-पौधे, जल, जंगल, जानवर, जैव विविधता आदि के संरक्षण को महत्त्व दिया है। मान्यताओं, परम्पराओं, पर्दाप्रथा आदि को विशेष महत्त्व देते हैं। ये मिट्टी के घर, गोबर के घर, लकड़ी के घर बनाकर रहते हैं। भारत में आदिवासी आबादी की कुल जनसंख्या का 8.6 प्रतिशत और राजस्थान में आबादी जनसंख्या का 13.5 प्रतिशत है। सरकार की अनेक योजनाओं का लाभ पिछड़ेपन और शिक्षा के अभाव में ये नहीं ले पाते है। कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरिराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, प्रमोद ओला, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए.-बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिका उपस्थित रहीं।

व्याख्यान का आयोजन

स्वाध्याय से मानसिक ऊर्जा और शक्ति का संवर्धन होता है

संस्थान के शिक्षा विभाग में 'स्वाध्याय से बड़े पदों को पाना' विषय पर 12 दिसम्बर को व्याख्यान का आयोजन किया गया। व्याख्यान में विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया कि पुस्तक पढ़कर व साहित्य का अनुशीलन कर स्वाध्याय किया जाता है। स्वाध्याय में व्यक्ति स्वयं के गुण-दोषों का अध्ययन भी करता है। प्रशासनिक अधिकारी, शिक्षाविद्, डॉक्टर, इंजीनियर, वकील आदि बड़े पदों पर स्वाध्याय के माध्यम से पहुंचा जा सकता है। अधिकांश विद्यार्थी विविध पुस्तकों का स्वाध्याय कर ज्ञान प्राप्त करते हैं। उसी से प्रतियोगी परीक्षा में सफल होते हैं। जब वे प्रतियोगी परीक्षा में सफल हो जाते हैं, उसके बाद उन्हें पद और प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। स्वाध्याय करने से ज्ञान प्राप्ति तो होती है, इसके अतिरिक्त मन शांत, पवित्र, और आनंद से परिपूर्ण होता है।

प्रातः काल आध्यात्मिक या धार्मिक ग्रन्थ का स्वाध्याय करना चाहिए, उसके बाद उद्देश्यपरक विषयों का स्वाध्याय करना, उसके पश्चात शाम के समय रुचिकर और ज्ञानवर्धक विषयों का स्वाध्याय करना चाहिए। स्वाध्याय करने से मानसिक ऊर्जा और शक्ति का संवर्धन होता है। स्वाध्याय एक तपस्या है। जब सब सो रहे होते हैं या कुछ टी.वी. देख रहे होते हैं या मनोरंजन की गतिविधियों को देख रहे होते हैं। उस समय स्वाध्यायी व्यक्ति उन चीजों का त्याग करके उद्देश्यपरक सामग्री का अध्ययन करता है। उसी से उच्च पद प्राप्त करता है। स्वाध्याय प्रक्रिया में किसी पुस्तक का स्वाध्याय करने के बाद, उस विषय पर चिंतन करना, ध्यान लगाना, विषय का स्मरण करना, उसके बाद उसका लेखन कार्य करना चाहिए। इससे ज्ञान की ग्रहणशीलता बढ़ेगी और ज्ञान का संवर्धन होगा। उन्होंने कहा कि स्वाध्याय मस्तिष्क का भोजन है। स्वाध्याय मस्तिष्क में प्रसन्नता, खुशी, आनंद की अनुभूति भर देता है। मनोनुकूल स्वाध्याय आत्मा को भी आनंदित कर देता है। शरीर को भोजन से पोषित किया जा सकता है और मस्तिष्क को साहित्य के स्वाध्याय से संपोषित किया जा सकता है। स्वाध्याय मस्तिष्क में शक्ति भरता है, स्वाध्याय से व्यक्ति हमेशा प्रमुदित रहता है। श्रेष्ठ साहित्य, धार्मिक साहित्य, आध्यात्मिक साहित्य हमारे आंतरिक स्राव या हार्मोन्स को परिवर्तन कर देते हैं। जिन व्यक्तियों के माइग्रेन, बीपी, सिर दर्द, बेचैनी आदि रहते हैं। उनके हार्मोन्स को यह चेंज कर देते हैं और व्यक्ति के अंदर से स्वस्थ संजीव, सक्रियता जीवंतता लाने का कार्य करते हैं।

कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के डॉ. मनीष भटनागर, डॉ. विष्णु कुमार डॉ. अमिता जैन, डॉ. गिरीराज भोजक, डॉ. आभा सिह, डॉ. गिरधारीलाल, खुशाल जांगिड, डॉ. ममता पारीक, सुश्री स्नेहा शर्मा आदि एवं शिक्षा विभाग की बी.एड, बी.ए. बी.एड एवं बी.एस.सी-बी.एड की छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

जनजातीय गौरव दिवस तथा जनजातीय गौरव वर्ष पर कार्यक्रम आयोजित बिरसा मुंडा को किया याद

संस्थान के शिक्षा विभाग में विश्वविद्यालय अनुदान आयोग के निर्देशानुसार आयोजित राष्ट्रीय जनजाति गौरव दिवस कार्यक्रम में विभागाध्यक्ष प्रो. बी.एल. जैन ने बिरसा मुंडा को जनजातीय प्रेरणा के स्रोत और मार्गदर्शक व्यक्तित्व का धनी बताया तथा कहा कि बिरसा मुंडा ने जनजातीय संस्कृति का संरक्षण और संवर्धन करने का निरंतर प्रयास किया। उन्होंने स्वतंत्रता आंदोलन में अंग्रेजों के खिलाफ संघर्ष किया। स्वतंत्रतासेनानी के रूप में जनजातीय लोगों में उनका नाम आदर व सम्मान के साथ याद किया जाता है। बिरसा मुंडा ने सामाजिक व सांस्कृतिक शोषण के विरुद्ध भी संघर्ष किया और शोषण को दूर करने के लिए शिक्षा को श्रेष्ठ माध्यम बताया था। जनजातीय लोग इस महामना को भगवान की तरह से पूजा करते हुए उनकी जयंती मनाते हैं।

भारत सरकार ने बिरसा मुंडा के प्रगतिशील विचारों और जनजातियों के विकास व उत्थान के लिए किए गए कार्यों के कारण सभी संस्थाओं में उनकी जयंती को राष्ट्रीय जनजातीय गौरव दिवस और जनजातीय गौरव वर्ष के रूप में मनाने का निर्णय लिया है। इस कार्यक्रम में शिक्षा विभाग के सभी सदस्य व छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं। अंत में कार्यक्रम की प्रभारी डॉ. ममता पारीक ने धन्यवाद ज्ञापित किया।

अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस कार्यक्रम का आयोजन

संस्थान के शिक्षा विभाग में अंतर्राष्ट्रीय दिव्यांग दिवस पर 3 दिसम्बर को कार्यक्रम आयोजित किया गया। इस अवसर पर विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने कहा कि सभी के लिए अधिक समावेशी और टिकाऊ दुनिया बनाने में विकलांग व्यक्तियों द्वारा निभाई जाने वाली महत्त्वपूर्ण भूमिका को पहचानने के लिए एक वैश्विक आह्वान की आवश्यकता है। यह भागीदारी, प्रतिनिधित्व और समावेशन की बुनियादी आवश्यकताओं को दर्शाता है और विकलांग व्यक्तियों से अपने जीवन की परिस्थितियों को सक्रिय रूप से आकार देने का आह्वान करता है। उन्होंने बताया कि सामाजिक न्याय और अधिकारिता मंत्रालय द्वारा दिव्यांगजनों को सार्वभौमिक पहुंच प्रदान करने, समान अवसर प्रदान करने, स्वतंत्र जीविका के साधन सुनिश्चित करने और समावेशी समाज के सभी पहलुओं में उनकी भागीदारी में सहायता प्रदान करने के उद्देश्य से शुरू किया गया। हमें इस प्रकार के बालकों को प्रोत्साहित करना चाहिए, उन्हें आगे बढ़ाने में हमारा भरसक प्रयास होना चाहिए।

कार्यक्रम संयोजक डॉ. अमिता जैन ने बताया कि विश्व स्वास्थ्य संगठन के एक अनुमान के अनुसार विश्व स्तर पर करीब 15 प्रतिशत आबादी किसी न किसी प्रकार की विकलांगता से ग्रसित है, जिसमें से 80 फीसदी विकासशील देशों में रहते हैं। इस अवसर पर पलक शर्मा एवं आशा ने भी अपने विचारों की अभिव्यक्ति दी और बताया कि एक आकलन के अनुसार हर 1000 बच्चों में से 5 को गंभीर श्रवण हानि होती है। कार्यक्रम में बी. एड. की छात्राध्यपिकायें व संकाय सदस्य उपस्थित रहे।

फिट इंडिया सप्ताह

फिट इंडिया के तहत निबंध लेखन तथा समूह- चर्चा कार्यक्रम आयोजित

भारत सरकार के खेल मंत्रालय तथा विश्वविद्यालय अनुदान आयोग (यूजीसी) नई दिल्ली के निर्देशानुसार संस्थान में चल रहे फिट इंडिया सप्ताह 2024 के अंतर्गत निबंध लेखन व समूह चर्चा कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि 'स्वास्थ्य ही धन है' विषय पर आयोजित निबंध लेखन में विद्यार्थियों ने अपने विचारों को शब्दों में उकेरा। इसके अलावा फिट रहने के लिए दैनिक जीवन में अपनाई जाने वाली क्रियाओं के सम्बन्ध में आयोजित समूह-चर्चा में विद्यार्थियों ने अपने विचार साझा किये।

योग एवं प्रेक्षाध्यान का करवाया अभ्यास

फिट इंडिया सप्ताह के तहत संस्थान के सदस्यों एवं विद्यार्थियों को योग एवं प्रेक्षाध्यान करवाया गया। इसके तहत विद्यार्थियों को योगासन में सूर्य-नमस्कार, ताड़ासन, वृक्षासन आदि एवं योग क्रियाएं करवाई गई। प्रेक्षाध्यान की क्रियाओं का अभ्यास करवाया गया। डॉ. स्नेहलता जोशी, डॉ. बलवीर सिंह आदि ने सभी यौगिक गतिविधियां करवाई, जिनमें सभी संस्थान सदस्यों एवं विद्यार्थियों ने उत्साह पूर्वक भाग लिया।

देशी खेलों में रुचि जागृत करने के लिए कार्यक्रम आयोजित

फिट इंडिया सप्ताह के तहत स्थानीय खेलों में रुचि जागृत करने के लिए कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसमें आयोजित लंगड़ी-दौड़ खेल में छात्राओं ने भाग लेकर परंपरागत व स्थानीय खेलों के प्रति रुचि दिखाई। कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बलबीर सिंह ने बताया कि आयोजन का मुख्य उद्देश्य विद्यार्थियों में स्थानीय स्वदेशी खेलों के प्रति रुचि जागृत करना एवं उन्हें नियमित रूप से इन्हें खेलने के लिए प्रेरित करना रहा। इस अवसर पर कार्यक्रम अधिकारी डॉ. बलबीर सिंह के साथ खेल प्रशिक्षक दशरथ सिंह, अभिषेक चारण सहित अनेक विद्यार्थी उपस्थित रहे।

शरीर, व्यवहार, भावना व मन का बेहतर तारतम्य ही व्यक्तित्व विकास में सहायक- डॉ. राजश्री

व्यक्तित्व विकास पर अतिथि व्याख्यान का आयोजन

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में हैदराबाद से समागत मोटिवेशनल स्पीकर डॉ. राजश्री दूगड़ द्वारा 17 सितम्बर को 'व्यक्तित्व विकास' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया गया। डॉ. राजश्री ने अपने वक्तव्य में समाहित व्यक्तित्व विकास के पहलुओं को बिंदुवार तरीके से प्रस्तुत किया। उन्होंने बिहेवियर, फिजिकल, मेंटल एवं इमोशनल स्तरों में बेहतरीन तारतम्यता को ही व्यक्तित्व विकास के लिए अहम माना और मेंटल प्रेशर के कारणों को उनके निवारणों के साथ कई दैनिक जीवन उद्धहरणों के माध्यम से प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर डॉ राजश्री ने छात्राओं को व्यक्तित्व विकास में सहायक प्राणायाम संबंधित कई प्रयोग भी करवाए। प्रारंभ में अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने डॉ. राजश्री दूगड़ का पुष्पगुच्छ प्रदान कर अभिनंदन किया। कार्यक्रम के अध्यक्ष प्राचार्य प्रो. आनन्द प्रकाश त्रिपाठी ने स्वागत वक्तव्य प्रस्तुत किया। कार्यक्रम संचालन अभिषेक चारण ने किया।

मासिक व्याख्यानमाला का आयोजन रचनाकार और उसकी रचनाधर्मिता का किया गया विश्लेषण

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी की अध्यक्षता में आयोजित मासिक व्याख्यानमाला में 28 सितम्बर को हिंदी व्याख्याता अभिषेक चारण ने 'रचनाकार एवं उसकी रचनाधर्मिता' विषय पर व्याख्यान प्रस्तुत किया। उन्होंने अनेक ऐतिहासिक साक्ष्य प्रस्तुत करते हुए रचनाकार द्वारा रचनात्मक धर्म के निर्वहन के तहत सर्वप्रथम आराध्य की स्तुति के महत्त्व को प्रतिपादित किया, साथ ही स्व को परिचयात्मक रूप से प्रस्तुत करने वाली रचना-धर्मिता की ओर भी इशारा किया।

अध्यक्षीय उद्बोधन में प्रो. त्रिपाठी ने रचनाकार की रचनाधर्मिता के लिए रचना में दार्शनिकता के पुट को भी समाहित किए जाने की आवश्यकता बताई। कार्यक्रम का संचालन कला संकाय के सदस्य प्रेयस सोनी ने किया। धन्यवाद ज्ञापन मधुकर दाधीच द्वारा दिया गया।

क्रोध के अवसान हेतु क्षमाभाव की प्रबलता जरूरी- प्रो. त्रिपाठी

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में 28 जुलाई को सत्र 2024-25 का प्रथम मासिक व्याख्यान प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी द्वारा 'क्रोध : कारण व निवारण' विषय पर दिया गया। उन्होंने अपने व्याख्यान में बताया कि क्रोध को जैन दर्शन में वर्णित चार कषायों में से एक कषाय के रूप में माना गया है और कहा गया है कि क्रोध रूपी कषाय मानव की आत्मा को सर्वाधिक दूषित करता है।

प्रो. त्रिपाठी ने क्रोध के अवसान के लिए क्षमाभाव की प्रबलता को जरूरी माना और क्रोध निवारण के लिए जीवन में कर्मठ व्यक्तित्व एवं सतत् कर्मशील बने रहने, क्रोध के दौरान कुछ समय तक संयत होकर आंखें मूंद लेने, विनम्रता के साथ सहनशीलता को धारण करने, पारिवारिक माहौल को सदैव खुशनुमा बनाये रखने, क्रोध के दौरान अपने आप को किसी अन्य कार्य में व्यस्त कर लेने जैसे कई उपाय

कारगिल विजय दिवस का रजत जयंती महोत्सव आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में कारगिल विजय दिवस की रजत जयंती के अवसर पर 26 जुलाई को आयोजित कार्यक्रम प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने प्रधानमंत्री अटल बिहारी वाजपेई के कार्यकाल में 5 मई से 26 जुलाई 1999 तक चले सैन्य-संघर्ष के उपरांत द्रास-कारगिल की घाटियों में भारतीय तिरंगा फहराने की स्वर्णिम दास्तान बताई और कहा कि कारगिल घाटी की विपरीत परिस्थितियों में कारगिल विजय सैनिकों के पुरुषार्थ पराक्रम एवं शौर्य की एक बड़ी जीत थी, जिस पर आज पूरा देश गौरवान्वित है।

कार्यक्रम में समस्त छात्राओं के साथ प्रो. रेखा तिवाड़ी, डॉ. प्रगति भटनागर, अभिषेक चारण, श्वेता खटेड़, मधुकर दाधीच एवं प्रेयस सोनी मौजूद रहे।

साईबर सिक्योरिटी पर व्याख्यान आयोजित

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में नवागंतुक छात्राओं हेतु चल रहे दीक्षा आरंभ कार्यक्रम के तहत 6 सितम्बर को छात्राओं के लिए साइबर सिक्योरिटी से संबंधित एक कार्यक्रम आयोजित किया गया, जिसमें मुख्य वक्ता के रूप में पंजाब नेशनल बैंक के प्रबंधक अरविंद कुमार एवं सहायक प्रबंधक सांवरमल रोहलण रहे। अध्यक्षता प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने की।

विषय विशेषज्ञ के बैंक प्रबंधक अरविंद कुमार ने क्रेडिट कार्ड अथवा डेबिट कार्ड के उपयोग की सावधानियां बताई और कहा कि उनके क्लोन बनाकर हमारे अकाउंट से अनाधिकृत लेनदेन कर लिया जाता है। हमें किसी भी अपरिचित नंबर पर अपनी जानकारियां साझा नहीं करनी चाहिए। हमें कोई भी फाइनेंशियल ट्रांजेक्शन करते वक्त बेहत सजग रहना चाहिए। सहायक प्रबंधक सांवरमल रोहलण ने बताया कि मोबाइल के उपयोग में प्ले स्टोर से कोई ऐप डाउनलोड करने से पहले एप्लीकेशन की प्रामाणिकता जांच लेनी चाहिए। ऑनलाइन शॉपिंग करते वक्त अपनी व्यक्तिगत जानकारी को अपने मोबाइल या लैपटॉप में स्टोर नहीं रखना चाहिए। रोहलण ने इस अवसर पर आरबीआई द्वारा विद्यार्थियों के लिए आयोजित की जाने वाली क्विज की जानकारी भी दी। प्रो. त्रिपाठी ने भी 'साइबर सिक्योरिटी' पर प्रकाश डाला। अंत में धन्यवाद ज्ञापन डॉ. विनोद कस्वा ने किया। कार्यक्रम का संयोजन कार्यक्रम समन्वयक डॉ. प्रगति भटनागर ने किया।

इसके बाद योग एवं जीवन विज्ञान विभाग की सहायक आचार्या डॉ. विनोद कस्वा द्वारा छात्राओं को योग एवं प्रेक्षा ध्यान का अभ्यास करवाया गया। फिर सभी छात्राओं को डॉ. प्रगति भटनागर, डॉ. विनोद कस्वा एवं राधिका लोहिया की अगुवाई में संस्थान में संचालित प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र का भ्रमण करवाया गया जिसके तहत डॉ. निलेश मेहरा एवं सुश्री पूनम राय द्वारा छात्राओं को प्राकृतिक चिकित्सा केंद्र की विस्तृत जानकारी देते हुए भ्रमण के दौरान अन्य चिकित्सा पद्धतियों की तुलना में प्राकृतिक चिकित्सा की विशिष्टता से भी अवगत करवाया गया।

लोकमान्य गंगाधर तिलक की 168वीं जयंती मनाई

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय में भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के महत्त्वपूर्ण राष्ट्रवादी नेता लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक की 168वीं जयंती के अवसर पर 23 जुलाई को कार्यक्रम आयोजित किया गया।

कार्यक्रम में प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने बाल गंगाधर तिलक का जीवन परिचय बताते हुए उन्हें आदर्श शिक्षक, समाज सुधारक, वकील एवं स्वतंत्रता सेनानी व राष्ट्रवादी नेता के रूप में उनकी पहचान बताई और उन्हें लोकप्रिय नेता व हिंदू राष्ट्रवाद का पिता कहा। छात्रा सुनीता काजला ने भी बाल गंगाधर तिलक के जीवन से जुड़े कुछ रोचक प्रसंग उल्लेखित किए। कार्यक्रम का संचालन अभिषेक चारण ने किया। धन्यवाद ज्ञापन अंग्रेजी विभाग की विभागाध्यक्षा प्रो. रेखा तिवाड़ी ने किया।

संविधान दिवस पर संविधान की मूल भावना के संरक्षण की शपथ दिलाई

विश्वविद्यालय के शिक्षा विभाग में 26 नवम्बर को संविधान दिवस मनाते हुए संविधान की मूल भावना को अपनाने की शपथ दिलवाई गई। विभागाध्यक्ष प्रो. बीएल जैन ने बताया इसी दिन संविधान निर्माण का कार्यपूर्ण कर इसे अपनाया गया था और इसी कारण भारत सरकार के अनुमोदन पर 26 नवम्बर 2015 से सम्पूर्ण भारत में संविधान दिवस मनाया जाने लगा। उन्होंने बताया कि भारत का संविधान बाबा साहेब डॉ. भीमराव अम्बेडकर द्वारा बनाया गया। यह संविधान राष्ट्र की एकता अखण्डता को बनाये रखने के साथ ही न्याय, स्वतंत्रता और समता को ध्यान में रखकर अंगीकृत किया गया। संविधान के मौलिक अधिकार जहाँ हमारे हक के लिये ढाल प्रदान करते है, वहीं मौलिक कर्तव्य देश के प्रति हमारी जिम्मेदारियों से भी अवगत करवाते हैं। उन्होंने देश का अच्छा व जिम्मेदार नागरिक बनने की आवश्यकता बताई और संविधान को सम्पूर्ण विश्व के प्रति मानवीय सद्भाव रखने के लिए प्रेरित करने वाला बताया। उन्होंने इस अवसर पर भारतीय संविधान की अनुपालना करने की शपथ दिलाई, जिसमें देश के सभी नागरिकों को सामाजिक आर्थिक और राजनैतिक न्याय, स्वतन्त्रता और समता के साथ राष्ट्र की अखण्डता बनाये रखने व बन्धुता को बनाये रखने का संकल्प दिलाते हुए संविधान के नियमों का पालन कर देश की प्रभुता और एकता बनाये रख कर देश को नई ऊंचाइयों तक ले जाने का संकल्प ग्रहण करवाया। कार्यक्रम में विभाग के सभी सहायक आचार्य और सभी छात्राध्यापिकाएं उपस्थित रहीं।

मेधावी छात्रा मीनाक्षी भंसाली को राजस्थान सरकार से मिला टेबलेट

संस्थान के आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय की छात्रा मीनाक्षी भंसाली को राजस्थान सरकार द्वारा आयोजित मेधावी स्टूडेंट के हितार्थ फ्री टैबलेट वितरण योजना के तहत सरकार द्वारा संचालित सरकारी स्कूल श्रीमती केशर देवी सेठी उच्च माध्यमिक विद्यालय में नियमित छात्रा के रूप में अध्ययनरत रहते हुए छात्रा को यह टैबलेट सत्र 2021-22 मे कक्षा बारह मे 86.20 प्रतिशत अंक प्राप्त करने पर मिला। 19 सितम्बर को इस उपलब्धि पर दूरस्थ एवं ऑनलाइन शिक्षा केंद्र के निदेशक व आचार्य कालू कन्या महाविद्यालय के प्राचार्य प्रो. आनंदप्रकाश त्रिपाठी ने छात्रा के शैक्षिक प्रयासों की सराहना कर अनेकानेक बधाई देते हुए छात्रा के उज्ज्वल भविष्य की कामना की।

मानवाधिकार दिवस मनाया

संस्थान के शिक्षा विभाग में मानवाधिकार दिवस का आयोजन 10 दिसम्बर को किया गया। कार्यक्रम में डॉ. मनीष भटनागर ने बताया कि मानवाधिकार आयोग, संयुक्त राष्ट्र संघ द्वारा 1948 में स्वीकृत यह दिवस मानवाधिकार के संरक्षण और संवर्धन के लिए प्रत्येक राष्ट्र एवं संगठन में मनाया जाता है। उन्होंने मानवाधिकार आयोग के गठन, भारतीय संविधान में मानवाधिकार के मूलभूत तत्वों के समावेश आदि का उल्लेख किया। उन्होंने बताया कि मानवाधिकार वे मूलभूत अधिकार हैं, जिनसे मनुष्य को नस्ल, जाति, राष्ट्रीयता, धर्म, लिंग आदि के आधार पर वंचित नहीं किया जा सकता। विभागाध्यक्ष प्रो. बी. एल. जैन ने अध्यक्षीय उद्बोधन में शिक्षा और संस्कृति के माध्यम से मानवाधिकारों के प्रति सभी को जागरूक रखने की आवश्यकता जाहिर की। कार्यक्रम में डॉ. विष्णु कुमार, डॉ. अमिता जैन, डॉ. आभा सिंह, डॉ. गिरधारी शर्मा, डॉ.ममता पारीक, खुशाल जांगिड़ एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

JAIN VISHVA BHARATI INSTITUTE, LADNUN
PUBLICATION LIST

SL	Publication	Writer/Editor	Price
BOOKS			
01.	जैन–प्रबोधन : जैन दृष्टि	प्रो. बच्छराज दूगड़	140
02.	पूज्यपादेन आचार्यमहाप्रज्ञेन प्रणीता जैनन्यायपंचाषती (न्यायप्रकाषिकाव्याख्यायुता)	पं. विष्वनाथ मिश्र	100
03.	प्राकृत भाषा प्रबोधिनी	डॉ. समणी संगीत प्रज्ञा	250
04.	जैनधर्मदर्शन का ऐतिहासिक विकासक्रम	डॉ. सागरमल जैन	700
05.	आचार्य महाप्रज्ञ का अवदान	प्रो. जिनेन्द्र जैन, प्रो. बी.एल. जैन	450
06.	आचार्य महाप्रज्ञ का हिन्दी साहित्य का अवदान	प्रो. आनन्द प्रकाष त्रिपाठी	300
07.	जैन आगमों का सामान्य ज्ञान (प्रथम एवं द्वितीय भाग)	डॉ. महावीर राज गेलड़ा	250
08.	अपभ्रंष साहित्य का इतिहास	प्रो. प्रेम सुमन जैन	950
09.	Bhagavati Aaradhana	Dr. Dalpat Singh Baya	1995
10.	Teaching English : Trends and Chaalenges	Dr. Sanjay Goyal	300
11.	Anekanta : Philosophy and Practice	Prof. Anil Dhar	250
12.	Studies in Jaina Agamas	Prof. Dayanand Bhargav	550
13.	Various Dimensions of Social Culture	Prof. Damodar Shastri, Dr. Bijendra Pradhan, Dr. Hemlata Joshi	350
14.	Jain View of Reality: A Hermeneutic Interpretation	Dr. Samani Rohini Prajna	450
15.	Corporate Sector and Value Orientation	Dr. Jugal Kishor Dadhich	170
16.	Jain Philosophy : A Scientific Approach to Reality	Ed. Prof. Samani Chaitanya Prajna, Narayan Lal Kachhara, Narendra Bhandari, Kaushala Prasad Mishra	150
17.	Psycho-Social & Psycho-Biological Studies to Investigate Effects of Yoga-Preksha-Dhyan on Aggressiveness and Academic Performance of School Children	Prof. Viney Jain	250
ENCYCLOPEDIA			
01.	जैन पारिभाषिक शब्दकोश	मुख्य नियोजिका साध्वी विश्रुतविभा	995
02.	जैन न्याय पारिभाषिक कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	500
03.	दृष्टांत कोश	प्रो. दामोदर शास्त्री	375
04.	Jain Paribhasika Sabdakosa	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrutavibha	1125
05.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. I	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
06.	Bibliography of Jaina Literature, Vol. II	Dr. Samani Aagam Pragya, Dr. Samani Rohit Pragya, Dr. Vandana Mehata	1200
MONOGRAPH SERIES			
01.	Introduction to Jainism	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
02.	Jain Doctrine of Reality	Dr. Samani Shreyas Prajna, Dr. Samani Amal Prajna	125
03.	Jain Doctrine of Knowledge	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
04.	Jain Doctrine of Karma	Prof. Samani Riju Prajna, Sarika Surana	125
05.	Jain Doctrine of Anekant	Dr. Samani Shashi Prajna	125
06.	Jain Doctrine of Naya	Prof. Anekant Kuamr Jain	125
07.	Jain Doctrine of Nine Tattvas	Prof. Pradyuman Singh Shah	125
08.	Jain Doctrine of Six Essentials	Dr. Arihant Kumar Jain	125
09.	Jain Doctrine of Aparigraha	Prof. Sushma Singhvi, Dr. Rudi Jansma	125
10.	Jain Doctrine of Nyaya	Prof. Samani Riju Prajna, Dr. Samani Shreyas Prajna	125
11.	Jain Doctrine of Dreams	Dr. Sadhvi Rajul Prabha	125
12.	Jainism : A Living Realism	Prof. S.R. Vyas	125
13.	Jain Doctrine of Aayushya	Dr. Sadhvi Chaitanya Prabha	125
14.	An Introduction to Preksha Meditation	Mukhya Niyojika Sadhvi Vishrut Vibha	125
15.	Political Thought of Jainism	Naresh Dadhich	125
16.	Notion of Soul (Atma) in Jainism	Samani Rohini Prajna	150

Now Ladnun Produce Doctors.....

'A' Grade by NAAC

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University) Ladnun-341306, Dist. Didwana-Kuchaman (Rajasthan) INDIA

Admission Open

BNYS

Apply on - https://online.jvbi.ac.in

BACHELOR OF NATUROPATHY AND YOGIC SCIENCES

Eligibility : 10 + 2 (PCB), Minimum 50% marks in Aggregate

Duration : 4½ Yr. + 1 Yr. Internship

5½ YEAR DEGREE COURSE FOR THE "NATUROPATHY DOCTOR"

COURSE FEATURES:

- Highly Exeperienced faculties.
- Subject experts for deeper learning.
- Regular Clinical Practice in Naturopathy hospital.
- Curricular activities and skills developments.
- Well - equipped laboratories for practical, yogasanas and kriyas.
- Presentation, assignments and therapeutic approach towards learning.

Career Opportunities:

- Grade 'A' Doctor
- Can Open own Hospital/Clinic
- Faculty in University/College

'A' Grade by NAAC

Jain Vishva Bharati Institute

(Deemed-to-be University)

Ladnun-341306, Dist. Didwana-Kuchaman (Rajasthan) INDIA

A University Dedicated to Oriental Studies & Human Values

REGULAR MODE

M.A./ M.Sc. Ph.D.

- Yoga and Science of Living
- Jainology and Comparative Religion & Philosophy
- Prakrit & Sanskrit • Rajasthani,
- Nonviolence and Peace
- Political Science • Hindi,
- English

Apply on - https://online.jvbi.ac.in

Admission Open

- M.Ed., B.Ed.
- Integrated Courses (B.A.-B.Ed. & B.Sc.-B.Ed.)
- B.A. in Yoga, B.Sc in Yoga
- B.A. in Rajasthani
- Various Diploma
- Certificate Courses

Visit us : www.jvbi.ac.in, Mob. 9694674688, 9460147619, 9462658701